ELITE IAS

समसामयिकी

दिसम्बर – 2018

8899999931/34

A-1 Chandra House, Top Floor, (Opp. ICICI Bank), Mukherjee Nagar, Delhi-09

ELITE IAS

Our Courses

For Civil Services Preparation

CLASSROOM PROGRAM

English / Hindi

Upgraded Foundation Course
General Studies

ONLINE COURSES

General Studies Video Classes
(Interactive)

ALL INDIA TEST SERIES

English / Hindi

General Studies
Prelims + Mains + Essay

CORRESPONDENCE COURSES

General Studies Pre. & Mains
(Interactive)

Index

आलेख

1.	भारत को ऊँचाइयों पर ले जाता इसरो	1-2

कला, संस्कृति, समाज एवं सामाजिक और राष्ट्रीय मुद्दे

2.	'भाषा संगम' परियोजना	3-3
3.	हिमाचल प्रदेश ईआरएसएस लांच करने वाला देश का पहला राज्य बना	4-4
4.	अंडमान की सेंटिनल जनजाति	5-6
5.	करतारपुर कॉरिडोर: उपराष्ट्रपति वैंकेया नायडू ने कॉरिडोर की आधारशिला रखी	6-6
6.	डब्ल्यूसीडी मंत्रालय ने यौन उत्पीड़न पोर्टल 'शी-बॉक्स' को केंद्रीय/राज्य मंत्रालयों और जिलों से लिंक किया	7-7
7.	रामायण एक्सप्रेस दिल्ली से आरंभ	8-8
8.	सभी पूर्वोत्तर राज्यों द्वारा दिसम्बर 2018 तक खुले में शौच से मुक्ति की घोषणा	9-9
9.	मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने LEAP और ARPIT कार्यक्रम लॉन्च किये	10-10

राजव्यवस्था एवं शासन, सामाजिक न्याय एवं सामाजिक विकास

10.	सुप्रीम कोर्ट ने मृत्युदंड की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखा	11-11
11.	महाराष्ट्र विधानसभा ने मराठा आरक्षण को मंजूरी दी	12-12
12.	भारतीय संविधान दिवस:26 नवंबर	13-13
13.	आंध्र प्रदेश ने विभाजन के चार वर्ष बाद राजकीय चिन्ह स्वीकार किया	14-14
14.	जम्मू-कश्मीर विधानसभा भंग	15-15
15.	पश्चिम बंगाल ने बस्तियों के निवासियों को भूमि अधिकार देने हेतु विधेयक पारित किया	16-16
16.	सरकार द्वारा मातृत्व अवकाश में से सात हफ्ते का वेतन नियोक्ताओं को वापिस देने की घोषणा	16-17

अंतर्राष्ट्रीय संबंध, भारत और विश्व एवं वैश्विक परिदृश्य

17.	भारत अगले चार वर्ष की अवधि के लिए फिर से अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ परिषद् का सदस्य चुन लिया गया	18-18
18.	संयुक्त राष्ट्र रिपोर्ट:वर्ष 2017 में विश्वभर में प्रतिदिन 137 महिलाओं की हत्या की गई	19-19
19.	अमेरिका ने भारत-चीन समेत आठ देशों को ईरान से तेल आयात करने की छूट दी	19-20
20.	भारत और चीन के बीच दोहरे कराधान से बचने के लिये समझौता	20-20
21.	भारत और ऑस्ट्रेलिया के मध्य पांच समझौतों पर हस्ताक्षर	21-21
22.	संयुक्त राष्ट्र महासभा ने यौन उत्पीड़न के विरुद्ध प्रस्ताव को मंजूरी दी	22-22

23.	भारत सरकार और एडीबी के मध्य जल एवं स्वच्छता सेवाओं हेतु ऋण समझौते पर हस्ताक्षर	23-23
24.	क्वाड देशों की तीसरी बैठक सिंगापुर में संपन्न	23-24
25.	यमन में 70 लाख बच्चे भुखमरी से प्रभावित: यूनिसेफ	24-24
26.	भारत-जापान ने तुरगा पनबिजली समझौते पर हस्ताक्षर किये	25-25
27.	भारत और दक्षिण कोरिया ने पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग को मजबूत बनाने हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए	25-26
	भारतीय अर्थव्यवस्था एवं आर्थिक विकास	
28.	सस्ता लोन और ब्याज दर में छूट हेतु 'पैसा' पोर्टल का शुभारंभ	27-27
29.	ईज ऑफ डूइंग बिजनेस ग्रैंड चैलेंज लॉन्च	28-28
30.	झारखंड सरकार 28 लाख किसानों को मुफ्त में देगी मोबाइल फोन	29-29
31.	केंद्र सरकार और एशियाई विकास बैंक ने बिहार में राजमार्गों के सुधार हेतु ऋण समझौते पर हस्ताक्षर किये	30-30
32.	संयुक्त राष्ट्र ने वैश्विक सतत शहर-2025 कार्यक्रम हेतु नोएडा को चयनित किया	31-31
33.	सौभाग्य योजना के अंतर्गत 8 राज्यों ने 100 प्रतिशत घरों में विद्युतीकरण का लक्ष्य हासिल किया	32-33
34.	लॉजिक्स इंडिया 2019 का प्रतीक चिन्ह तथा ब्रोशर लॉन्च	33-33
35.	एनपीसीसी को मिनीरत्न कंपनी का दर्जा प्रदान किया गया	34-35
36.	केन्द्रीय वाणिज्य मंत्री ने 'औद्योगिक पार्क रेटिंग प्रणाली' पर रिपोर्ट जारी की	36-36
37.	विश्व बैंक Doing Business Report (DBR, 2019)	37-37
38.	आरबीआई के इकॉनोमिक कैपिटल फ्रेमवर्क के परीक्षण के लिए विशेषज्ञ समिति बनाने का निर्णय	38-38
39.	भारत का पहला जलमार्ग बंदरगाह वाराणसी में आरंभ	39-40
40.	केंद्र सरकार और विश्व बैंक ने 310 मिलियन डॉलर के ऋण समझौता पर हस्ताक्षर किया	40-41
41.	ऑपरेशन ग्रीन के लिए मार्ग-निर्देश जारी	41-41
42.	भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम का अनुभाग 7	42-42
	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, प्रतिरक्षा एवं स्वास्थ्य	
43.	भारत और ब्रिटेन की नौसेनाओं के बीच संयुक्त अभ्यास 'कोंकण 2018' गोवा में शुरू	43-44
44.	परमाणु पनडुब्बी अरिहंत ने पहला गश्ती अभियान सफलतापूर्वक पूरा किया	44-45
45.	भारतीय तटरक्षक बल द्वारा गश्ती जहाज आईसीजीएस वाराह लॉन्च	45-45
46.	भारत और इंडोनेशिया के मध्य संयुक्त नौसेनिक अभ्यास	46-46
47.	विश्व एड्स दिवस 2018	46-47

48.	वर्ष 2030 तक निमोनिया से भारत में 17 लाख बच्चों की मौत का खतरा: रिपोर्ट	47-47
49.	दिल्ली पुलिस ने कर्मचारियों के प्रशिक्षण हेतु 'निपुण' पोर्टल लॉन्च किया	48-48
50.	अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र ने पूरे किए 20 साल	48-49
51.	वैज्ञानिकों द्वारा किलोग्राम की परिभाषा बदले जाने की घोषणा	49-50
52.	नवगठित नवाचार परिषद का उद्घाटन	50-50
53.	आईआईटी मद्रास ने भारत का पहला स्वदेशी माइक्रोप्रोसेसर 'शक्ति' तैयार किया	51-51
54.	विश्वभर में मुफ्त वाईफाई के लिए चीनी कंपनी 272 सैटेलाइट लॉन्च करेगी	51-52
55.	इसरो ने सफलतापूर्वक 8 देशों के 30 सैटेलाइट लॉन्च किये	52-52
56.	नासा का 'मार्स इनसाइट लैंडर' मंगल ग्रह पर उतरा	53-53
57.	उत्तराखंड में देश का पहला एचसीआई टेक्नोलॉजी स्टेट डेटा सेंटर खुला	54-54
58.	दुनिया भर के मलेरिया के कुल मामलों में से 80% मामले भारत और अफ्रीकी देशों से: डब्ल्यूएचओ	55-55
59.	भारतीय सहयोगी एवं स्वास्थ्य सेवा परिषद के गठन को मंजूरी	56-57
60.	भारत-अमेरिका का 'वज्र प्रहार' नामक संयुक्त सैन्य अभ्यास राजस्थान में आयोजित	57-57
61.	एयरसेवा 2.0 वेब पोर्टल लांच	58-58
62.	संचार उपग्रह जीसैट-29 का सफल प्रक्षेपण	58-59
63.	छह वर्षों में भारत में कैंसर के मामलों में 15.7% वृद्धि: अध्ययन	59-60
64.	धर्म गार्जियन-2018: भारत और जापान के बीच संयुक्त सैन्य अभ्यास	60-60
65.	OSIRIS–REx अभियान	61-61
66.	एंटीमाइक्रोबियल स्टेवार्डशिप गाइडलाइन	62-62

पारिस्थितिकी और पर्यावरण

67.	क्लोरोफ्लोरो कार्बन (CFC) से निकलने वाले क्लोरीन की वायुमंडल में अनुपस्थिति के चलते ओजोन परत फिर से बनने लगे हैं।	63-64
68.	ग्रीनहाउस गैस बुलेटिन रिपोर्ट-2018	64-65
69.	केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने मौसम विज्ञान संबंधी योजनाओं को मंजूरी प्रदान की	65-65
70.	जैव प्रौद्योगिकी विभाग ने ऊर्जा एवं अनुसंधान संस्थान के साथ त्रि-वर्षीय समझौता किया	66-66
71.	अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन	67-67
72.	अर्थ बायो-जीनोम प्रोजेक्ट	67-68
73.	गंगा ग्राम स्वच्छता सम्मेलन	68-69
74.	उन्नत मोटर ईंधन तकनीक सहयोग कार्यक्रम	69-69
75.	हाथी गलियारों को पर्यावरण की दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्र (Eco - sensitive zones) घोषित करने पर विचार	70-70

अन्य `बरें

76.	बाल गंगा नामक मेले का आयोजन	71-71
77.	अरविंद सक्सेना UPSC के चेयरमैन नियुक्त	71-71
78.	पहली और दूसरी क्लास के बच्चों को नहीं मिलेगा होमवर्क: केंद्र सरकार	71-71
79.	अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जॉर्ज एच डब्ल्यू बुश का निधन	71-72
80.	भारतीय अंतराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव-2018 का समापन, डोनबास ने स्वर्ण मयूर पुरस्कार जीता	72-72
81.	लिजो जोस पेलिसरी को ई.मा.यू. के लिए सर्वश्रेष्ठ निदेशक पुरस्कार	72-72
82.	अल्बर्तो मॉन्तेरास-II को उनकी पहली फिल्म 'रेस्पेतो' के लिए बेहतरीन फीचर फिल्म निर्देशक का पुरस्कार	73-73
83.	एएम नाइक राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के अध्यक्ष नियुक्त	73-73
84.	बीसीसीआई ने आयु में धोखाधड़ी करने वाले खिलाड़ियों पर दो वर्ष के प्रतिबंध की घोषणा की	73-73
85.	प्रसिद्ध हिंदी गायक मोहम्मद अजीज का निधन	73-73
86.	हॉकी विश्व कप 2018 का भुवनेश्वर में शुभारंभ	74-75
87.	सुनील अरोड़ा मुख्य चुनाव आयुक्त बनाये गये	75-75
88.	प्रसिद्ध हिंदी लेखक हिमांशु जोशी का निधन	75-75
89.	वसीम जाफर रणजी ट्रॉफी में 11,000 रन बनाने वाले पहले खिलाड़ी बने	76-76
90.	'रेडियो कश्मीर - इन टाइम्स ऑफ पीस एंड वॉर' पुस्तक का विमोचन किया गया	76-76
91.	बीबीसी द्वारा जारी विश्व की 100 प्रभावशाली महिलाओं की सूची में तीन भारतीय	76-76
92.	संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के प्रमुख एरिक सोलहेम ने दिया इस्तीफा	76-76
93.	पाकिस्तान की मशहूर शायरा व लेखिका फहमीदा रियाज का निधन	76-77
94.	विश्व शौचालय दिवस 19 नवंबर	77-78
95.	पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को इंदिरा गांधी शांति पुरस्कार प्रदान किया गया	78-78
96.	जलवायु परिवर्तन के कारण समाप्त हुई थी हड़प्पा सभ्यता: अध्ययन	78-78
97.	संजय कुमार मिश्रा प्रवर्तन निदेशालय के पूर्णकालिक निदेशक बनाए गये	78-78
98.	वीवीएस लक्ष्मण ने अपनी आत्मकथा '281 एंड बियॉन्ड' लॉन्च की	78-78
99.	यूनिसेफ द्वारा भारतीय एथलीट हिमा दास को युवा एंबेसडर बनाया गया	79-79
100.	बजरंग पूनिया 65 किलोग्राम वर्ग में नंबर एक पहलवान बने	79-79
101.	केन्द्रीय मंत्री अनंत कुमार का बेंगलुरु में निधन	79-79
102.	ए आर रहमान की जीवनी 'नोट्स ऑफ अ ड्रीम' का लोकार्पण किया गया	79-80
103.	आयुर्वेद दिवस 05 नवंबर	80-80
104.	INDRA 2018 :	80-80

❁❑❑❑❑❑❁

आलेख

भारत को ऊँचाइयों पर ले जाता इसरो

भारत एक नई उड़ान पर है। उसकी यह नई उड़ान चंद्रमा और मंगल की राह पर है, कारोबार की दिशा में है और साथ में देश की जनता के सतत विकास के लक्ष्य को साधने वाली है। इस उड़ान में उसके सपनों को साकार करने में अहम भूमिका भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी - इसरो के ताकतवर रॉकेटों को है जो सफलता के नए कीर्तिमान रचते हुए अपनी क्षमता और योग्यता साबित कर रहे हैं। इसमें सबसे ताजा किस्सा 14 नवंबर को स्पेस में नवीनतम संचार उपग्रह जीसैट -29 को सफलतापूर्वक उसकी कक्षा में स्थापित करने वाले 640 टन वजनी रॉकेट जीएसएलवी मार्क - 3 डी-2 का है। देश में विकसित इस तीसरी पीढ़ी के रॉकेट ने एक ओर जहां यह आश्वस्त किया है कि इसरो अब 2022 तक चांद पर इंसान भेजने के अपना मिशन पूरा करने के काम में बेहिचक जुट सकता है। कि भारी उपग्रहों को स्पेस में भेजने का जो काम अब तक रूस, अमेरिका जैसे देश करते रहे हैं, उसमें भारत की योग्यता अब बराबरी की है।

रॉकेट साइंस के क्षेत्र में जीएसएलवी मार्क-3 की कामयाबी का स्तर यदि हम नापना चाहें तो इसकी एक कसौटी अमेरिका का शुरूआती चंद्र मिशन होगी। करीब 50 साल पहले अमेरिकी स्पेस एजेंसी - नासा ने अपने जिस यान अपोलो - 11 से नील आर्मस्ट्रांग को चांद पर भेजा था, उसका वजन 4932 किलोग्राम था। यानी आदि किसी देश का रॉकेट 5 टन तक का वजन अंतरिक्ष में ले जाने की हैसियत रखता है, तभी उसे चंद्रमा पर इंसान भेजने के सपने के बारे में सोचना चाहिए। उल्लेखनीय है कि जीएसएलवी मार्क - 3 से भेजे गए संचार पर इंसान भेजने की भारत की दावेदारी पुख्ता होती है, और यही वजह है कि बाहुबली कहे गए इस रॉकेट की कामयाबी को खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सराहा। साथ ही इसरो के सबसे भारी लांचर ने अपने दूसरे मिशन में अब तक सबसे भारी उपग्रह जीसैट - 29 को उसकी कक्षा में स्थापित करके हमारी आशाओं को जगा दिया है। इसरो के वैज्ञानिकों ने इस अभियान को इसलिए भी अहम माना है, क्योंकि भारत के महत्वाकांक्षी चंद्रयान -2 और मानवयुक्त अंतरिक्ष अभियानों में इस रॉकेट का इस्तेमाल किया जा सकता है। सिवन ने एलान किया कि जनवरी 2019 में भेजा जाने वाला चंद्रयान इस रॉकेट का पहला ऑपरेशनल अभियान होगा।

हालांकि यह सही है कि इसरो को अपोलो -11 वाली कामयाबी के करीब पहुंचने में पांच दशक लग गए है, पर ध्यान रखना होगा कि बेहद महंगे और तकनीक में अत्यधिक सटीकता-सूक्षमता की मांग करने वाले चंद्र अभियानों को खुद अमेरिका ने अपोलो मिशनों के बाद लंबे समय तक स्थगित रखा है। शुरूआत में रूस (तत्कालीन सोवियत संघ) से होड़ लेने और दुनिया में अपनी बढ़त साबित करने के लिए अमेरिका की वैज्ञानिक बिरादरी ने चंद्र मिशनों को अहमियत दी थी, लेकिन बाद में बेइंतहा खर्च के चलते नासा ने भारी उपग्रहों को स्पेस में भेजने के काम से खुद को अलग कर लिया था, लेकिन अब दुनिया एक बार फिर चंद्र और मंगल मिशनों की तरफ बढ़ रही है। अमेरिका के अलावा चीन -जापान आदि भी इस नई होड़ में विजेता वही देश और स्पेस एजेंसी होगी, जो बेहद कम लागत में और अत्यधिक सटीकता के साथ अपने स्पेस अभियान चलाएगी। इस नजरिए से देखें तो इसरो ने दोनो मोर्चों पर अपनी काबिलियत दिखाई है।

अहम बात उपग्रहों को स्पेस में ले जाने वाले भरोसेमंद रॉकेट विकसित करने की है, क्योंकि अब आगे की स्पेस रेस इन्हीं पर टिकी है। कभी साइकिल से रॉकेट में पुर्जे ढोने वाले इसरो को एक बड़ी कामयाबी तब मिली थी, जब उसके रॉकेट PSLV ने दुनिया भर पीएसएलवी की मदद से हमारा देश उपग्रहों की व्यावसायिक लांचिंग दुनिया में सबसे कम कीमत पर करता रहा है। एक रेखांकित करने वाली बात यह है कि जितना धन अमेरिकी स्पेस सेंटर-नासा अपने स्पेस मिशन पर एक साल में खर्च करता है, उतने पैसों में इसरो 40 साल तक काम करता रह सकता है, पर हाल तक सैटेलाइट लॉचिंग से स्पेस मार्केट में अमेरिका की हिस्सेदारी 41 फीसद तक रही है, जबकि इसरो की हिस्सेदारी सिर्फ चार प्रतिशत है। इसकी बड़ी वजह यह है कि नासा के पास एक खाली ट्रक के बराबर वजन वाले उपग्रह को स्पेस में छोड़ने की क्षमता है, जबकि इसरो हाल तक एक मध्यम आकार की कार के बराबर वजन वाले सैटेलाइट छोड़ पर रहा था। हालांकि इस दौरान इसरो ने अपने सहयोगी संगठन एंट्रिक्स कॉरपोरेशन के जरिए पीएसएलवी की पहली लांचिंग के बाद से 2017 तक साढ़े चार अरब रूपये कमा लिए थे। उल्लेखनीय यह भी है कि एशियाई क्षेत्र में चीन के अलावा कोई अन्य पड़ोसी मुल्क स्पेस के मामले में भारत की बराबरी नहीं कर पा रहा है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

चीन भी इसरो की क्षमता से प्रभावित है। पिछले प्रक्षेपण में एक साथ 104 उपग्रहों को स्पेस में पहुंचाने पर चीन के सरकारी अखबार–ग्लोबल टाइम्स ने अपने संपादकीय में लिखा था कि यूं तो स्पेस टेक्नोलॉजी की रेस को उपग्रहों की लांचिंग की संख्या से नहीं आंका जा सकता, लेकिन कम निवेश के बावजूद स्पेस टेक्नोलॉजी में ग्लोबल लेवल हासिल कर इसरो ने बड़ा काम किया है। अखबार के मुताबिक किसी देश की स्पेस टेक्नोलॉजी की विकास इस बात ने नापना चाहिए कि उसमें निवेश कितना किया गया। 2016 में इकोनॉमिक फोरम की ओर से जारी रिपोर्ट के अनुसार 2013 में अमेरिका का स्पेस बजट सबसे अधिक 39.3 अरब डॉलर था, चीन 6.1 अरब डॉलर के साथ दूसरे, रूस 5.3 अरब डॉलर के साथ तीसरे और जापान 3.6 अरब डॉलर के स्पेस बजट के साथ चौथे स्थान पर था। इन सभी देशों के मुकाबले भारत का बजट महज 1.2 अरब डॉलर था, लेकिन इस मुकाम से आगे जाने के लिए जरूरी था कि इसरो चार से पांच टन वजनी उपग्रहों को स्पेस में ले जाए। यह सिर्फ उसके चंद्र तथा मंगल मिशनों और इंसान को चंद्रमा पर भेजने के उसके सपने के लिए ही जरूरी नही है, बल्कि अंतरिक्ष के कारोबारी दोहन में भी इसका महत्व है। इसलिए कह सकते हैं कि अधिकतम ढाई टन वजनी उपग्रहों को ढोने के काबिल पीएसएलवी मार्क–2 से आगे बढ़कर इसरो ने जीएसएलवी मार्क– 3 के सफल प्रक्षेपण के साथ भारी अंतरिक्ष परिवहन के बाजार में उपनी दस्तक दे दी है। इससे यह उम्मीद भी जगी है कि जीएसएलवी 2022 तक पांच टन वजनी उपग्रह को 5 लाख किलोमीटर दूर ले जाकर उसे वापस लौटने की खूबी दिखा ही देगा, क्योकि इसके बिना हमारे चंद्र मिशन और इंसान को स्पेस में भेजने की कामयाबी खुद के बूते मापना मुमकिन नहीं है।

लेकिन स्पेस में बढ़त का कोई मतलब तभी है, जब उससे कारोबार और अंतरिक्ष अनुसंधान के अलावा कुछ ठोस जमीनी लक्ष्य भी हासिल हों और उनसे देश की जनता की बेहतरी और विकास का कोई रास्ता खुले। यह उपलब्धि आंकड़ों में तो काफी सुहावनी लगती है कि जीएसएलवी मार्क – 3 से देश के सबसे भारी और उन्नत संचार उपग्रह जीसैट – 29 को कक्षा में स्थापित किया गया, पर सवाल है कि क्या इससे जानता को कोई लाभ हुआ? ध्यान दें कि जीसैट – 29 एक उन्नत संचार उपग्रह है और इसका मुख्य उद्देश्य देश के पूर्वोत्तर और जम्मू–कश्मीर के दूरस्थ इलाकों में इंटरनेट तथा अन्य संचार सुविधाएं मुहैया कराना है। संचार की मौजूदा जरूरतों की दृष्टि से ये इलाके काफी पिछड़े हैं, इसलिए उम्मीद है कि जीसैट – 29 इन इलाकों के नागरिकों की जिंदगी आसान करने में मददगार साबित होगा। उल्लेखनीय है कि जब इसे अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया जा रहा था, जब इसे अंतरिक्ष में प्रेक्षिपित किया जा रहा था, तब तटीय इलाकों में गज तूफान की आहट मिल चुकी था। इसी से साबित होता है कि अंतरिक्ष में यदि उन्नत संचार तकनीकों वाला उपग्रह हो तो इससे आम लोगों की जिंदगी किस तरह आसान हो जाएगी।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

कला, संस्कृति, समाज, तथा सामाजिक और राष्ट्रीय मुद्दे

'भाषा संगम' परियोजना

चर्चा में क्यों?

- केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) से संबंधित अथवा मान्यता प्राप्त स्कूलों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राएं प्रत्येक राज्य की भाषा सीख सकेंगे। केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय की भाषा संगम परियोजना के तहत 27 नवंबर 2018 से इसकी शुरुआत की गई।
- सीबीएसई ने कुछ समय पूर्व ही भाषा संगम के लिए अधिसूचना जारी की थी। इसके अनुसार छात्रों को अगले एक महीने में इन भाषाओं को सिखाने के लिए प्रोजेक्ट चलाया जाएगा। इसमें कक्षा एक से कक्षा 12 तक के छात्रों को शामिल किया जाएगा।

संगम परियोजना

- संगम परियोजना के तहत 28 नवंबर को गुजराती, 29 को हिंदी, 30 नवंबर को कन्नड़, तीन दिसंबर को कश्मीरी, चार को कोंकणी, पांच को मैथिली, छह को मलयालम, सात को मणिपुरी, दस को मराठी, 11 को नेपाली, 12 को उड़िया, 13 को पंजाबी, 14 को संस्कृत, 17 को संथाली, 18 को सिंधी, 19 को तमिल, 20 को तेलुगू और 21 दिसंबर को पूरे प्रोजेक्ट का प्रसारण किया जाएगा।
- इस कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को हिंदी, अंग्रेजी के अलावा देश के अलग-अलग प्रदेशों की क्षेत्रीय भाषाओं को बोलना सीखना है।
- छात्र इस परियोजना के तहत हर भाषा के पांच वाक्य सीखेंगे। इसके बाद उन्हें प्रार्थना के समय इन वाक्यों को बोलना होगा।
- छात्रों को घर पर अभिभावकों के साथ इन वाक्यों पर विचार-विमर्श करना होगा। स्कूलों में प्रतिदिन दी जाने वाली जानकारी का वीडियो बनेगा तथा यह वीडियो सीबीएसई की वेबसाइट पर भी अपलोड करना होगा।
- भाषा संगम प्रॉजेक्ट के तहत संविधान की आठवीं अनुसूची में दी गई 22 भाषाओं के बारे में विद्यार्थियों को बताया जा रहा है।
- इसमें हिन्दी, असमिया, बंगाली, बोडो, तमिल, तेलुगु, उर्दू, गुजराती, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयाली, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओडिया, पंजाबी, संस्कृत, संथाली, सिंधी, डोगरी भाषा छात्रों को बोलनी सिखाई जा रही है।

संविधान की आठवीं अनुसूची

- भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची भारत की भाषाओं से संबंधित है। इस अनुसूची में 22 भारतीय भाषाओं को शामिल किया गया है। इनमें से 14 भाषाओं को संविधान में शामिल किया गया था।
- वर्ष 1967 में, सिन्धी भाषा को अनुसूची में जोड़ा गया। इसके बाद, कोंकणी भाषा, मणिपुरी भाषा, और नेपाली भाषा को 1992 में जोड़ा गया।
- 2004 में बोडो भाषा, डोगरी भाषा, मैथिली भाषा, और संथाली भाषा संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किए गए।

स्रोत: पीआईबी

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

हिमाचल प्रदेश ईआरएसएस लांच करने वाला देश का पहला राज्य बना

चर्चा में क्यों?

- केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने 28 नवम्बर 2018 को मंडी में हिमाचल प्रदेश के लिए आपात प्रतिक्रिया सहायता प्रणाली (ईआरएसएस) की शुरूआत की।

मुख्य तथ्य

- ईआरएसएस के अंतर्गत अखिल भारतीय एकल आपात नंबर '112' की शुरूआत करने वाला हिमाचल प्रदेश पहला राज्य है।
- इस एक नम्बर (112) पर फोन कर राज्य के लोग पुलिस, अग्निशमन सेवा, स्वास्थ्य और अन्य हेल्पलाइन से संपर्क कर सकेंगे।
- इस सेवा का लाभ लेने के लिए राज्य के लोगों को गूगल और एप्पल के स्टोर पर '112 इंडिया' एप डाउनलोड करनी पडेगी।

अखिल भारतीय एकल आपात नंबर '112' की शुरूआत:

- यह एकल आपात नंबर '112' आपात प्रतिक्रिया सहायता प्रणाली (ईआरएसएस) का हिस्सा हैं।
- इस सेवा में '112 इंडिया' मोबाइल ऐप भी शामिल किया गया है जिसे स्मार्ट फोन के पैनिक बटन और तत्काल सहायता प्राप्त करने में नागरिकों की सुविधा के लिए ईआरएसएस राज्य वेबसाइट से जोड़ा गया है।
- आपात प्रतिक्रिया की प्रभावशीलता में वृद्धि के लिए आपात प्रतिक्रिया केन्द्र (ईआरसी) को दूरसंचार सेवाओं प्रदाताओं द्वारा लोकेशन आधारित सेवाओं से जोड़ा गया है।
- महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए '112 इंडिया' में एक एसएचओयूटी फीचर की शुरूआत की गई है ताकि आपात प्रतिक्रिया केन्द्र से मिलने वाली तत्काल सहायता के अलावा आसपास पंजीकृत स्वयंसेवियों से तत्काल सहायता मिल सके। एसएचओयूटी फीचर विशेष रूप से महिलाओं के लिए उपलब्ध है।
- एकीकृत आपात सेवाओं तक पहुंच के लिए देशभर में लोगों की मदद के लिए सभी राज्यों और संघ शासित प्रदेशों में '112 इंडिया' मोबाइल ऐप शुरू किया जाएगा।

321.69 करोड़ रुपये आवंटित:

- केन्द्र सरकार ने देशभर में ईआरएसएस परियोजना के कार्यान्वयन के लिए निर्भय कोष के अंतर्गत 321.69 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं।
- केन्द्र सरकार ने इस परियोजना के लिए 4.71 करोड रूपये की वित्तीय सहायता दी है. केंद्र सरकार ने हिमाचल प्रदेश के लिए राष्ट्रीय आपदा मोचन बल की एक बटालियन की मंजूरी दी और राज्य पुलिस के आधुनिकीकरण के लिए 4 करोड 20 लाख रूपये की वित्तीय सहायता दी है।

शिमला में एक आपात कार्रवाई केन्द्र स्थापित:

- इस परियोजना के तहत हिमाचल प्रदेश के राजधानी शिमला में एक आपात कार्रवाई केन्द्र स्थापित किया गया है जो 12 जिला नियंत्रण केन्द्रों से जुडा है। नियंत्रण कक्ष आधुनिक सुविधा से लैस हैं। हर पुलिस थाना की गाड़ी में मोबाइल टर्मिनल डिवाइस लगाए गए हैं।
- गाड़ी में मौजूद पुलिस कर्मी को हर कॉल व सहायता मांगने वाले की लोकेशन की जानकारी मिलती रहेगी। नियंत्रण कक्ष से उस क्षेत्र के आसपास मौजूद गाड़ी को तुरंत मौके पर रवाना किया जाएगा।
- आपातकालीन नम्बर 112 को पुलिस नियंत्रण कक्ष के नम्बर (100), अग्निशमन सेवा (101) महिला हेल्पलाइन (1090) तथा अन्य हेल्पलाइन से जोडा गया है।
- इस सेवा की मोबाइल एप को स्मार्ट फोन के पेनिक बटन से भी जोडा गया है। इस सेवा के शुरू होने के बाद लोगों को विभिन्न हेल्पलाइन से संपर्क करने के लिए अलग अलग नम्बर याद नहीं करने पड़ेंगे।
- इससे देशभर में चौबीस घण्टे प्रभावी प्रतिक्रिया प्रणाली के लिए केवल एक आपातकालीन नम्बर की सुविधा प्राप्त होगी, जो आपदा अथवा आपति में नागरिकों की सेवा के लिए वायस कॉल, एसएमएस, ई-मेल, सार्वजनिक परिवहन इत्यादि में पैनिक बटन जैसी विभिन्न वायस एवं डाटा सेवाओं से इनपुट प्राप्त कर सकेगा।
- इस प्रणाली को वायस अथवा डाटा से जोड़ कर विप्पति में व्यक्ति के स्थल की पहचान करेगी तथा मुसीबत में व्यक्ति को तत्काल सहायता प्रदान करेगी।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

अंडमान की सेंटिनल जनजाति

चर्चा में क्यों?

- अंडमान निकोबार द्वीप समूह की सेंटिनल जनजाति द्वारा एक अमेरिकी पर्यटक की हत्या की घटना आजकल चर्चा में है।

मुख्य तथ्य

- मीडिया रिपोर्ट्स में बताया जा रहा है कि अमेरिकन पर्यटक जॉन एलेन चाऊ सेंटिनल द्वीप पर ईसाई धर्म का प्रचार करना चाह रहे थे लेकिन सेंटिनल जनजाति के आदिवासियों द्वारा उनकी तीरों से हमला करके हत्या कर दी गई।
- दरअसल, सेंटिनल जनजाति हजारों वर्षों से दुनिया से अलग-थलग रह रही है। ऐसा माना जाता है कि वे इसलिए दुनिया से अलग रह रहे हैं क्योंकि वे आम लोगों की बीमारियों से दूर रहना चाहते हैं।
- भारत के मानवशास्त्री त्रिलोकनाथ पंडित एकमात्र व्यक्ति हैं जो इस जनजाति से संपर्क स्थापित करने में सफल रहे थे। उन्होंने वर्ष 1966 से 1991 के बीच इस द्वीप की कई यात्राएं की थीं।

जॉन एलेन चाऊ हत्या घटनाक्रम

- अमेरिकी नागरिक जॉन एलन की हत्या के बाद मछुआरों ने पुलिस को बताया कि वे 14 नवंबर 2018 को सेंटिनेलिस द्वीप पर जाने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन असफल रहे।
- पहले प्रयास में असफल होने के दो दिन बाद 16 नवंबर को जॉन पूरी तैयारी के साथ फिर से द्वीप पर पहुंचे, इस दौरान उन्होंने अपनी नाव बीच रास्ते में ही छोड़ दी और टेंट के साथ थोड़ा और सामान लेकर द्वीप में प्रवेश कर गए।
- स्थानीय मछुआरों ने मीडिया को बताया कि जॉन ने जैसे ही द्वीप में कदम रखा सेंटिनेलिस समुदाय के आदिवासियों ने उन पर तीर-कमान से हमला कर दिया. जॉन की हत्या करने के बाद सेंटिनेलिस समुदाय के लोग उनके शव को रस्सी में बांधकर घसीटते हुए समुद्र तट तक ले गए और शव को रेत में दफना दिया।

सेंटिनल जनजाति के बारे में जानकारी

- सेंटिनल जनजाति के लोग न खेती करते हैं और न ही जानवर पालते हैं। ये फल, शहद, कंदमूल, सुअर, कछुआ, मछली का सेवन करते हैं।
- इन्होंने अब तक न नमक खाया है और न ही शक्कर का स्वाद चखा है। कहा जाता है कि ये लोग आग जलाना भी नहीं जानते हैं।
- इस जनजाति से संपर्क स्थापित करने वाले भारतीय मानवशास्त्री त्रिलोकनाथ पंडित के अनुसार इनके समूह का कोई मुखिया नहीं होता लेकिन तीर, भाला, टोकरी, झोपड़ी आदि बनाने वाले हुनरमंदों को सम्मान दिया जाता है।
- इन द्वीप समूहों की जनजातियों के लोग नजदीक के रिश्ते में शादी नहीं करते।
- जानकारी के अनुसार इस जनजाति के बच्चे अपने पैरों पर खड़े होने लगते हैं, तभी से ही उन्हें तीर-भाला बनाने का प्रशिक्षण देने लगते हैं ताकि वे बड़े होकर हुनरमंद बनें और सम्मान पा सकें।
- सेंटिनल जनजाति की विभिन्न प्रथाएं भी हैं जिसमें कुछ काफी रोचक हैं। जैसे, इन जनजातियों में यदि किसी की मृत्यु झोपड़ी में हो जाती है, तो उस झोपड़ी में कोई नहीं रहता।
- बीमार होने पर सिर्फ जड़ी-बूटियों और पूजा-पाठ का सहारा लिया जाता है। ये जनजातियां भूत-प्रेतों को भी बहुत मानती हैं। इनकी नजर में अच्छे और बुरे भूत होते हैं तथा वे इनकी पूजा भी करते हैं।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

जारवा जनजाति के बारे में जानकारी

- इसी प्रकार श्जारवा जनजातिश के आदिवासी अंडमान द्वीप में दक्षिण और मध्य द्वीप में रहते हैं।
- जारवा जनजाति के आदिवासी रंग में गहरे काले और कद में छोटे होते हैं। बच्चे का रंग थोड़ा भी गोरा हो तो ये मानते हैं कि उसका पिता दूसरे समुदाय का है, और बच्चे की हत्या कर देते हैं। जिसके लिए समुदाय में कोई दंड नहीं है। पुलिस को इसमें दखल न देने का आदेश है।
- जारवा जनजाति के लोग तीर धनुष तथा भालों से जानवरों का शिकार करते हैं और उन्हें भोजन के रूप में ग्रहण करते हैं। कहा जाता है कि ये लोग शहद को भी पसंदीदा भोजन मानते हैं। इनकी आबादी प्रतिवर्ष घटती देखी गई है, एक अनुमान के अनुसार वर्तमान में इनकी आबादी 250 से 400 के बीच है।
- वर्ष 1956 में जारवा समेत अंडमान निकोबार की पांच जनजातियों को मूल जनजाति का दर्जा दिया गया जिनमें ग्रेट (महान) अंडमानी, ओन्गे और सेंटीनली भी शामिल थे।

स्रोत: द हिंदू

करतारपुर कॉरिडोर: उपराष्ट्रपति वैंकेया नायडू ने कॉरिडोर की आधारशिला रखी

चर्चा में क्यों?

- भारत के उपराष्ट्रपति वैंकेया नायडू ने 26 नवंबर 2018 को करतारपुर कॉरिडोर की आधारशिला रखी। केंद्र सरकार ने वर्ष 2019 में गुरु नानक देव की 550वीं जयंती मनाने के उपलक्ष्य में करतारपुर कॉरिडोर को मंजूरी देकर बड़ा निर्णयलिया है।

मुख्य तथ्य

- केंद्र सरकार ने फैसला किया है कि गुरुदासपुर स्थित डेरा बाबा नानक से लेकर अंतरराष्ट्रीय सीमा तक एक करतारपुर करॉरिडोर बनाया जाएगा।
- यह वैसा ही होगा, जैसे कोई बहुत बड़ा धार्मिक स्थल होता है. यहां पर वीजा और कस्टम की सुविधा मिलेगी। इसको व्यापक तरीके से करतारपुर साहिब कॉरिडोर के तहत विकसित किया जायेगा जिसकी लम्बाई लगभग तीन किलोमीटर होगी। इस कॉरिडोर को भारत सरकार फंड करेगी।
- सिखों द्वारा लंबे समय से इस कॉरिडोर के निर्माण की मांग की जा रही थी। सिख समुदाय के लिए करतारपुर साहिब काफी मायने रखता है। यह सिखों का पवित्र तीर्थ स्थल है जहां गुरुनानक देवजी ने अपने जीवन के 18 साल बिताए थे।

कॉरिडोर का लाभ

- कॉरिडोर बनने के बाद श्रद्धालु पंजाब के गुरुदासपुर जिले से पकिस्तान स्थित करतारपुर साहिब जाकर दर्शन कर सकेंगे.
- फिलहाल यह स्थल पाकिस्तान में भारतीय सीमा से करीब चार किलोमीटर दूर है और अभी पंजाब के गुरदासपुर में डेरा बाबा नानक बॉर्डर आउटपोस्ट से दूरबीन से श्रद्धालु इस गुरूद्वारे के दर्शन करते हैं।

करतारपुर साहिब

- सिखों के प्रथम गुरु गुरुनानक देव ने करतारपुर साहिब में अपने जीवन के 18 साल बिताये थे।
- श्री करतापुर साहिब गुरुद्वारे को पहला गुरुद्वारा माना जाता है जिसकी नींव श्री गुरु नानक देव जी ने रखी थी।
- हालांकि बाद में रावी नदी में बाढ़ के कारण यह बह गया था। इसके बाद वर्तमान गुरुद्वारा महाराजा रणजीत सिंह ने बनवाया था।
- कहा जाता है कि इस क्षेत्र का धनाड्य व्यक्ति दुनी चंद गुरुनानक से मिला था और उन्हें 100 एकड़ जमीन दान दी थी।
- गुरु नानक ने भेंट स्वीकार की और वहां रहकर एक छोटी इमारत का निर्माण करवाया।
- उन्होंने यहां रहकर भूमि की जुताई भी की और खेती भी की. गुरु नानकदेव ने इसी स्थान से 'नाम जपो, किरत करो और वंड छको' (ईश्वर का नाम लें, मेहनत करें और बांट कर खाएं) का फलसफा दिया था।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

○ डब्ल्यूसीडी मंत्रालय ने यौन उत्पीड़न पोर्टल 'शी-बॉक्स' को केंद्रीय/राज्य मंत्रालयों और जिलों से लिंक किया

चर्चा में क्यों?

- महिला और बाल विकास मंत्रालय ने कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की शिकायतों की रिपोर्ट करने के लिए ऑनलाइन पोर्टल 'शी-बॉक्स' को केंद्रीय मंत्रालयों, विभागों और 33 राज्यों के 653 जिलों तथा केंद्रशासित प्रदेशों से लिंक किया है।

मुख्य तथ्य:

- 'शी-बॉक्स' पर दर्ज कराई गई शिकायत के प्रत्येक मामले तत्काल निपटारे के लिए संबंधित केंद्र/राज्य अधिकारियों के पास सीधे चले जाएंगे और वे अपने अधिकार क्षेत्र में मामले के संबंध में कार्रवाई करेंगे।
- 'शी-बॉक्स' की शिकायतकर्ता और महिला बाल विकास मंत्रालय द्वारा निगरानी की जा सकती है। इससे मामले के निपटान में लगने वाले समय में कमी आएगी।
- 20 नवंबर, 2018 तक 'शी-बॉक्स' पर 321 शिकायतें दर्ज की गई हैं, जिसमें 120 शिकायतें केंद्रीय मंत्रालयों/विभागों, 58 राज्य सरकारों और 143 निजी कंपनियों से संबंधित हैं।

उद्देश्य:

- 'शी-बॉक्स' पोर्टल कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न का सामना रही महिलाओं को तेजी से राहत उपलब्ध कराने का एक प्रयास है। इस पोर्टल के केंद्र/राज्य सरकारों से लिंक होने के कारण एक बार इस पोर्टल पर शिकायत दर्ज होने पर सीधे ही संबंधित नियोक्ता के अनुभाग में भेज दी जाएगी। इस पोर्टल के माध्यम से महिला और बाल विकास मंत्रालय के साथ-साथ शिकायतकर्ता भी पूछताछ में हुई प्रगति की निगरानी कर सकता है।

महिला और बाल विकास मंत्रालय द्वारा सक्रिय कदम:

- विश्वव्यापी अभियान रुमीटू के चलते, महिला और बाल विकास मंत्रालय ने यह सक्रिय कदम उठाया है। इस अभियान में कार्यस्थलों पर यौन उत्पीड़न और दुरूपयोग का सामना कर रही महिलाओं ने अपने अनुभव बयान किए हैं।

'शी-बॉक्स' के बारे में:

- 'शी-बॉक्स' का शुभारंभ वर्ष 2017 में किया गया था, जिसमें सरकारी और निजी कर्मचारियों सहित सभी महिला कर्मियों को कार्यस्थलों पर यौन उत्पीड़न की ऑनलाइन शिकायतें दर्ज कराने की सुविधा प्रदान की गई है। जिन महिलाओं ने पहले ही यौन उत्पीड़न अधिनियम के तहत गठित संबंधित आंतरिक शिकायत समिति या स्थानीय शिकायत समिति को अपनी लिखित शिकायतें भेजी हैं वे भी इस पोर्टल के माध्यम से अपनी शिकायतें दर्ज करा सकती हैं। इस पोर्टल पर Shebox.nic.in लिंक से पहुंचा जा सकता है।

स्रोत: पीआईबी

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

रामायण एक्सप्रेस दिल्ली से आरंभ

चर्चा में क्यों?

- दिल्ली स्थित सफदरजंग रेलवे स्टेशन से 14 नवंबर 2018 को पूरे रामायण सर्किट पर दौड़ने वाली विशेष पर्यटक ट्रेन श्री रामायण एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। यह ट्रेन हिन्दू महाग्रंथ रामायण में वर्णित प्रमुख स्थानों पर जाएगी।
- यह ट्रेन तमिलनाडु के रामेश्वरम तक की यात्रा 16 दिन में पूरी करेगी, और इस दौरान भगवान राम के जीवन से जुड़े सभी महत्वपूर्ण स्थानों पर रुकेगी। श्री रामायण एक्सप्रेस अपनी पहली यात्रा पर 800 यात्रियों के साथ रवाना हुई है।

श्री रामायण एक्सप्रेस के प्रमुख स्टेशन

- यह ट्रेन दिल्ली से रवाना होगी। यहां से निकलने के बाद इसका पहला पड़ाव अयोध्या होगा। अयोध्या के बाद यह हनुमान गढ़ी, रामकोट और कनक भवन मंदिर जाएगी। ट्रेन रामायण सर्किट के महत्वपूर्ण स्थलों जैसे नंदीग्राम, सीतामढ़ी, जनकपुर, वाराणसी, प्रयाग, श्रृंगपुर, चित्रकूट, नासिक, हम्पी और रामेश्वरम को कवर करेगी। ट्रेन अपनी यात्रा तमिलनाडु के रामेश्वरम में 16 दिनों में पूरी करेगी।

रामायण एक्सप्रेस की विशेषताएं

- आईआरसीटीसी के मुताबिक टूर पैकेज में धर्मशालाओं में भोजन, आवास, दर्शनीय-स्थलों की सैर की व्यवस्था होगी और आईआरसीटीसी के टूर मैनेजर भी पर्यटकों के साथ पूरे दौरे की यात्रा करेंगे।
- रामायण एक्सप्रेस में 800 यात्रियों की कुल क्षमता होगी। इसमें प्रति व्यक्ति टिकट की कीमत 15,120 रुपये होगी।
- ट्रेन में श्रीलंका के दौरे के लिए अलग से शुल्क चुकाना होगा।
- यदि यात्री श्रीलंका का सफर भी करना चाहते हैं, तो इसके लिए चेन्नई से कोलंबो तक हवाई सफर से जा सकेंगे. इसके बाद यहां 5 रात और 6 दिन का पैकेज मिलेगा।
- श्रीलंका के इस पैकेज की कीमत प्रति व्यक्ति 36,970 रुपये होगी. इस टूर पैकेज में कैंडी, नुवारा एलिया, कोलंबो और नेगोंबो जैसे गंतव्य शामिल होंगे।
- आईआरसीटीसी ने हाल ही में 28 अगस्त से 9 सितंबर 2018 तक त्रिवेन्द्रम के रामायण सर्किट से पंचावती, चित्रकूट, श्रिंगवेरपुर, तुलसी मानस मंदिर, दरभंगा, सीतामढ़ी, अयोध्या और रामेश्वरम तक एसी पर्यटक ट्रेन संचालित की है.

स्रोतः द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

सभी पूर्वोत्तर राज्यों द्वारा दिसम्बर 2018 तक खुले में शौच से मुक्ति की घोषणा

चर्चा में क्यों?

- पूर्वोत्तर राज्यों की समीक्षा बैठक 14 नवंबर 2018 को गुवाहाटी, असम में आयोजित की गई. इस कार्यशाला में खुले में शौच से मुक्ति की स्थिति, ठोस और तरल कचरा प्रबंधन तथा ग्रामीण जलापूर्ति की स्थिति पर चर्चा की गई।
- हिमाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नगालैंड, त्रिपुरा और सिक्किम की टीमों ने समीक्षा में हिस्सा लिया। खुले में शौच से मुक्त राज्यों की टीमों ने अपने प्रयासों के बारे में बताया। सिक्किम देश का पहला खुले में शौच से मुक्त राज्य है। राज्य की टीम ने ठोस और तरल कचरा प्रबंधन पहलों की जानकारी दी। जो राज्य खुले में शौच से मुक्त नहीं हैं, उन्होंने प्रतिबद्धता जाहिर की कि वे दिसम्बर 2018 तक खुले में शौच से मुक्त हो जाएंगे।
- असम के उपायुक्तों ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए केन्द्रीय टीम से बातचीत की। बैठक के बाद पूरे पूर्वोत्तर के प्रतिष्ठित मीडिया कर्मियों और मीडिया घरानों के साथ वार्ता की गई।

सिक्किम पहला ओडीएफ राज्य

- सिक्किम भारत का पहला राज्य है, जो खुले में शौच से मुक्त हो चुका है। सिक्किम स्वच्छ भारत अभियान के शुरु होने के 6 वर्ष पूर्व अर्थात 2006 में ही ओडीएफ हो चुका है। यहां शौचालयों के निर्माण के लिए राज्य में मौजूद स्थानीय सामग्रीयों का उपयोग किया गया जैसे बांस से बनी संरचनाएं, जिन्हें स्थानीय भाषा में 'इकरा' कहा जाता है, का उपयोग किया गया. इसके अलावा लकड़ी व पत्थरों से भी शौचालयों का निर्माण किया गया।

ओडीएफ की परिभाषा

- भारत सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय ने खुले में शौच से मुक्त (ओडीएफ) की सार्वभौमिक परिभाषा तय की है. इसके तहत ओडीएफ तभी माना जाएगा जब गांव में-पर्यावरण में खुले में मानव मल नहीं दिखे तथा हर घरेलू, सार्वजनिक व सामुदायिक स्तर पर सुरक्षित ढंग से मल निष्पादन हो।
- मंत्रालय द्वारा स्पष्ट किया गया है कि मल निष्पादन की सुरक्षित तकनीक से आशय ऐसी तकनीक से है जिससे सतह की मिट्टी, भूजल या सतही पानी प्रदूषित न हो। मल मक्खियों या जानवरों की पहुंच से दूर हो, बदबू व अप्रिय स्थितियां न हों।
- साथ ही यह भी बताया गया है कि ओडीएफ का लक्ष्य केवल व्यक्तिगत शौचालयों पर जोर देकर हासिल नहीं किया जा सकता। इसके लिए गांव वालों के बर्ताव में बदलाव ज्यादा अहम है।

भारत में ओडीएफ राज्य/जिलों की जानकारी

- स्वच्छ भारत मिशन के तहत अब तक 4.30 लाख गांव, 444 जिले और 19 राज्य और केंद्र शासित प्रदेश खुले में शौच से मुक्त घोषित किए जा चुके हैं।
- वर्ष 2017 में भारतीय गुणवत्ता परिषद और वर्ष 2016 में राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन द्वारा किए गए दो स्वतंत्र सर्वेक्षणों से इन शौचालयों का क्रमशः 91 प्रतिशत तथा 95 प्रतिशत उपयोग किए जाने के तथ्य सामने आये हैं।
- इन आंकड़ों के ही परिणामस्वरूप 19 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों को ओडीएफ घोषित किया गया है. इनमें प्रमुख रूप से शामिल हैं - सिक्किम, हिमाचल प्रदेश, केरल, हरियाणा, उत्तराखंड, गुजरात, अरुणाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, चंडीगढ़ और दमन एवं दीव।
- अभियान का लक्ष्य 2 अक्टूबर 2019 यानि गांधी जी की 150वीं जयंती तक पूरे भारत को खुले में शौच से मुक्त करना है। अब तक इस अभियान के तहत 8 करोड़ से भी ज्यादा घरों में शौचालय बनाए जा चुके हैं।
- गौरतलब है कि यूनिसेफ भी यह अनुमान व्यक्त कर चुका है कि स्वच्छता का अभाव हर साल भारत में 1,00,000 से भी अधिक बच्चों की मौत के लिए उत्तरदायी है।

स्रोतः द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने LEAP और ARPIT कार्यक्रम लॉन्च किये

चर्चा में क्यों?

- मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने उच्च शिक्षा में गुणवत्ता लाने हेतु अर्पित (एन्युअल रिफ्रेशर प्रोग्राम इन टीचिंग) और लीप (लीडरशिप फार ऐकेडमिशियन्स प्रोग्राम) नाम से दो नए प्रोग्राम लॉन्च किये हैं।

मुख्य तथ्य

- इसके तहत उच्च शिक्षण संस्थानों में पढ़ाने वाले शिक्षकों को उनके विषयों से संबंधित नई जानकारियों से अपडेट किया जाएगा. साथ ही लीडरशिप की प्रतिभा भी विकसित की जाएगी।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय की पहल पर तैयार किए गए इस प्रशिक्षण प्रोग्राम में विश्वविद्यालय के कुलपतियों से लेकर उच्च शिक्षण संस्थानों के निदेशक और शिक्षकों को शामिल किया गया है।
- मौजूदा समय में देशभर के उच्च शिक्षण संस्थानों में करीब 15 लाख शिक्षक पढ़ा रहे है।

लाभ

- योजना के तहत शिक्षकों के प्रशिक्षण कोर्स की गणना उनकी पदोन्नति के दौरान की जाएगी अर्थात ऐसे शिक्षकों को पदोन्नति में वरीयता दी जाएगी।
- इसके अलावा सरकार ने विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण में नियुक्त होने वाले शिक्षकों के लिए भी एक इंडक्शन कोर्स डिजाइन किया है, जिसके तहत भर्ती होने नए शिक्षकों को नियुक्ति के दौरान ही एक महीने का इंडक्शन कोर्स करना होगा।

लीडरशिप फार ऐकेडमिशियन्स प्रोग्राम (लीप)

- यह सरकारी उच्च संस्थानों में द्वितीय स्तर के अकादमिक क्षेत्र के लोगों के लिए तीन सप्ताह का (दो सप्ताह का घरेलू तथा एक सप्ताह विदेशी प्रशिक्षण) अग्रणी नेतृत्व विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम है।
- इसका उद्देश्य दूसरे स्तर के अकादमिक प्रमुखों को भविष्य में नेतृत्व भूमिका ग्रहण करने के लिए तैयार करना है।

अर्पित (एन्युअल रिफ्रेशर प्रोग्राम इन टीचिंग)

- एन्युअल रिफ्रेशर प्रोग्राम इन टीचिंग (ARPIT) एमओओसी प्लेटफार्म स्वयं का उपयोग करते हुए 15 लाख उच्च शिक्षा फैकल्टी के ऑनलाइन पेशेवर विकास के लिए प्रमुख पहल है।

स्रोतः पीआईबी

राजव्यवस्था एवं शासन, सामाजिक न्याय एवं सामाजिक विकास

सुप्रीम कोर्ट ने मृत्युदंड की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखा

चर्चा में क्यों?

- सुप्रीम कोर्ट ने 28 नवम्बर 2018 को मृत्युदंड की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखा है। इस संबंध में सुप्रीम कोर्ट की तीन सदस्यीय पीठ ने अलग-अलग राय व्यक्त की।

मुख्य तथ्य

- तीन सदस्यीय पीठ में न्यायमूर्ति कुरियन जोसेफ, न्यायमूर्ति दीपक गुप्ता और न्यायमूर्ति हेमंत गुप्ता शामिल थे। जजों की टिप्पणियों से साफ है कि देश में मृत्युदंड की सजा बनी रहेगी।
- सुप्रीम कोर्ट ने छन्नू लाल वर्मा को सुनाई गई मौत की सजा को उम्रकैद में बदल दिया। छन्नू लाल वर्मा को दो महिलाओं सहित तीन लोगों की हत्या को लेकर मृत्युदंड की सजा सुनाई गई थी।
- तीनों न्यायाधीशों में मृत्युदंड के क्रियान्वयन को लेकर मतभेद थे लेकिन वे छन्नू लाल वर्मा की मौत की सजा को बदलने पर एकमत थे।

भारत में मौत की सजा:

- भारत में मौत की सजा कुछ गंभीर अपराधों के लिए दी जाती है. भारत के उच्चतम न्यायालय ने वर्ष 1995 के बाद 5 घटनाओं में मौत की सजा दी है। जबकि वर्ष 1991 से अब तक इसकी कुल संख्या 26 है।
- मिथु बनाम पंजाब राज्य मामले में उच्चतम न्यायालय ने भारतीय दण्ड संहिता की धारा 303 के तहत आजीवन कारावास की सजा काट रहे किसी व्यक्ति को आवश्यक रूप से मौत की सजा देने को गैरकानूनी माना है।
- भारत में वर्ष 1947 में स्वतंत्रता के बाद मौत की सजा प्राप्त लोगों की संख्या विवादित है; अधिकारिक सरकारी आँकड़ों के अनुसार स्वतंत्रता के बाद अब तक केवल 52 लोगों को फाँसी की सजा दी गयी है. यद्यपि पीपुल्स यूनियन फॉर सिविल लिबर्टीज के एक शोध के अनुसार यह संख्या बहुत अधिक है और इसके अनुसार केवल वर्ष 1953 से वर्ष 1963 के दशक में ही यह संख्या 1422 है।
- नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, दिल्ली के एक शोध के अनुसार भारत में वर्ष 2000 से अब तक नीचली अदालतों द्वारा कुल 1617 कैदियों को मौत की सजा सुनाई जा चुकी है। नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी दिल्ली के अनुसार वर्ष 1947 से अब तक भारत में कुल 755 लोगों को मृत्यु दण्ड दिया जा चुका है।
- दिसम्बर 2007 में, भारत ने मौत की सजा पर रोक के संयुक्त राष्ट्र महासभा संकल्प के विरुद्ध मतदान किया था। नवम्बर 2012 में, मौत की सजा को प्रतिबन्धित करने के लिए रखे गये संयुक्त राष्ट्र महासभा के मसौदे के विरुद्ध मतदान करते हुये अपने फैसले को बरकरार रखा।
- विधि आयोग ने 31 अगस्त 2015 को सरकार को एक प्रतिवेदन सौंपा जिसमें देशद्रोह अथवा आतंकी अपराधों के अतिरिक्त अन्य अपराधों के लिए मौत की सजा को समाप्त करने की सिफारिश की। इस प्रतिवेदन में मौत की सजा को समाप्त करने के लिए विभिन्न कारकों को उद्धृत किया गया है जिसमें 140 अन्य देशों में इसकी समाप्ति का भी उल्लेख है। भारतीय दण्ड संहिता के साथ-साथ भारतीय संसद द्वारा कानूनों की नयी शृंखला अधिनियमित की गयी जिनमें मौत की सजा का प्रावधान है।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

महाराष्ट्र विधानसभा ने मराठा आरक्षण को मंजूरी दी

चर्चा में क्यों?

- महाराष्ट्र विधानसभा (Maharashtra Assembly) में मराठा आरक्षण बिल (Maratha Reservation Bill) एकमत के साथ पास हो गया है। महाराष्ट्र सरकार मराठा समुदाय को नौकरी और शिक्षा में 16 फीसदी आरक्षण देने पर सहमत हो गई है।

मुख्य तथ्य

- इसके साथ ही पिछड़ी जातियों, अनुसूचित जाति/जनजातियों, अल्पसंख्यक समूहों व मराठाओं को दिया जाने वाला कुल आरक्षण 68 फीसदी होगा। सरकार अब जल्द ही कानूनी औपचारिकताएं पूरी कर इसे अमल में लाने का प्रयास करेगी।
- मराठा समुदाय को ये आरक्षण राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग (एसबीसीसी) के तहत दिया जाएगा। अब इस बिल को विधानपरिषद में रखा जाएगा। वहां से पास होने के बाद ये कानून का रूप ले लेगी।
- महाराष्ट्र में 76 फीसदी मराठी खेती-किसानी और मजदूरी कर जीवन यापन कर रहे हैं। वहीं सिर्फ 6 फीसदी लोग सरकारी-अर्ध सरकारी नौकरी कर रहे हैं।

मराठा आरक्षण विधेयक

- बिल के मुताबिक, राज्य सरकार राज्य की 31 प्रतिशत मराठा आबादी को 16 प्रतिशत का आरक्षण देने जा रही है। एसबीसीसी ने मराठा समुदाय को 'सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़ा' करार दिया है।
- मराठा समुदाय की राज्य में 30 प्रतिशत आबादी है। यह समुदाय लंबे समय से अपने लिए सरकारी नौकरियों और शिक्षा में आरक्षण की मांग कर रहा है।
- मराठा आरक्षण विधेयक के साथ ही राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग (एसबीसीसी) की मराठा आरक्षण से जुड़ी अनुशंसाओं पर उठाए गए कदमों के बारे में दो पन्नों की कार्रवाई रिपोर्ट (एटीआर) को भी पटल पर रखा गया। इस मुद्दे पर राजस्व मंत्री चंद्रकांत पाटिल की अध्यक्षता वाली राज्य मंत्रिमंडल की उप समिति की बैठक हुई।

पृष्ठभूमि

- मराठों के आरक्षण की मांग 1980 के दशक से लंबित पड़ी थी। राज्य पिछड़ा आयोग ने 25 विभिन्न माूब/नकों पर मराठों के सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक आधार पर पिछड़ा होने की जांच की।
- इसमें से सभी मानकों पर मराठों की स्थिति दयनीय पाई गई। इस दौरान किए गए सर्वे में 43 हजार मराठा परिवारों की स्थिति जानी गई।
- महाराष्ट्र में मराठा आरक्षण को लेकर वर्ष 2016 से 58 मार्च निकाले गए। हाल ही में मराठों का उग्र विरोध प्रदर्शन भी देखने को मिला था।
- यह मामला कोर्ट के सामने लंबित होने से सरकार ने पिछड़े आयोग को मराठा समुदाय की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक स्थिति जानने की जिम्मेदारी दी थी।

स्रोतः द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारतीय संविधान दिवस:26 नवंबर

चर्चा में क्यों?

भारत में हर साल 26 नवंबर को 'संविधान दिवस' मनाया जाता है। इस दिन डॉ. भीमराव अंबेडकर को याद किया जाता है। उन्होंने भारतीय संविधान के रूप में दुनिया का सबसे बड़ा संविधान तैयार किया है।

मुख्य तथ्य

- भारत के संविधान का मसौदा तैयार करनेवाली समिति की स्थापना 29 अगस्त 1947 को की गई थी और इसके अध्यक्ष के तौर पर डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की नियुक्ति हुई थी।
- देश के संविधान निर्माण की 69वीं वर्षगांठ पर पूरे देश में कार्यक्रम आयोजित किये गये। 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में मनाते हुए सभी सरकारी कार्यालयों और शिक्षण संस्थाओं में संविधान के प्रति जागरूकता के लिए कई तरह के कार्यक्रम आयोजित किये गये।

क्यों मनाया जाता है संविधान दिवस 26 नवंबर को?

- भारतीय संविधान सभा की तरफ से इसे 26 नवंबर 1949 को अपनाया गया था। इसके बाद 26 नवंबर 1950 को इसे लोकतांत्रिक सरकार प्रणाली के साथ लागू किया गया था। यही वजह है कि 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में मनाया जाता है।

संविधान का मसौदा तैयार करने वाली समिति:

- संविधान का मसौदा तैयार करने वाली समिति हिंदी और अंग्रेजी दोनों में ही हस्तलिखित और कॉलीग्राफ्ड थी। इसमें किसी भी तरह की टाइपिंग या प्रिंट का इस्तेमाल नहीं किया गया था।
- संविधान सभा के 284 सदस्यों ने 24 जनवरी 1950 को दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए थे फिर दो दिन बाद इसे लागू किया गया था। भारत के लोग अपना संविधान शुरू करने के बाद अपना इतिहास, स्वतंत्रता, स्वतंत्रता और शांति का जश्न मनाते है।

भारतीय संविधान:

- भारतीय संविधान दुनिया के सभी संविधानों को बारीकी से परखने के बाद बनाया गया। इसे विश्व का सबसे बड़ा संविधान माना जाता है, जिसमें 448 अनुच्छेद, 12 अनुसूचियां और 94 संशोधन शामिल हैं। यह हस्तलिखित संविधान है जिसमें 48 आर्टिकल हैं। इसे तैयार करने में 2 साल 11 महीने और 17 दिन का समय लग गया था।

संविधान दिवस:

- आंबेडकरवादी और बौद्ध लोगों द्वारा कई दशकों पूर्व से 'संविधान दिवस' मनाया जाता है। भारत सरकार द्वारा पहली बार वर्ष 2015 में MkWŒ भीमराव आंबेडकरवादी के इस महान योगदान के रूप में 26 नवम्बर को 'संविधान दिवस' मनाया गया। 26 नवंबर का दिन संविधान के महत्व का प्रसार करने और डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों और अवधारणाओं का प्रसार करने के लिए चुना गया था।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

आंध्र प्रदेश ने विभाजन के चार वर्ष बाद राजकीय चिन्ह स्वीकार किया

चर्चा में क्यों?

- आंध्र प्रदेश के विभाजन के करीब चार वर्षों बाद राज्य ने आधिकारिक उपयोग के लिए अपने नए राज्य चिह्न को स्वीकार कर लिया है। आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा जारी जानकारी में बताया गया कि यह चिह्न अमरावती कला से प्रेरित है और इसमें हरे, लाल व पीले रंग का उपयोग हुआ है। इसके अलावा राज्य चिह्न के नीचे राष्ट्रीय चिह्न को भी जगह दी गई है।

प्रमुख तथ्य

- आंध्र प्रदेश का राजकीय प्रतीक अमरावती स्कूल ऑफ आर्ट से प्रेरित है।
- इसमें 'धम्म चक्र', शामिल है जो बौद्ध प्रतीक के साथ सजाया जाता है जिसमें पिनाट पत्तियों और कीमती पत्थरों के साथ बनाया जाता है।
- सजावटी मोतियों को तीन चक्रों में आरोही क्रम में लगाया गया है। आंतरिक चक्र में 48, बीच में 118 और बाहरी चक्र में 148 मोती लगाए गये हैं।
- 'पंमा घाटक' अथवा 'फूलदान' 'धम्म चक्र' के केंद्र में है।
- इसके मुख्य आवरण पर मेडलियन और टैसल के साथ चार बैंड वाली माला के साथ सजाया गया है।
- राजकीय प्रतीक में हरे, लाल और पीले रंग का उपयोग किया गया है।

अन्य घोषणाएं

- राज्य सरकार द्वारा काले हिरन (ब्लैक बक), जिसे स्थानीय कृष्णा जिंका भी कहा जाता है, को राजकीय पशु यथावत रखा गया है। नीम आंध्र प्रदेश का राजकीय पेड़ है तथा रोज रिंग्ड पैराकीट राज्य का राजकीय पक्षी है। आंध्र प्रदेश के बंटवारे के बाद वॉटर लिली की राजकीय फूल के रूप में मान्यता समाप्त कर दी गई थी उसके स्थान पर चमेली को राजकीय फूल घोषित किया गया।

भारत का राजकीय चिन्ह

- अशोक चिह्न भारत का राजकीय प्रतीक है। इसको सारनाथ में मिली अशोक लाट से लिया गया है। मूल रूप इसमें चार शेर हैं जो चारों दिशाओं की ओर मुंह किए खड़े हैं।
- इसके नीचे एक गोल आधार है जिस पर एक हाथी, दौड़ता घोड़ा, एक सांड़ और एक सिंह बने हैं। ये गोलाकार आधार खिले हुए उल्टे लटके कमल के रूप में है।
- हर पशु के बीच में एक धर्म चक्र बना हुआ है। राष्ट्र के प्रतीक में जिसे 26 जनवरी 1950 में भारत सरकार द्वारा अपनाया गया था केवल तीन सिंह दिखाई देते हैं और चौथा छिपा हुआ है, दिखाई नहीं देता है।
- चक्र केंद्र में दिखाई देता है, सांड दाहिनी ओर और घोड़ा बायीं ओर और अन्य चक्र की बाहरी रेखा बिल्कुल दाहिने और बाई छोर पर दिखाई देते हैं।
- प्रतीक के नीचे सत्यमेव जयते देवनागरी लिपि में अंकित है। यह शब्द सत्यमेव जयते शब्द मुंडकोपनिषद से लिए गए हैं, जिसका अर्थ है सत्य की सदा विजय होती है।

स्रोतः इंडियन एक्सप्रेस

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

जम्मू-कश्मीर विधानसभा भंग

चर्चा में क्यों?

- जम्मू-कश्मीर विधानसभा भंग (Jammu&Kashmir Assembly) हो गई है। यह कार्रवाई तब हुई, जब 21 नवम्बर 2018 को विभिन्न पार्टियों की ओर से सरकार बनाने का दावा पेश किया गया। इसके तत्काल बाद राज्यपाल सत्यपाल मलिक की ओर से विधानसभा भंग करने की कार्रवाई की गई।
- राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने धारा 53 के तहत विधानसभा भंग करने का आदेश दिया. इससे पहले पीडीपी ने एनसी और कांग्रेस के साथ सरकार बनाने का दावा पेश किया था। विधानसभा भंग होने के बाद सरकार बनने की सारी संभावनाएं खत्म हो गई हैं.
- राजभवन ने राज्यपाल की तरफ से एक बयान जारी कर कहा कि जम्मू-कश्मीर में स्थिरता व सुरक्षा का माहौल बनाने और स्पष्ट बहुमत वाली सरकार के गठन के लिए उचित समय पर चुनाव कराने के इरादे से ही मौजूदा विधानसभा को भंग किया गया है.

विधानसभा भंग करने के चार मुख्य कारण:

राज्यपाल ने विधानसभा को तत्काल प्रभाव से भंग करने हेतु चार मुख्य कारणों का हवाला दिया, जिसमें निम्न शामिल हैं:

- राज्यपाल ने सबसे प्रमुख वजह सरकार बनाने के लिए विधायकों की खरीद-फरोख्त की आशंका जताई है।
- परस्पर विरोधी राजनीतिक विचारधारा वाले दलों के गठबंधन से स्थाई सरकार बनने में आशंका रही। राज्यपाल के अनुसार दो विरोधी दलों के एक साथ आने राज्य में स्थिर सरकार नहीं बन सकती। गठबंधन में शामिल कुछ दल विधानसभा भंग करने की मांग करते थे। इसके अतिरिक्त पिछले कुछ वर्षों का अनुभव यह बताता है कि खंडित जनादेश से स्थाई सरकार बनाना संभव नहीं है। ऐसी पार्टियों का साथ आना जिम्मेदार सरकार बनाने की बजाए सत्ता हासिल करने का प्रयास है।
- व्यापक खरीद फरोख्त होने और सरकार बनाने के लिए बेहद अलग राजनीतिक विचारधाराओं के विधायकों का समर्थन हासिल करने के लिए धन के लेन देन होने की आशंका हैं। ऐसी गतिविधियां लोकतंत्र के लिए हानिकारक हैं और राजनीतिक प्रक्रिया को दूषित करती हैं।
- बहुमत के लिए अलग अलग दावें हैं वहां ऐसी व्यवस्था की उम्र कितनी लंबी होगी इस पर भी संदेह है। जम्मू कश्मीर की नाजुक सुरक्षा व्यवस्था जहां सुरक्षा बलों के लिए स्थाई और सहयोगात्मक माहौल की जरूरत है। ये बल आतंकवाद विरोधी अभियानों में लगे हुए हैं और अंततः सुरक्षा स्थिति पर नियंत्रण पा रहे हैं।

राज्यपाल शासन:

- वर्ष 2015 में राज्य में बीजेपी और पीडीपी ने मिलकर सरकार बनाई थी। जम्मू-कश्मीर में 16 जून 2018 को भाजपा के समर्थन वापस लेने से मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती के नेतृत्व वाली पीडीपी-भाजपा गठबंधन सरकार गिर गई थी। इसके बाद से ही राज्यपाल शासन लागू है। सरकार का गठन न होने की स्थिति में 19 दिसंबर 2018 को राज्यपाल शासन के छह माह पूरे होते ही राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू हो जाता, क्योंकि राज्य संविधान के मुताबिक जम्मू-कश्मीर में छह माह से ज्यादा समय तक राज्यपाल शासन लागू नहीं रखा जा सकता।

जम्मू-कश्मीर विधानसभा के समीकरण

- जम्मू-कश्मीर विधानसभा में कुल 89 सीटे हैं, जिनमें से दो सदस्य मनोनीत किए जाते हैं। ऐसी स्थिति में सरकार बनाने के लिए 44 विधायकों की जरूरत होती है। मौजूदा स्थिति में पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) के पास 28, बीजेपी के 25 और नेशनल कॉन्फ्रेंस के पास 15 और कांग्रेस के पास 12 सीटें हैं।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

पश्चिम बंगाल ने बस्तियों के निवासियों को भूमि अधिकार देने हेतु विधेयक पारित किया

चर्चा में क्यों?

- पश्चिम बंगाल विधानसभा ने 19 नवम्बर 2018 को उत्तर बंगाल में बस्तियों के निवासियों को भूमि अधिकार देने के लिए एक विधेयक सर्वसम्मति से पारित कर दिया। इससे उन बस्तियों में रहने वाले लोगों के भविष्य को लेकर जारी अनिश्चितता समाप्त हो गई।
- पश्चिम बंगाल भूमि सुधार (संशोधन) विधेयक, 2018 भूमि एवं भूमि सुधार राज्य मंत्री चंद्रिमा भट्टाचार्या की ओर से पेश किया गया था। सदन में उसे सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया। इस विधेयक के समर्थन में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि इस ''ऐतिहासिक विधेयक'' से बस्ती निवासियों को भारतीय नागरिक होने का पूर्ण दर्जा प्राप्त होगा। उन्हें इसके साथ ही सभी नागरिक सुविधाएं एवं नागरिक अधिकार भी प्राप्त होंगे।

भूमि अधिकार दस्तावेज वितरित करने में मदद:

- यह विधेयक सीमांत कूचबिहार जिला स्थित बस्तियों में रहने वाले लोगों को भूमि अधिकार दस्तावेज वितरित करने में मदद करेगा. राज्य सरकार लाभार्थियों को उनका उचित लाभ देने पर काम कर रही है।
- कूचबिहार में 17,160 एकड़ में फैली 111 भारतीय बस्तियां बांग्लादेश का हिस्सा बनी थीं जबकि 7110 एकड़ में फैली 51 बांग्लादेशी बस्तियां भारत का हिस्सा बनी थीं। भारत की तरफ स्थित बस्तियों में रहने वाले करीब 37,334 लोगों ने बांग्लादेश जाने से मना कर दिया था जबकि बांग्लादेश की ओर बस्तियों में रहने वाले 922 लोगों ने भारत में रहने का निर्णय किया।
- राज्य सरकार बस्तियों के निवासियों के आवास पर 100 करोड़ रूपये से अधिक पहले ही खर्च कर चुकी है। राज्य सरकार को केंद्र से 579 करोड़ रूपये मिले थे और उसे 426 करोड़ रूपये मिलने बाकी हैं।
- यह कूच बिहार के सीमावर्ती जिले में संलग्नकों के भूमि अधिकार दस्तावेजों के वितरण में भी मदद करेगा। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप 13 प्रशासनिक जिला (मौजा) का निर्माण होगा, जबकि शेष क्षेत्र मौजूदा 31 मौजा के साथ मिल जाएगा। भूस्खलन करने वालों को भूमि की स्वामित्व की स्थिति का पता लगाने के लिए प्लॉट-टू-प्लॉट सत्यापन किया गया है।

पृष्ठभूमि:

- बांग्लादेश और भारत ने 01 अगस्त 2015 को कुल 162 बस्तियों का आदान प्रदान किया था, जिससे विश्व के सबसे जटिल सीमा विवादों में से एक विवाद सुलझ गया था। यह सीमा विवाद स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सात दशकों तक लंबित रहा।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

सरकार द्वारा मातृत्व अवकाश में से सात हफ्ते का वेतन नियोक्ताओं को वापिस देने की घोषणा

चर्चा में क्यों?

- केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने 15 नवम्बर 2018 को घोषणा की है कि 15 हजार रुपये से अधिक मासिक वेतन पाने वाली महिलाओं को मिलने वाले मातृत्व अवकाश के 7 हफ्ते का वेतन सरकार नियोक्ता कंपनी को वापस करेगी।
- इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कंपनी की तरफ से गर्भवती महिला को छुट्टी देने में आनाकानी न की जाए। साथ ही कंपनियां भी वित्तीय नुकसान की चिंता छोड़ सकें. यह नियम प्राइवेट और सरकारी दोनों कंपनियों के लिए लागू होगा।

मातृत्व लाभ (संशोधित) विधेयक 2016 के मुख्य बिंदु

- पहली या दूसरी बार मां बन रही महिला को 26 हफ्ते का मातृत्व अवकाश मिल सकेगा।
- दो से ज्यादा बच्चों के लिए 12 हफ्ते की छुट्टी मिलेगी।
- तीन महीने से कम उम्र के बच्चों को गोद लेने वाली या सेरोगेट मांओं को भी 12 हफ्ते की छुट्टी दी जाएगी।
- यदि संभव हो तो कंपनी महिलाओं को घर से ही काम करने की अनुमति दे सकती है।
- प्रत्येक संगठन को उनकी नियुक्ति के समय से महिलाओं को इन लाभों को देना होगा।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

सरकार का तर्क

- मंत्रालय का तर्क है कि उन्होंने 14 सप्ताह की अतिरिक्त मैटरनिटी लीव का प्रावधान दिया था। इसलिए अब महिला की इन 14 में से आधे यानी 7 हफ्तों की सैलरी के लिए वह कंपनी को भुगतान कर देगी, ताकि महिलाओं को प्रेगनेंसी के बाद काम पर लौटने में दिक्कतों का सामना न करना पड़े. श्रम विभाग ने भी यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है।
- राशि का भुगतान लेबर वेलफेयर सेस से किया जाएगा। इस फंड में मार्च 2017 तक 32 हजार 632 करोड़ रुपए थे। इसमें से केवल 7 हजार 500 करोड़ रुपए का इस्तेमाल ही किया गया है।

पृष्ठभूमि

- वर्ष 2017-18 के बजट में सरकार ने मैटरनिटी लीव को 12 हफ्ते से बढ़ाकर 26 हफ्ते कर दिया था. इसके बाद ऐसी शिकायतें आने लगी थीं, जब कंपनियां गर्भवती महिलाओं को छुट्टी देने में कतरा रही थीं।
- गर्भवती महिलाओं को कंपनी से निकाले जाने के भी कुछ मामले सामने आए थे। इन्हीं दिक्कतों को देखते हुए मंत्रालय द्वारा यह फैसला लिया गया है।

स्रोत: पीआईबी

ELITE IAS

अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध भारत और विश्व एवं वैश्विक परिदृश्य

○ भारत अगले चार वर्ष की अवधि के लिए फिर से अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ परिषद् का सदस्य चुन लिया गया

चर्चा में क्यों?

- भारत अगले चार वर्ष की अवधि (2019-22) के लिए फिर से अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (International Telecommunications Union – ITU) परिषद् का सदस्य चुन लिया गया है। इस परिषद् के लिए चुनाव संयुक्त अरब अमीरात के दुबई में इस वर्ष चल रह। ITU Plenipotentiary Conference में हुए थे।
- इस चुनाव में भारत को कुल मिलाकर 165 मत मिले। इस प्रकार उसका स्थान ऑस्ट्रेलेशिया क्षेत्र से चुने 13 देशों में तीसरा तथा वैश्विक स्तर पर चुने 48 देशों में 8वाँ रहा. विदित हो कि ITU में 193 सदस्य होते हैं जो परिषद् के सदस्यों का चुनाव करते हैं।

ITU क्या है?

- अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (ITU) संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी है जिसका उद्देश्य विश्व-भर में दूरसंचार के संचालन और सेवा का तालमेल करना है। जब इसकी स्थापना 1865 में हुई तो इसका नाम उस समय अंतर्राष्ट्रीय बेतार संघ (International Telegraph Union) था। इस प्रकार यह विश्व का सबसे पुराना अंतर्राष्ट्रीय संगठन है। ITU का मुख्यालय स्विट्जरलैंड के जिनेवा में स्थित है।

ITU के मुख्य कार्य

- रेडियो फ्रीक्वेंसी स्पेक्ट्रम का आदर्श, न्यायपूर्ण एवं तार्किक उपयोग सुनिश्चित करना।
- विश्व-भर में संचालित दूरसंचार के लिए मानक तैयार करना।
- देशों को आंतरिक संचार गतिविधियों को विकसित तथा संधारित करने में सहयोग करना।
- ITU की अनुसंशाएँ बाध्यकारी नहीं होती हैं, किन्तु अधिकांश देश उनका अनुपालन करते हैं क्योंकि ऐसा करने से अंतर्राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक संचार का वातावरण प्रभावकारी बना रहता है।

सदस्यता

- ITU में संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देश (पलाऊ गणराज्य को छोड़कर) शामिल हैं तथा साथ ही वेटिकन सिटी भी इसका सदस्य है।
- संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों के अतिरिक्त ITU की सदस्यता जिनके लिए खुली हुई है, वे हैं – मालवाहक, उपकरण निर्माता, वित्त प्रदाता निकाय, शोध एवं विकास संगठन तथा अंतर्राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय दूरसंचार से जुड़े हुए निजी संगठन। परन्तु इन सभी निजी क्षेत्र के सदस्यों को मत का अधिकार नहीं होता है।

ITU के प्रक्षेत्र

ITI के तीन प्रक्षेत्र हैं –

1. रेडियो संचार (Radiocommunication – ITU&R) – ITU रेडियो फ्रीक्वेंसी स्पेक्ट्रम के आदर्श, न्यायपूर्ण एवं तर्कपूर्ण उपयोग को सुनिश्चित करता है।
2. दूरसंचार मानकीकरण (Telecommunication Standardization – ITU&T) – विश्व-भर में संचालित दूरसंचार के मानकीकरण के लिए ITU अनुसंशाएँ तैयार करता है।
3. दूरसंचार विकास (Telecommunication Development – ITU&D) – ITU विभिन्न देशों को अपने आंतरिक संचार को विकसित एवं संधारित करने में सहायता करता है।

स्रोतः द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

संयुक्त राष्ट्र रिपोर्ट:वर्ष 2017 में विश्वभर में प्रतिदिन 137 महिलाओं की हत्या की गई

चर्चा में क्यों?

- संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूएनओडीसी (ड्रग्स और अपराध पर संयुक्त राष्ट्र कार्यालय) द्वारा हाल ही में जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 2017 में विश्वभर में पार्टनर या परिवार के सदस्यों द्वारा प्रतिदिन 137 महिलाओं की हत्या की गई।

मुख्य तथ्य

- यूएनओडीसी द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार विश्व में महिलाओं को जानकारों अथवा परिवार के सदस्यों से सर्वाधिक खतरा अफ्रीका और अमेरिका में है।
- हालांकि, 2017 में महिलाओं की सर्वाधिक (20,000) हत्या एशिया में हुई है।

रिपोर्ट के मुख्य बिंदु

- यूनाइटेड नेशन्स ऑफिस ऑन ड्रग्स एंड क्राइम द्वारा किए गए शोध में कहा गया है कि वर्ष 2017 में कुल 87,000 महिलाओं की हत्याएं हुई थीं।
- इस आंकड़े में आधे से ज्यादा 50,000 (58 फीसदी) महिलाओं की हत्या उनके ही परिवार वालों या प्रेमी ने की है।
- साथ ही, 30,000 महिलाओं की जानबूझकर की गई हत्या उनके पूर्व प्रेमी या वर्तमान प्रेमी द्वारा की गई हैं। यह हत्या ऐसे लोगों द्वारा की गई हैं जिनपर महिलाएं आसानी से भरोसा कर सकती हैं।
- प्रति एक लाख महिलाओं पर 1.3 की वैश्विक दर से हत्या जैसे अपराध को अंजाम दिया जाता है।
- यह शोध 25 नवंबर को महिलाओं के खिलाफ हिंसा के उन्मूलन के लिए मनाए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय दिवस पर जारी किया गया।
- यूएनओडीसी ने अपनी रिपोर्ट के अंत में लिखा है कि सभी देशों ने महिलाओं के प्रति जुर्म को रोकने के लिए कोई न कोई कदम उठा रखा है। इनमें कानूनी परिवर्तन, आविष्कार, एजंसियों द्वारा किया गया प्रयास और स्पेशल यूनिट द्वारा इन जुर्मों के खिलाफ महिलाओं को ट्रेनिंग देना शामिल है। अमेरिका जैसे देश ने इस जुर्म के खिलाफ सख्त कानून बना रखे हैं. हालांकि इसके बावजूद महिलाओं और लड़कियों के प्रति जुर्म की घटनाएं कम नहीं हुई हैं. इसके लिए पुलिस, जस्टिस सिस्टम और हेल्थ-सोशल सर्विस को सख्ती से एकजूट होने की आवश्यकता है।

स्रोत: द हिंदू

अमेरिका ने भारत-चीन समेत आठ देशों को ईरान से तेल आयात करने की छूट दी

चर्चा में क्यों?

- अमेरिका ने भारत-चीन समेत आठ देशों को ईरान से तेल आयात करने की छूट दे दी है। बाकी छह देश जापान, इटली, ग्रीस, दक्षिण कोरिया, ताईवान और टर्की हैं। यह जानकारी अमेरिकी विदेश मंत्री माइक पोम्पियो ने दी।
- ईरान के पेट्रोलियम और बैंकिंग सेक्टर पर अमेरिकी प्रतिबंध 05 नवम्बर 2018 से लागू हो गए. ये ईरान पर लगे अब तक के सबसे कड़े प्रतिबंध हैं. उम्मीद है कि इस प्रतिबंध से ईरान सरकार के बर्ताव में बदलाव आएगा।

तेल खरीदने का समझौता:

- सरकारी तेल कंपनियों की तरफ से मिली सूचना के मुताबिक भारत को मई 2019 तक हर महीने 12.5 लाख टन कच्चा तेल ईरान से खरीदना होगा. इस तरह से भारतीय तेल कंपनियां 75 लाख टन अतिरिक्त कच्चा तेल खरीदने का समझौता कर सकेंगी।
- भारत ने वर्ष 2017 में ईरान से 2.25 करोड़ टन कच्चा तेल खरीदा था। पिछले वर्ष तक सऊदी अरब और इराक के बाद भारत ने सबसे ज्यादा तेल ईरान से खरीदा था। वर्ष 2018 के पहले तीन-चार महीनों तक ईरान भारत का दूसरा सबसे बड़ा तेल आपूर्तिकर्ता बन गया था।
- मई 2015 के मल्टीनेशनल परमाणु समझौते से अमेरिका को अलग करने के बाद राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने ईरान के बैंकिंग और पेट्रोलियम सेक्टर पर प्रतिबंध लगाया था, जो 4 नवंबर से लागू हो गया। ट्रम्प ने चेतावनी दी थी कि प्रतिबंध के बाद ईरान से तेल खरीदने वाले देशों पर भी कार्रवाई होगी।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

- अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के मुताबिक, प्रतिबंध के माध्यम से वे साइबर हमले, बैलिस्टिक मिसाइल परीक्षण, पश्चिम एशिया में आतंकी समूहों के समर्थन जैसी ईरान की 'घातक' गतिविधियों को रोकना चाहते हैं। वे परमाणु समझौते के लिए ईरान को दोबारा बातचीत के लिए बुलाना चाहते हैं।
- अमेरिका ने भारत, जापान और तुर्की समेत आठ देशों को तेल खरीदने को लेकर अस्थायी छूट दी है ताकि उनकी अर्थव्यवस्थाएं और वैश्विक बाजार प्रभावित नहीं हो। संयुक्त व्यापक कार्य योजना 2015 पर हस्ताक्षर करने वाले देशों में ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी और रूस के साथ चीन भी शामिल है। इस समझौते से अमेरिका ने इस साल की शुरूआत में स्वयं को अलग कर लिया।

सबसे ज्यादा तेल का आयात:

- सबसे ज्यादा तेल का आयात ईरान से साल 2018 के वित्तीय वर्ष के दौरान ईरान दुनिया का तीसरा ऐसे देश था जिसने सबसे ज्यादा कच्चा तेल भारत को सप्लाई किया था. ईरान के अलावा सऊदी अरब और ईराक से भी भारत ने तेल आयात किया था।

स्रोत: द हिंदू

भारत और चीन के बीच दोहरे कराधान से बचने के समझौते में संशोधन

चर्चा में क्यों?

- भारत और चीन के बीच दोहरे कराधान से बचने के समझौते में संशोधन किया गया है। भारत और चीन के बीच 26 नवंबर 2018 को दोहरे कराधान से बचने के समझौते में संशोधन पर हस्ताक्षर किये गये।
- संशोधन के तहत दोनों देशों के बीच कर संबंधी सूचनाओं के आदान- प्रदान का प्रावधान किया गया है। इसके अमल में आने से दोनों देशों में कर चोरी रोकने में मदद मिलेगी। संशोधन के जरिये वित्तीय अपवंचना को रोकने में मदद मिलेगी।

मुख्य तथ्य:

- इसमें कहा गया है कि ताजा संशोधन से संधि में सूचनाओं के आदान- प्रदान से संबंधित मौजूदा प्रावधानों को नये अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप बनाया गया है।
- इसके अलावा संधि में कारोबार में आधार क्षरण और मुनाफा स्थानांतरण की कार्रवाई रिपोर्ट (बीईपीएस) परियोजना के न्यूनतम मानकों को अमल में लाने के लिये जरूरी बदलाव भी इसमें किये गये हैं।
- अन्य बदलावों के अलावा, इस सहमति पत्र में नवीनतम अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों में सूचना के आदान-प्रदान के लिये मौजूदा प्रावधानों को अद्यतन किया गया है। इस संधि में दोनों पक्षों की सहमति के आधार पर बीईपीएस एक्शन रिपोर्ट के अनुसार कई बदलाव किये गये हैं।
- मंत्रालय की विज्ञप्ति में कहा गया है कि न्यूनतम मानकों के साथ ही इस संधि में दोनों पक्षों के बीच बनी सहमति के अनुरूप जरूरी बदलाव किये गये हैं।

आयकर कानून के तहत:

- आयकर कानून 1961 की धारा 90 के तहत भारत दोहरे कराधान से बचने, कर चोरी रोकने के वास्ते सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिये किसी दूसरे देश के साथ अथवा विशिष्ट अधिकार क्षेत्र वाले भूखंड के साथ समझौता कर सकता है।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारत और ऑस्ट्रेलिया के मध्य पांच समझौतों पर हस्ताक्षर

चर्चा में क्यों?

- भारत और ऑस्ट्रेलिया ने 22 नवंबर 2018 को एग्रीकल्चरल रिसर्च (कृषि शोध) और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में सहयोग और निवेश बढ़ाने के लिए पांच समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं।
- राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने अपनी ऑस्ट्रेलिया यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री स्कॉट मॉरीसन से सिडनी में मुलाकात की. ऑस्ट्रेलिया की यात्रा करने वाले वे पहले भारतीय राष्ट्रपति हैं. वे 21 नवंबर 2018 को सिडनी पहुंचे। अपनी दो देशों की यात्रा के दौरान वे पहले वियतनाम गए और वहां से ऑस्ट्रेलिया पहुंचे।

पांच समझौते

- पहला समझौता अशक्तता क्षेत्र के लिए है। इसके तहत विशेष तौर पर सक्षम लोगों के लिए सेवाओं को बेहतर किया जाएगा।
- दूसरा समझौता दोनों देशों के बीच व्यापार में द्विपक्षीय निवेश बढ़ाने के लिए इंवेस्ट इंडिया और ऑस्ट्रेड के बीच किया गया है।
- तीसरा समझौता केंद्रीय खनन योजना एवं डिजाइन संस्थान, रांची और कॉमनवेल्थ साइंटिफिक एंड रिचर्स ऑर्गेनाइजेशन, कैनबरा के बीच आपसी सहयोग बढ़ाने के लिए किया गया है।
- चौथा समझौता आचार्य एन. जी. रंगा कृषि विश्वविद्यालय गुंटूर और यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया, पर्थ के बीच कृषि शोध में सहयोग बढ़ाने के लिए हुआ है।
- अंतिम समझौता इंद्रप्रस्थ सूचना प्रौद्योगकी संस्थान दिल्ली और क्वींसलैंड प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ब्रिसबेन के बीच संयुक्त पीएचडी के लिए हुआ है।
- समझौता के दौरान ऑस्ट्रेलिया के विदेश मंत्री मराइज पेन और भारत के कौशल विकास एवं उद्यमिता राज्य मंत्री अनंत कुमार हेगड़े मौजूद रहे। राष्ट्रपति कोविंद और प्रधानमंत्री मॉरीसन की मुलाकात के बाद जारी प्रेस रिलीज में भारत की आर्थिक रणनीति पर ऑस्ट्रेलिया की प्रतिक्रिया के बारे में बताया गया है। प्रधानमंत्री मॉरीसन ने कहा की यह रणनीति भारत के साथ हमारे आर्थिक भविष्य का खाका पेश करती है।
- भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है और अगले 20 सालों तक किसी अन्य एक बाजार के मुकाबले यहां ऑस्ट्रेलिया के लिए ढेरों अवसर मौजूद हैं। ऑस्ट्रेलिया के व्यापार मंत्री सिमॉन बर्मिंघम ने कहा की हम व्यापक आर्थिक सहयोग पर काम करेंगे। हम 10 राज्य और 10 क्षेत्रों पर अपना विशेष ध्यान देंगे. हम भारत में अपने व्यापार को विस्तार करने में मदद करेंगे।

ऑस्ट्रेलिया द्वारा अगले एक साल में किए जाने वाले प्रमुख काम:

- ऑस्ट्रेलिया ने अगले एक साल में किए जाने वाले प्रमुख कामों का उल्लेख किया। ऑस्ट्रेड और इंवेस्ट इंडिया के समझौते के तहत दोनों देश खाद्य साझेदारी करेंगे जिससे कृषि-प्रौद्योगिकी और सेवा के क्षेत्र में नए अवसर खुलेंगे। वहीं ऑस्ट्रेलिया-भारत रणनीतिक अनुसंधान कोष 5,00,000 ऑस्ट्रेलियाई डॉलर का अनुदान देगा।

स्रोत: पीआईबी

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने यौन उत्पीड़न के विरुद्ध प्रस्ताव को मंजूरी दी

चर्चा में क्यों?

- संयुक्त राष्ट्र महासभा की तीसरी समिति द्वारा पहली बार यौन उत्पीड़न के खिलाफ एक प्रस्ताव को मंजूरी दी गई है। इस प्रस्ताव में यौन उत्पीड़न के खिलाफ एक आदर्श ढाँचे का प्रस्ताव दिया गया है।
- इस प्रस्ताव के तहत सदस्य राष्ट्रों से यौन उत्पीड़न सहित महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ हिंसा की निंदा करने और ऐसी हिंसा को खत्म करने की नीति अपनाने का आग्रह किया गया है।

मुख्य तथ्य

- इस प्रस्ताव में कहा गया है कि सभी देशों को महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ हिंसा को खत्म करने के संबंध में कड़े कदम उठाने चाहिए।
- महिलाओं को यौन उत्पीड़न से सुरक्षित रखने के लिए किसी भी प्रकार की प्रथा या परंपरा को बीच में नहीं लाना चाहिए।
- यह प्रस्ताव बाध्यकारी नहीं है इसीलिये इसमें सभी सदस्य देशों से महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ यौन उत्पीड़न रोकने, इसे खत्म करने और इसे लेकर होने वाली सभी प्रकार की हिंसा से पीड़ितों की रक्षा करने की अपील की गई है।
- इस प्रस्ताव में सभी महिलाओं और उनके यौन और प्रजनन स्वास्थ्य व प्रजनन अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का भी आग्रह किया गया है।
- सभी डिजिटल कम्पनियों को यौन उत्पीड़न को खत्म करने की दिशा में सकारात्मक उपायों को अपनाने के लिए भी कहा गया है।

महासभा की तीसरी समिति

- संयुक्त राष्ट्र महासभा ऐसे सामाजिक, मानवीय और सांस्कृतिक मामलों को, जिनसे दुनियाभर के लोग प्रभावित हो सकते हैं, जिस समिति को आवंटित करती है, उसे तीसरी समिति कहा जाता है।
- इस तीसरी समिति के कार्य का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा मानवाधिकार से जुड़े मुद्दों पर मानवाधिकार परिषद की रिपोर्ट्स पर फोकस करना है।
- यह समिति महिलाओं की प्रगति, बच्चों क्वे संरक्षण, घरेलू मामलों और शरणार्थियों से होने वाले व्यवहार के मामलों पर भी नजर रखती है।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारत सरकार और एडीबी के मध्य जल एवं स्वच्छता सेवाओं हेतु ऋण समझौते पर हस्ताक्षर

चर्चा में क्यों?

- एशियाई विकास बैंक (एडीबी) और भारत सरकार ने तमिलनाडु राज्य के कम से कम दस शहरों में जलवायु-सुदृढ़ जलापूर्ति, सीवरेज और जल निकासी संबंधी बुनियादी ढांचागत सुविधाओं के विकास से जुड़े 500 मिलियन डॉलर के बहु-किस्त वित्त पोषण की पहली किस्त के रूप में 169 मिलियन डॉलर के ऋण समझौते पर 16 नवम्बर 2018 को नई दिल्ली में हस्ताक्षर किए।
- 'तमिलनाडु शहरी प्रमुख निवेश कार्यक्रम' के लिए ऋण समझौते पर भारत सरकार की ओर से वित्त मंत्रालय के आर्थिक मामलों के विभाग में अपर सचिव (फंड बैंक एवं एडीबी) समीर कुमार खरे और एडीबी की ओर से एडीबी के भारत निवासी मिशन के कंट्री डायरेक्टर केनिची योकोयामा ने हस्ताक्षर किए।

ऋण समझौते की आवश्यकता

- हाल के वर्षों में तमिलनाडु को बार-बार सूखे और अनियमित मानसून का सामना करना पड़ा है, जिस वजह से यहां पर जल की भारी किल्लत होने के साथ-साथ शहरों में बाढ़ की भी नौबत आ गई।
- एडीबी की ओर से मिलने वाले इस सहयोग से अभिनव एवं जलवायु-सुदृढ़ निवेश के साथ-साथ व्यापक संस्थागत सहयोग के जरिए इन जटिल शहरी चुनौतियों से निपटने में मदद मिलेगी।
- एडीबी का कार्यक्रम राज्य के विजन तमिलनाडु 2023 के लिए उसके द्वारा दिए जाने वाले सहयोग का एक हिस्सा है, जिसका उद्देश्य सभी की पहुंच जल एवं स्वच्छता तक सुनिश्चित करना और उच्च कार्य निष्पादन वाले औद्योगिक गलियारों (कॉरिडोर) में विश्वस्तरीय शहरों का विकास करना है।

टिप्पणी

- पहली किस्त वाली ऋण राशि के जरिए चेन्नई, कोयम्बटूर, राजपालयम, तिरुचिरापल्ली, तिरुनेलवेली और वेल्लोर को लक्षित किया जाएगा। जापान सरकार द्वारा बनाए गए एशियाई स्वच्छ ऊर्जा कोष से प्राप्त दो मिलियन डॉलर के अनुदान से सौर ऊर्जा से जुड़ी प्रायोगिक (पायलट) परियोजना का वित्त पोषण किया जाएगा. इसी तरह एडीबी से एक मिलियन डॉलर का तकनीकी सहायता अनुदान भी इस कार्यक्रम के लिए मिलेगा, ताकि क्षमता निर्माण में सहयोग दिया जा सके।

स्रोतः पीआईबी

क्वाड देशों की तीसरी बैठक सिंगापुर में संपन्न

चर्चा में क्यों?

- आसियान सम्मेलन 2018 के दौरान क्वाड देशों-भारत, अमेरिका, जापान तथा ऑस्ट्रेलिया के संयुक्त सचिव स्तर की तीसरी बैठक संपन्न हुई। 'क्वाड' इन चार देशों (भारत, अमेरिका, जापान तथा ऑस्ट्रेलिया) की अनौपचारिक रणनीतिक वार्ता है।
- 13वें आसियान सम्मेलन के दौरान ही क्वाड सम्मेलन का भी आयोजन किया गया था। यह क्वाड सम्मेलन मुख्यतः इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में अवसंरचनात्मक परियोजनाओं एवं समुद्री सुरक्षा योजनाओं पर केंद्रित था।

बैठक के मुख्य बिंदु

- क्वाड देशों की बैठक में चर्चा के प्रमुख विषयों में कनेक्टिविटी, सस्टेनेबल डेवलपमेंट, काउंटर टेररिज्म, नॉन-प्रालिफरेशन एवं मैरीटाइम और साइबर सिक्यूरिटी जैसे क्षेत्रों में सहयोग करना शामिल थे।
- सभी सदस्य देशों ने व्यापक आर्थिक विकास का भी समर्थन किया जिससे क्षेत्र की पूरी क्षमता का उपयोग किया जा सके।
- यह भी कहा गया कि क्वालिटी इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास के लिये तेजी से कार्य किया जाना आवश्यक है। यह अंतरराष्ट्रीय मानकों जैसे - खुलापन, पारदर्शिता, आर्थिक सक्षमता और ऋण स्थिरता पर आधारित होना चाहिए।
- भारत ने क्वाड का सैन्यीकरण किये जाने पर हमेशा से ही एतराज जताया है उसका मानना है कि क्वाड का उपयोग सिर्फ असैनिक/नागरिक मुद्दों के लिये होना चाहिये।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

क्वाड

- जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने चीन के बढ़ते प्रभुत्व के कारण उत्पन्न हो रही भू-राजनैतिक और भू-रणनीतिक चिंताओं के मद्देनजर, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया तथा भारत के नेतृत्वकर्त्ताओं के परामर्श से 2007 में रणीनतिक वार्ता के रूप में 'क्वाड' की शुरुआत की. क्वाड के इस विचार ने आसियान क्षेत्र में एक मिश्रित प्रतिक्रिया को जन्म दिया एवं चीन और रूस खुले तौर पर इसके विरोध में सामने आए।
- हालाँकि 2008 में ऑस्ट्रेलिया द्वारा इस ग्रुप से बाहर आने के कारण यह वार्ता शिथिल पड़ गयी थी लेकिन बाद में वह पुनः इस वार्ता में शामिल हो गया। वर्ष 2017 में इस अनौपचारिक समूह को पुनर्जीवित किया गया ताकि एशिया में चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित किया जा सके।

स्रोतः द हिंदू

यमन में 70 लाख बच्चे भुखमरी से प्रभावितः यूनिसेफ

चर्चा में क्यों?

- संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय बाल आपात कोष (यूनिसेफ) द्वारा हाल ही में यमन में बच्चों की दयनीय हालत पर रिपोर्ट जारी की गई है। यूनिसेफ के अनुसार यमन में 70 लाख से भी अधिक बच्चे गंभीर भुखमरी का सामना कर रहे हैं।

  यूनिसेफ के अनुसार वर्ष 2015 से अब तक छह हजार बच्चे मारे जा चुके हैं या गंभीर रूप से परेशान हैं।

यूनिसेफ रिपोर्ट

- संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार दो करोड़ 22 लाख यमनी नागरिकों को भोजन की सख्त जरूरत है, जिसमें 84 लाख लोगों के गंभीर भुखमरी के शिकार होने की चेतावनी दी गयी है।
- यमन 100 वर्षों के सबसे बड़े अकाल से गुजर रहा है, जिसमें सबसे अधिक इस क्षेत्र के बच्चे प्रभावित हो रहे हैं।
- यूनिसेफ के मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका के क्षेत्रीय निदेशक गीर्ट कैप्लेरे का कहना है कि यमन में भुखमरी के चलते 10,000 से अधिक लोग मारे गए हैं।
- यमन में एक करोड़ 40 लाख से अधिक लोगों में आधे से ज्यादा बच्चे और इसके अतिरिक्त एक लाख बच्चे खाने को लेकर असुरक्षित हैं।
- परिवारों को सामान्य भोजन और बीमारियों से उपचार की खातिर स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है।
- यमन की दो तिहाई (64.5 प्रतिशत) से अधिक जनसंख्या को नहीं पता की वे अगले वक्त का भोजन कर पाएंगे या नहीं।
- यमन लगभग 20 लाख महिलाओं को भूख के कारण बेहद खतरनाक हालत में रहना पड़ रहा है।
- वहीं करीब 11 लाख महिलाएं ऐसी हैं जिन्हें एक वक्त का खाना भी नहीं मिल पा रहा है।

यमन में संकट

- संयुक्त राष्ट्र ने पहले अकाल में 1.1 करोड़ लोगों के प्रभावित होने की बात कही थी लेकिन अब उनके मुताबिक 1.4 करोड़ लोग इस भयंकर अकाल की चपेट में आ सकते हैं।
- यमन में 2015 से भीषण संघर्ष चल रहा है, जिसमें अब तक हजारों लोगों की मौत हो चुकी है और संयुक्त राष्ट्र ने इसे दुनिया का सबसे बदतर मानवीय संकट करार दिया है।

स्रोतः द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारत-जापान ने तुरगा पनबिजली समझौते पर हस्ताक्षर किये

चर्चा में क्यों?

- भारत एवं जापान के प्रतिनिधियों के मध्य हाल ही में 1,817 करोड़ रुपये का पनबिजली समझौता हस्ताक्षरित किया गया। यह समझौता तुरगा पनबिजली परियोजना के लिए किया गया. इस परियोजना के तहत तुरगा पंपडस्टोरेज पनबिजली परियोजना का निर्माण किया जायेगा।
- यह आशा की जा रही है कि तुरगा पनबिजली परियोजना के पूरा के होने के बाद पश्चिम बंगाल में औद्योगिक विकास तथा जीवन-यापन स्तर में सुधार देखने को मिल सकता है।

तुरगा पनबिजली परियोजना के प्रमुख तथ्य

- तुरगा पनबिजली परियोजना समझौते पर भारत सरकार की ओर से केन्द्रीय वित्त मंत्रालय तथा जापान की ओर से जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (जेआईसीए) के मुख्य प्रतिनिधि कात्सुओ मात्सुमोतो ने हस्ताक्षर किये।
- इस परियोजना का उद्देश्य विद्युत् मांग को पूरा करना है।
- इस परियोजना से औद्योगिक गतिविधियों में तेजी आएगी।
- यह माना जा रहा है कि तुरगा पनबिजली परियोजना से पश्चिम बंगाल के स्थानीय क्षेत्रों में बिजली की कमी की समस्या से निजात मिलेगी।

पनबिजली उर्जा क्या होती है?

- बहते हुए या गिरते हुए जल की उर्जा से जो विद्युत उत्पन्न की जाती है उसे पनबिजली अथवा जलविद्युत कहते हैं। वर्ष 2005 में विश्व भर में लगभग 816 गीगावाट इलेक्ट्रिकल जलविद्युत उर्जा उत्पन्न की जाती थी जो कि विश्व की सम्पूर्ण विद्युत उर्जा का लगभग 20 प्रतिशत है। यह बिजली उत्पादन प्रक्रिया प्रदूषण रहित होती है पर्यावरण के अनुकूल होती है।

पनबिजली उर्जा प्रक्रिया

- बाँध के ऊपर एक अग्रताल बनाया जाता है, जहाँ से पानी खुली नहर अथवा नलों द्वारा बिजलीघर तक ले जाया जाता है। यह पानी बिजलीघर में स्थित बड़े बड़े टरबाइनों को चलाता है, जिनसे योजित जनित्रों में विद्युत् शक्ति का जनन होता है। टरबाइन, सीमेंट कंक्रीट के बने ड्राफ्टट्यूब के मुख पर अवस्थित होता है। पानी गाइड वेन में होता हुआ टरबाइन के ब्लेडों को घुमाता है और इस प्रकार अपने निहित ऊर्जा का टरबाइन के चलाने में उपयोग करता है. चलते हुए टरबाइन की यांत्रिक ऊर्जा विद्युत् ऊर्जा में रूपांतरित कर दी जाती है और इस प्रकार जल में निहित ऊर्जा जलविद्युत् का रूप ले लेती है।

भारत और जापान संबंध

- भारत और जापान के बीच 1958 से द्विपक्षीय सम्बन्ध फलीभूत हुए हैं। पिछले कुछ वर्षों में दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग में काफी वृद्धि हुई है। इससे दोनों देशों के सामरिक, आर्थिक तथा वैश्विक सहयोग में भी सुदृढ़ता देखने को मिली है।

स्रोत: पीआईबी

भारत और दक्षिण कोरिया ने पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग को मजबूत बनाने हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

चर्चा में क्यों?

- भारत और दक्षिण कोरिया ने 05 नवम्बर 2018 को नई दिल्ली में पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग को मजबूत बनाने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

मुख्य तथ्य

- भारत ने पर्यटन के क्षेत्र में कोरिया गणराज्य के साथ सम्बंध को मजबूत बनाने के लिए कोरिया गणराज्य के संस्कृति, खेल और पर्यटन मंत्रालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया।
- इस समझौता ज्ञापन पर केन्द्रीय पर्यटन मंत्री के जे एलफॉन्स तथा कोरिया के संस्कृति, पर्यटन और खेल मंत्री दो जोंग ह्वान ने हस्ताक्षर किए।
- इस अवसर पर भारत और कोरिया के पर्यटन मंत्रालय के अधिकारी उपस्थित थे। समझौता ज्ञापन में पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग को मजबूत बनाने की दोनों पक्षों की इच्छा व्यक्त की गई है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

समझौता ज्ञापन से संबंधित मुख्य तथ्य:

- पर्यटन क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाना।
- सूचना तथा पर्यटन से संबंधित डाटा के आदान-प्रदान को बढ़ाना।
- होटलों तथा टूर ऑपरेटरों सहित पर्यटन क्षेत्र के हितधारकों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करना।
- मानव संसाधन विकास में सहयोग के लिए आदान-प्रदान कार्यक्रम प्रारंभ करना।
- पर्यटन तथा आतिथ्य क्षेत्र में निवेश को प्रोत्साहित करना।
- दो तरफा पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए टूर ऑपरेटरों/मीडिया/जनमत बनाने वालों की एक-दूसरे के यहां यात्राओं का आयोजन करना।
- संवर्धन, बाजार गंतव्य विकास तथा प्रबंधन के क्षेत्रों में अनुभवों को साझा करना।
- एक-दूसरे देश में पर्यटन मेलों/प्रदर्शनियों में भागीदारी को प्रोत्साहित करना।
- सुरक्षित, सम्मानित और सतत पर्यटन को प्रोत्साहित करना।
- दक्षिण कोरिया, भारत और पूर्व एशिया के लिए एक अग्रणी पर्यटन बाजार है। दक्षिण कोरिया से वर्ष 2017 में 1,42,383 पर्यटक आए और जनवरी-सितम्बर के दौरान 1,08,901 (अस्थाई आंकड़ा) पर्यटक आए।

स्रोत: पीआईबी

ELITE IAS

भारतीय अर्थव्यवस्था एवं आर्थिक विकास

सस्ता लोन और ब्याज दर में छूट हेतु 'पैसा' पोर्टल का शुभारंभ

चर्चा में क्यों?

- केंद्र सरकार ने 26 नवम्बर 2018 को छोटे कारोबारियों को सस्ता लोन और ब्याज दर में छूट के लिए 'पैसा' पोर्टल का शुभारंभ किया। यह पोर्टल आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय ने शुरू किया है।
- केंद्रीय आवास एवं शहरी कार्य मंत्रालय ने इस पोर्टल का लोर्कापण करने के बाद कहा कि 'पैसा' पोर्टल से लोगों को कारोबार के लिए सस्ता ऋण हासिल करने और ब्याज पर छूट लेने में आसानी होगी।
- यह पोर्टल मंत्रालय द्वारा शहरी स्थानीय निकायों के लिए ऋण सुविधा और नगर नियोजन पर दिनभर चली कार्यशाला के दौरान इस पोर्टल का शुभारंभ किया गया।

'पैसा' पोर्टल:

- यह पोर्टल दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन के तहत लाभार्थियों को बैंक लोन पर ब्याज अनुदान की प्रोसेसिंग के लिए एक केंद्रीयकृत इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफॉर्म है।
- इस वेब प्लेटफॉर्म को इलाहाबाद बैंक ने तैयार किया है। इलाहाबाद बैंक को इसका नोडल बैंक बनाया गया है।
- इस पोर्टल के जरिए योजना के लाभार्थी सीधे सरकार से जुड़ सकेंगे और सेवाओं की आपूर्ति में पारदर्शिता और कुशलता आएगी। इससे छोटे कारोबारियों को समय पर मदद मिल सकेगी।
- वर्ष 2018 के अंत तक सभी राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों की सरकारें इससे जुड़ जाएगीं. इसके अलावा वाणिज्यिक बैंकों, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों और सहकारी बैंकों को भी इससे जोड़ा जाएगा।
- राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन के तहत अभी तक कुल 36258 लाभार्थियों के लिए 51,177 लाख रुपए का लोन स्वीकृत किया गया है। इसमें 16577 महिला लाभार्थी भी शामिल है। लाभार्थियों को अभी तक ब्याज में 145 लाख रुपए की राहत भी दी जा चुकी है।

दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन:

- केंद्र सरकार ने 26 नवम्बर 2018 को छोटे कारोबारियों को सस्ता लोन और ब्याज दर में छूट के लिए 'पैसा' पोर्टल का शुभारंभ किया। यह पोर्टल आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय ने शुरू किया है।
- केंद्रीय आवास एवं शहरी कार्य मंत्रालय ने इस पोर्टल का लोर्कापण करने के बाद कहा कि 'पैसा' पोर्टल से लोगों को कारोबार के लिए सस्ता ऋण हासिल करने और ब्याज पर छूट लेने में आसानी होगी।
- यह पोर्टल मंत्रालय द्वारा शहरी स्थानीय निकायों के लिए ऋण सुविधा और नगर नियोजन पर दिनभर चली कार्यशाला के दौरान इस पोर्टल का शुभारंभ किया गया।

स्रोत: इकोनॉमिक टाइम्स

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

ईज ऑफ डूइंग बिजनेस ग्रैंड चैलेंज लॉन्च

चर्चा में क्यों?

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों का उपयोग कर 'कारोबार में सुगमता' से जुड़ी सात चिन्हित समस्याओं को सुलझाने के लिए 'ग्रैंड चैलेंज' का शुभारंभ किया है।

इस चैलेंज का उद्देश्य

- इस चौलेंज का उद्देश्य युवा भारतीयों, स्टार्टअप और अन्य निजी उद्यमियों की क्षमताओं का दोहन करना है, ताकि वर्तमान अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग कर जटिल समस्याओं का समाधान निकाला जा सके।
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 20 नवम्बर 2018 को नई दिल्ली स्थित अपने आवास पर आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान भारतीय और विदेशी कंपनियों के चुनिंदा मुख्य कार्यकारी अधिकारियों (सीईओ) के साथ संवाद किया।
- प्रधानमंत्री ने भारत में कारोबारी माहौल को निरंतर बेहतर करने के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों से मुख्य कार्यकारी अधिकारियों को अवगत कराया।

ईज ऑफ डूइंग बिजनेस ग्रैंड चैलेंज

- इस चौलेंज का उद्देश्य युवा भारतीयों, स्टार्टअप्स तथा निजी उद्योगों की संभावित क्षमता का उपयोग करना है।
- इसके चौलेंज में कुछ एक निश्चित समस्याओं के लिए आधुनिक तकनीक द्वारा समाधान ढूंढें जायेंगे।
- यह सरकार द्वारा भारत को व्यापार करने के लिए एक सुगम स्थल बनाने की योजना की हिस्सा है।
- देश में व्यापार करने के लिए माहौल को बेहतर करने के लिए सरकार काफी समय से प्रयास कर रही है।
- इस चौलेंज में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, इन्टरनेट ऑफ थिंग्स, बिग डाटा एनालिटिक्स, ब्लॉकचेन जैसी नवीनतम टेक्नोलॉजी के द्वारा सरकारी प्रक्रिया में सुधार किया जायेगा।
- इस ग्रैंड चैलेंज का प्लेटफार्म स्टार्टअप इंडिया पोर्टल पर होगा।

पृष्ठभूमि

- विश्व बैंक द्वारा 31 अक्टूबर, 2018 को जारी 'कारोबार में सुगमता' रिपोर्ट (डीबीआर, 2019) में भारत 23 पायदानों की ऊंची छलांग लगाकर वर्ष 2017 के 100वें पायदान से ऊपर चढ़कर 77वें पायदान पर पहुंच गया है।
- विश्व बैंक की इस रिपोर्ट में 190 देशों में कारोबारी माहौल का आकलन किया गया है। सरकार द्वारा इस दिशा में किए जा रहे निरंतर प्रयासों के परिणामस्वरूप भारत 'कारोबार में सुगमता' सूचकांक में पिछले दो वर्षों में 53 पायदान और पिछले चार वर्षों (2014-2018) में 65 पायदान ऊपर चढ़ चुका है।

स्रोत: इकोनॉमिक टाइम्स

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

झारखंड सरकार 28 लाख किसानों को मुफ्त में देगी मोबाइल फोन

चर्चा में क्यों?

- झारखंड राज्य के 28 लाख किसानों को बिचौलियों से बचाने और नई जानकारियों से लैस करने के मकसद से सरकार अगले तीन वर्षों (2019/2021) में इन सभी को मुफ्त मोबाइल फोन देगी।
- मुख्यमंत्री ने 29 नवम्बर 2018 को रांची में अंतरराष्ट्रीय कृषि और खाद्य शिखर सम्मेलन का उद्घाटन किया। उन्होंने इस अवसर पर कहा की राज्य के किसानों को बिचौलियों से मुक्ति प्रदान करने, बाजार में पल-पल चीजों के भाव से अवगत कराने और समय के अनुरूप अपने फसल की उत्पादन क्षमता बढ़ाने के उद्देश्य से राज्य के 28 लाख किसानों को सरकार निःशुल्क मोबाइल फोन प्रदान करेगी।

मुख्य तथ्यः

- राज्य सरकार कृषि कार्य हेतु मई 2019 तक किसानों के लिए अलग बिजली फीडर की व्यवस्था करेगी, जहां से छह घंटे कृषि कार्य के लिए बिजली की निर्बाध आपूर्ति होगी।
- सरकार की उद्देश्य किसानों के लिए अलग फीडर, उद्योग के लिए अलग फीडर और आम जनता के लिए अलग फीडर लगाने की है, जिस पर कार्य हो रहा है। दिसंबर 2018 तक सुदूरवर्ती सभी गांवों तक बिजली पहुंचा दी जाएगी।
- किसानों को मध्यस्थता को दूर रखने के लिए मोबाइल फोन दिए जाएंगे और किसानों को बाजार के बारे में अधिक जानकारी रखने में भी मदद मिलेगी।
- झारखंड सरकार ने बेहतर फूड प्रोसेसिंग पॉलिसी बनायी है, इससे एक ओर जहां किसान और उपभोक्ता जुड़ेंगे. वहीं दूसरी ओर रोजगार के अवसरों का सृजन होगा।
- इसके अतिरिक्त, अगर कोई किसान कृषि लोन का भुगतान अगर एक वर्ष के अंदर कर देता है तो उस किसान को ब्याज देने की जरूरत नहीं, उस ब्याज का भुगतान राज्य सरकार करेगी।

अन्य जानकारीः

- कृषि और फूड प्रोसेसिंग उद्योग के क्षेत्र में झारखंड में निवेश बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित ग्लोबल समिट में किसान प्रतिनिधि, कृषि विशेषज्ञ, फूड प्रोसेसिंग व दुग्ध उत्पादन क्षेत्र से जुड़ी कंपनियों के प्रतिनिधि सहित कई विदेशी प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। झारखंड देश का दूसरा राज्य है जो इतने बड़े स्तर पर ग्लोबल एग्रीकल्चर और फूड समिट का आयोजन कर रहा है. इससे पहले केवल गुजरात में ही ऐसा आयोजन हुआ था।

स्रोतः इंडियन एक्सप्रेस

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

केंद्र सरकार और एशियाई विकास बैंक ने बिहार में राजमार्गों के सुधार हेतु ऋण समझौते पर हस्ताक्षर किये

चर्चा में क्यों?

- केंद्र सरकार और एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने बिहार में लगभग 230 किलोमीटर लंबे राजमार्गों को चौड़ा करने और उनमें सुधार के उद्देश्य से वित्तीय सहायता देने के लिए 26 नवम्बर 2018 को नई दिल्ली में 200 मिलियन डॉलर के ऋण समझौते पर हस्ताक्षर किये।

मुख्य तथ्य

- इन राजमार्गों को प्रत्येक मौसम की मार झेल सकने योग्य और सड़क सुरक्षा को ध्यान में रखकर बनाया जाएगा। यह कर्ज बिहार सरकार द्वारा सभी राजकीय राजमार्गों को दो लेन करने में मदद करेगा और इससे संपर्क व्यवस्था में सुधार होगा।
- बिहार राज्य राजमार्ग III परियोजना (बीएसएचपी-III) के लिए ऋण समझौते पर भारत सरकार की ओर से वित्त मंत्रालय के आर्थिक मामलों के विभाग में अपर-सचिव (फंड बैंक और एडीबी) समीर कुमार खरे और एडीबी की ओर से एडीबी के इंडिया रेजीडेंट मिशन के प्रभारी अधिकारी राजीव पी.सिंह ने हस्ताक्षर किये।
- परियोजना समझौते पर बिहार सरकार के रेजीडेंट कमीश्नर विपिन कुमार और बिहार राज्य सड़क विकास निगम लिमिटेड के मुख्य महाप्रबंधक चन्द्र शेखर ने हस्ताक्षर किये।

राजमार्गों में सुधारः

- इस ऋण से राज्य के सभी राजमार्गों में सुधार के बिहार सरकार के प्रयासों को पूरा करने में मदद मिलेगी, जिससे बेहतर सम्पर्क के लिए सुधार और सड़क सुरक्षा के साथ कम से कम दो लेन वाली सड़कों के मानक को पूरा किया जा सकेगा।
- नये ऋण से बिहार में सड़क क्षेत्र के विकास में एडीबी का सहयोग जारी रहेगा. परियोजना के अंतर्गत सुधरी हुई सड़कों से वाहनों की संचालन लागत और समय बचाने, वाहनों से उत्सर्जन कम करने और सड़क सुरक्षा में सुधार हो सकेगा।
- परियोजना के तहत एक राज्य स्तर के सड़क अनुसंधान संस्थान की स्थापना की जाएगी, ताकि सड़क एजेंसी कर्मचारियों की तकनीकी और प्रबंध क्षमता में सुधार लाया जा सके।

एडीबी 2008 से अब तक बिहार में:

- एडीबी 2008 से अब तक बिहार में करीब 1,453 किलोमीटर लंबे राजमार्ग के सुधार और पटना के नजदीक गंगा नदी पर एक नये पुल के निर्माण के लिए 1.43 अरब डॉलर के चार ऋण प्रदान कर चुका है।
- एडीबी बोर्ड द्वारा अक्टूबर 2018 में मंजूर बीएसएचपी-III परियोजना में राज्य राजमार्गों में सुधार कर उन्हें सड़क सुरक्षा के साथ दो लेन वाले राजमार्गों में बदलना और पुलियाओं और पुलों का पुनर्निर्माण, उन्हें चौड़ा करना और मजबूत बनाना शामिल है।
- इस परियोजना से सड़क डिजाइन और रखरखाव के लिए राज्य की संस्थागत क्षमता का निर्माण होगा और राज्य के सड़क उपक्षेत्र का रखरखाव हो सकेगा और उसमें उपयुक्त नई प्रौद्योगिकी को शामिल किया जा सकेगा।

स्रोतः पीआईबी

संयुक्त राष्ट्र ने वैश्विक सतत शहर-2025 कार्यक्रम हेतु नोएडा को चयनित किया

चर्चा में क्यों?

- संयुक्त राष्ट्र ने 25 नवंबर 2018 को उत्तर प्रदेश के नोएडा और ग्रेटर नोएडा का चयन वैश्विक सतत शहर 2025 पहल में हिस्सा लेने के लिए किया। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से सटे गौतमबुद्धनगर जिले के शहरों नोएडा और ग्रेटर नोएडा का चयन 'यूनिवर्सिटी सिटी'' श्रेणी में भारत से एकमात्र स्थान के तौर पर आमंत्रित किया गया है।
- वैश्विक सतत शहरों के निर्माण हेतु सितंबर 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सतत विकास लक्ष्य-2030 कार्यक्रम को अपनाया था। इसमें 17 लक्ष्य निर्धारित किये गये थे जिन्हें वैश्विक लक्ष्यों के नाम से जाना जांता है। इन लक्ष्यों का उद्देश्य गरीबी के सभी रूपों की पूरे विश्व से समाप्ति तथा सभी आयु के लोगों में स्वास्थ्य सुरक्षा और स्वस्थ जीवन को बढ़ावा देना था।

संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्य (Global Development Goals)

1. गरीबी के सभी रूपों की पूरे विश्व से समाप्ति।
2. भूख की समाप्ति, खाद्य सुरक्षा और बेहतर पोषण और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा।
3. सभी आयु के लोगों में स्वास्थ्य सुरक्षा और स्वस्थ जीवन को बढ़ावा।
4. समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्ता युक्त शिक्षा सुनिश्चित करने के साथ ही सभी को सीखने का अवसर देना।
5. लैंगिक समानता प्राप्त करने के साथ ही महिलाओं और लड़कियों को सशक्त करना।
6. सभी के लिए स्वच्छता और पानी के सतत प्रबंधन की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
7. सस्ती, विश्वसनीय, टिकाऊ और आधुनिक ऊर्जा तक पहुंच सुनिश्चित करना।
8. सभी के लिए निरंतर समावेशी और सतत आर्थिक विकास, पूर्ण और उत्पादक रोजगार, और बेहतर कार्य को बढ़ावा देना।
9. लचीले बुनियादी ढांचे, समावेशी और सतत औद्योगीकरण को बढ़ावा।
10. देशों के बीच और भीतर असमानता को कम करना।
11. सुरक्षित, लचीले और टिकाऊ शहर और मानव बस्तियों का निर्माण।
12. स्थायी खपत और उत्पादन पैटर्न को सुनिश्चित करना।
13. जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई करना।
14. स्थायी सतत विकास के लिए महासागरों, समुद्र और समुद्री संसाधनों का संरक्षण और उपयोग।
15. सतत उपयोग को बढ़ावा देने वाले स्थलीय पारिस्थितिकीय प्रणालियों, सुरक्षित जंगलों, भूमि क्षरण और जैव विविधता के बढ़ते नुकसान को रोकने का प्रयास करना।
16. सतत विकास के लिए शांतिपूर्ण और समावेशी समितियों को बढ़ावा देने के साथ ही सभी स्तरों पर इन्हें प्रभावी, जवाबदेही बनना ताकि सभी के लिए न्याय सुनिश्चित हो सके।
17. सतत विकास के लिए वैश्विक भागीदारी को पुनर्जीवित करने के अतिरिक्ति कार्यान्वयन के साधनों को मजबूत बनाना।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

सौभाग्य योजना के अंतर्गत 8 राज्यों ने 100 प्रतिशत घरों में विद्युतीकरण का लक्ष्य हासिल किया

चर्चा में क्यों?

- सौभाग्य योजना के अंतर्गत 8 राज्यों ने 100 प्रतिशत घरों में विद्युतीकरण का लक्ष्य हासिल किया हैं. इसके साथ, देश में अब कुल 15 राज्यों में 100 प्रतिशत घरों का विद्युतीकरण हो गया है।
- ये आठ राज्य मध्यप्रदेश,त्रिपुरा, बिहार, जम्मू और कश्मीर, मिजोरम, सिक्किम, तेलंगाना तथा पश्चिम बंगाल हैं. सौभाग्य योजना के अंतर्गत अब तक 2.1 करोड़ कनेक्शन जारी किये गये हैं।

विद्युतीकरण से वंचित:

- महाराष्ट्र, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, अरूणाचल प्रदेश और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में विद्युतीकरण से वंचित घर कम संख्या में बचे हैं और उम्मीद है कि सभी घरों का विद्युतीकरण हो जायेगा।
- विदयुतीकरण की वर्तमान गति के मुताबिक देश के सभी 100 प्रतिशत घरों के विद्युतीकरण का लक्ष्य 31 दिसम्बर 2018 तक पूरा हो जायेगा।
- 100 प्रतिशत घरों के विद्युतीकरण वाले राज्यों में कोई घर वंचित न रह जाए यह सुनिश्चित करने के लिए राज्यों से अनुरोध किया गया है कि वे इस बारे में सभी क्षेत्रों में प्रचार अभियान चलायें ताकि किसी वंचित हुए घर को सौभाग्य योजना के अंतर्गत विद्युत लाभ मिल सके।

24×7 बिजली देने का रिकॉर्ड:

- देश में 100 प्रतिशत घरों के विद्युतीकरण से सभी के लिए 24×7 बिजली देने का रिकॉर्ड कायम होगा. सरकार 31 मार्च 2019 तक सभी के लिए 24×7 बिजली पहुंच सुनिश्चित करने के लिए संकल्पबद्ध है।

विद्युतीकरण से होने वाले लाभ:

- घरों के विद्युतीकरण से लोगों के जीवन में नई रोशनी आई है। विद्युतीकरण का दैनिक जीवन के सभी पक्षों विशेषकर महिलाओं और बच्चों की गुणवत्ता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- विद्युत नेटवर्क के विस्तार से शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार जैसी आवश्यक सेवाओं की डिलीवरी में सुधार होगा और इससे आर्थिक गतिविधियों बढ़ेगीं जिसके परिणाम स्वरूप रोजगार सृजन होगा तथा आय में वृद्धि होगी और गरीबी उपशमन होगा।

सौभाग्य योजना के तहत पुरस्कार योजना:

- विभिन्न बिजली वितरण कंपनियों/ राज्य के विद्युत विभागों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के लिए 300 करोड़ रूपये की पुरस्कार योजना प्रारंभ की गई है। 100 प्रतिशत घरों के विद्युतीकरण के कार्य को पूरा करने के लिए विद्युत वितरण कंपनियां/ विद्युत विभाग को कर्मचारियों के लिए 50 लाख का पुरस्कार और वितरण संरचना पर खर्च के लिए 100 करोड़ रूपये का अनुदान दिया जाएगा। पुरस्कार के उद्देश्य से राज्य को तीन श्रेणियों में बांटा गया है और इन सभी श्रेणियों में पुरस्कार दिए जाएंगे।

पुरस्कार तीन श्रेणियों में:

- डिस्कॉम/विशेष दर्जा वाले राज्यों (7 पूर्वोत्तर राज्य सिक्किम, जम्मू और कश्मीर तथा उत्तराखंड) के विद्युत विभाग को दिए जाएंगे।
- डिस्कॉम/विशेष दर्जा के अलावा अन्य राज्यों (बिहार,छत्तीसगढ़, झारखंड, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, राजस्थान, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल) जिनमें विद्युतीकरण से वंचित पांच लाख से अधिक घर है।
- डिस्कॉम/विशेष दर्जा वाले राज्यों के अलावा अन्य राज्य जहां पांच लाख से कम घर विद्युतीकृत नहीं हैं।
- 31 दिसम्बर 2018 तक 100 प्रतिशत घरों के विद्युतीकरण का काम करने वाले राज्यों को सौभाग्य के अंतर्गत स्वीकृत परियोजना लागत का 15 प्रतिशत (विशेष श्रेणी के राज्यों के लिए 5 प्रतिशत) अतिरिक्त अनुदान मिलेगा।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

सौभाग्य योजना क्या है?

- केंद्र सरकार ने सितंबर 2017 में 'प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना' (सौभाग्य) लांच किया था. इसका उद्देश्य 31 मार्च 2019 तक देश में सम्पूर्ण रूप से घरों के विद्युतीकरण लक्ष्य को हासिल करना था। इस योजना के लांच होने के बाद से राज्य के विद्युत विभागों तथा विद्युत वितरण कम्पनियों के सहयोग से 1.65 करोड़ घरों का विद्युतीकरण हुआ है।
- जिसमें 16,000 करोड़ रुपये का अनुमानित खर्च आएगा और इसमें से 25 प्रतिशत को इस परियोजना के लिए तैनात किए जाने वाले मानव संसाधन एवं उनके पारिश्रमिक पर खर्च किए जाने का अनुमान है।

स्रोत: पीआईबी

लॉजिक्स इंडिया 2019 का प्रतीक चिन्ह तथा ब्रोशर लॉन्च

चर्चा में क्यों?

- केन्द्रीय वाणिज्य एवं उद्योग और नागरिक उड्डयन मंत्री श्री सुरेश प्रभु ने 28 नवंबर 2018 को नई दिल्ली में लॉजिक्स इंडिया 2019 के प्रतीक चिन्ह (लोगो) के साथ-साथ उसकी विवरण पुस्तिका (ब्रोशर) भी जारी की।
- लॉजिक्स इंडिया उन वस्तुओं का दक्ष एवं किफायती प्रवाह सुनिश्चित करने में मददगार साबित होगी जिन पर अन्य वाणिज्यिक क्षेत्र निर्भर रहते हैं। लॉजिक्स इंडिया कारगर या प्रभावकारी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार लॉजिस्टिक्स सुनिश्चित करेगी।

मुख्य तथ्य

- भारत विश्व बैंक के 'लॉजिस्टिक्स प्रदर्शन सूचकांक 2018' में 44वें पायदान पर है।
- आर्थिक सर्वेक्षण 2017-18 के अनुसार भारत के लॉजिस्टिक्स उद्योग का आकार अगले दो वर्षों में लगभग 160 अरब अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 215 अरब अमेरिकी डॉलर के उच्च स्तर पर पहुंच जाने की संभावना है।
- लॉजिस्टिक्स क्षेत्र 22 मिलियन से भी अधिक लोगों को रोजगार मुहैया कराता है और अगले पांच वर्षों में इस सेक्टर के 10.5 प्रतिशत की दर से विकसित होने की आशा है।
- आर्थिक सर्वेक्षण 2017-18 के अनुसार भारतीय लॉजिस्टिक्स उद्योग का मूल्य लगभग 160 अरब है, यह अगले दो वर्षों में 215 अरब डॉलर के मूल्य वाले अमेरिकी लॉजिस्टिक्स उद्योग को पछाड़ सकता है।
- भारतीय लॉजिस्टिक्स सेक्टर से 22 मिलियन लोगों को रोजगार प्राप्त होता है, यह सेक्टर अगले पांच वर्षों में 10.5% की दर से बढ़ सकता है। लॉजिस्टिक्स सेक्टर भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की रीढ़ है।

लॉजिक्स इंडिया 2019

- लॉजिक्स इंडिया 2019 का आयोजन 31 जनवरी से लेकर 2 फरवरी, 2019 तक नई दिल्ली में किया जाएगा।
- यह मेगा लॉजिस्टिक्स बैठक भारतीय निर्यात संगठनों के महासंघ (फियो) द्वारा आयोजित की जाएगी।
- इसका आयोजन लॉजिस्टिक्स लागत और कम करने के साथ-साथ भारत के वैश्विक व्यापार की परिचालन दक्षता बढ़ाने की प्रमुख पहल के रूप में किया जाएगा।
- इसमें 20 से भी अधिक देश अपने-अपने शिष्टमंडल इस बैठक के लिए भेजेंगे, ताकि भारत के साथ लॉजिस्टिक्स से जुड़ी साझेदारियां करने की संभावनाएं तलाशी जा सकें।

स्रोत: पीआईबी

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

एनपीसीसी को मिनीरत्न कंपनी का दर्जा प्रदान किया गया

चर्चा में क्यों?

- नेशनल प्रोजैक्ट्स कंसट्रक्शन कॉरपोरेशन लिमिटेड (एनपीसीसी) को भारत सरकार द्वारा मिनीरत्न श्रेणी-1 का सम्मानित दर्जा प्रदान किया गया है। एनपीसीसी को मिनीरत्न का दर्जा हासिल होने से निदेशक मंडल की शक्तियों में वृद्धि होगी जिससे कंपनी तेजी से निर्णय ले सकेगी।
- एनपीसीसी, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में अनुसूची 'बी' का एक केन्द्रीय लोक-उद्यम है जिसे हाल ही में आईएसओ 9001:2015 प्रमाणपत्र प्राप्त हुआ है। पिछले छह वर्षो से इसका नेटवर्थ सकारात्मक है और इसकी महत्वाकांक्षी व्यापार-योजना के तहत इसे प्राप्त कार्य-आदेशों की स्थिति बढकर 11833 करोड़ रुपये हो गई है।

एनपीसीसी

- नेशनल प्रोजैक्ट्स कंस्ट्रक्शन कारपोरेशन लिमिटेड (एनपीसीसी) की स्थापना वर्ष 1957 में की गई।
- राष्ट्रीय महत्व की परियोजनाओं के निर्माण के लिए आवश्यक जनशक्ति एवं तकनीक उपलब्ध कराना और निजी क्षेत्र के लिए मूल्य नियंत्रक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन करना इसका उद्देश्य रहा है।
- विगत 55 वर्षो के दौरान यह निगम राष्ट्रीय महत्व की 130 से अधिक परियोजनाओं को संकल्पना से संचालन स्तर तक पूर्ण करने में सफलतापूर्वक जुड़ी रही है।
- इनमें से कुछ देश के दूरदराज के जोखिम भरे स्थानों पर स्थित हैं।
- कंपनी ने न केवल अपने ही देश में सामाजिक-आर्थिक विकास से सम्बन्धित परियोजनाओं को पूर्ण किया है अपितु विदेशों में भी कई परियोजनाओं को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया है।

महारत्न कंपनी का अर्थ एवं पात्रता शर्तें

- सरकार द्वारा इस टाइटल की स्थापना 2009 में की गयी थी जिसका उद्देश्य बड़े सार्वजनिक क्षेत्र के केंद्रीय उपक्रमों (C-P-S-E) को अपने कारोबार का विस्तार करने तथा विश्व की बड़ी कंपनी के रूप में उभरने में समर्थ बनाना है।
- कंपनी को 'नवरत्न' का दर्जा प्राप्त होना चाहिए।
- सेबी के नियामकों के तहत न्यूनतम निर्धारित सार्वजनिक हिस्सेदारी के साथ भारतीय शेयर बाजार में सूचीबद्ध होना चाहिए।
- पिछले तीन सालों के दौरान औसत सालाना शुद्ध संपत्ति 15,000 रुपये करोड़ से ज्यादा होनी चाहिए।
- पिछले तीन सालों के दौरान औसत सालाना कारोबार 25,000 करोड़ रुपये से ज्यादा होना चाहिए।
- वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण उपस्थिति/ अंतर्राष्ट्रीय ऑपरेशन्स होने चाहिए अर्थात् देश के आलावा कंपनी का कारोबार विदेश में भी होना चाहिए।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारत की 8 महारत्न कम्पनियां हैं:

- भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (भेल), कोल इंडिया लिमिटेड, गैस अथोरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (गेल), इंडियन ऑयल कारपोरेशन लिमिटेड, एनटीपीसी लिमिटेड, तेल एवं प्राकृतिक गैस कारपोरेशन लिमिटेड, भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड तथा भारत पेट्रोलियम कारपोरेशन लिमिटेड।

नवरत्न कंपनी का अर्थ एवं पात्रता शर्तें

- नवरत्न को वर्ष 1997 में सरकार द्वारा आरंभ किया गया था। इसमें उन सार्वजनिक कंपनियों को शामिल किया गया जिनमे वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता है। नवरत्न कंपनी का दर्जा देकर इन्हें अधिक स्वायत्तता प्रदान की गयी ताकि बाजार में देश की कम्पनियों को वैश्विक दर्जा प्राप्त हो सके। इस समय "नवरत्न" का दर्जा प्राप्त सार्वजनिक उपक्रमों की संख्या 23 हो गयी है।
- किसी कंपनी को नवरत्न का दर्जा प्राप्त करने के लिए उसे पहले मिनीरत्न का दर्जा प्राप्त होना चाहिए।
- इसके निदेशक मंडल के चार स्वतंत्र निदेशक होना आवश्यक है।
- पिछले तीन वर्षों के दौरान निम्नलिखित 6 दक्षता मानकों पर अपने प्रदर्शन के आधार पर कंपनी को कुल 100 अंकों में से 60 या उससे अधिक का कंपोजिट स्कोर प्राप्त हुआ हो- शुद्ध मूल्य पर शुद्ध लाभ, कुल उत्पादन/सेवा लागत पर मानव श्रम लागत, नियोजित पूंजी पर सकल मार्जिन, टर्नओवर पर सकल लाभ, प्रति शेयर आय, शुद्ध मूल्य पर शुद्ध लाभ पर आधारित अंतर-क्षेत्रीय तुलना।

भारत की 16 नवरत्न कम्पनियां हैं:

- भारत इलेक्ट्रानिक्स लिमिटेड, भारतीय कंटेनर निगम लिमिटेड, इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड, भारतीय पेट्रोलियम निगम लिमिटेड, महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड, राष्ट्रीय अल्युमीनियम कं. लिमिटेड, राष्ट्रीय भवन निर्माण निगम लिमिटेड, एनएमडीसी लिमिटेड, नेवेली लिग्नाइट कॉर्पो. लिमिटेड, ऑयल इंडिया लिमिटेड, पावर फाइनेंस कॉर्पो. लिमिटेड, पावर ग्रिड कॉर्पो. ऑफ इंडिया लिमिटेड, राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, ग्रामीण विद्युतीकरण निगम लिमिटेड तथा भारतीय नौवहन निगम लिमिटेड।

मिनी रत्न कंपनी का अर्थ एवं पात्रता शर्तें

- इसे दो वर्गों में बांटा गया है. मिनीरत्न कंपनी वर्ग-1 बनने के लिए कंपनी के पास पिछले तीन वर्षों से निरंतरता लाभ कमाया होना चाहिये तथा तीन साल में एक बार 30 करोड़ का शुद्ध लाभ अर्जित किया जाना चाहिए. मिनीरत्न वर्ग- 2 के लिए कंपनी द्वारा पिछले तीन साल से लगातार लाभ कमाया हो और उसकी नेट वर्थ सकारात्मक होनी चाहिए। दोनों वर्गों में कुल 75 कम्पनियां शामिल हैं।

स्रोत: बिजनेस स्टैंडर्ड

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

केन्द्रीय वाणिज्य मंत्री ने 'औद्योगिक पार्क रेटिंग प्रणाली' पर रिपोर्ट जारी की

चर्चा में क्यों?

- केन्द्रीय वाणिज्य मंत्री सुरेश प्रभु ने 19 नवंबर 2018 को 'औद्योगिक पार्क रेटिंग प्रणाली' पर एक रिपोर्ट जारी की. रिपोर्ट वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग (डीआईपीपी) द्वारा 'औद्योगिक पार्क रेटिंग प्रणाली' पर तैयार की गई।
- इस अवसर पर वाणिज्य मंत्री सुरेश प्रभु ने कहा कि विनिर्माण क्षेत्र भी भारत के तेज विकास वाले क्षेत्र (सेक्टर) के रूप में उभर कर सामने आया है और यह विश्व बैंक के 'कारोबार में सुगमता' सूचकांक (ईओडीबी-2019) में 23 पायदान ऊपर चढ़ गया है।

'औद्योगिक पार्क रेटिंग प्रणाली' से संबंधित मुख्य तथ्य:

- 'कारोबार में सुगमता' सूचकांक' के शीर्ष 50 देशों में भारत को भी शुमार करने के उद्देश्य से मंत्रालय ने विभिन्न राज्यों और 3354 औद्योगिक क्लस्टरों में उपलब्ध बुनियादी ढांचागत सुविधाओं के अध्ययन के लिए ही यह कवायद की है, ताकि औद्योगिक पार्कों में बुनियादी ढांचागत सुविधाओं की गुणवत्ता का आकलन किया जा सके।
- यह नीति निर्माताओं और निवेशकों के लिए एक उपयोगी टूल अथवा साधन होगा। सिर्फ एक बटन को क्लिक करके इसका उपयोग किया जा सकेगा।
- यह प्रणाली 3000 पार्क डेटाबेस पर हैं और औद्योगिक पार्कों की रेटिंग इन 4 बिंदुओं अथवा पैमानों पर की गई है। यह चार पैमाना आंतरिक बुनियादी ढांचा, बाह्य बुनियादी ढांचा, कारोबारी सेवाएं व सुविधाएं तथा परिवेश और सुरक्षा प्रबंधन हैं।
- संसाधनों का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करने और विनिर्माण क्षेत्र की दक्षता बढ़ाने के लिए डीआईपीपी ने मई 2017 में औद्योगिक सूचना प्रणाली (आईआईएस) लांच की थी, जो देश भर में फैले औद्योगिक क्षेत्रों और क्लस्टरों के लिए जीआईएस आधारित डेटाबेस है।
- यह पोर्टल कच्चे माल यथा कृषि, बागवानी, खनिजों एवं प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता, महत्वपूर्ण लॉजिस्टिक्स केन्द्रों से दूरी, भू-भाग की परतों और शहरी बुनियादी अवसंरचना सहित समस्त औद्योगिक सूचनाओं की नि:शुल्क एवं आसान पहुंच वाला एकल स्थल केन्द्र है।
- पिछले एक साल के दौरान राज्य सरकारों एवं औद्योगिक विकास निगमों ने सक्रियतापूर्वक इस पोर्टल का उपयोग किया है और उपर्युक्त पैमानों पर इनके आकलन के लिए 200 से भी अधिक पार्कों को नामांकित किया है।
- आईपीआरएस पर हर वर्ष अमल करने का प्रस्ताव है, जिसके तहत देश भर में फैले पार्कों को कवर किया जाएगा। इसका दायरा बढ़ाया जाएगा और इसके साथ ही इसका अद्यतन भी किया जाएगा ताकि गुणात्मक आकलन से संबंधित व्यापक जानकारियों और विभिन्न तकनीकी उपायों को इसमें समाहित किया जा सके। इतना ही नहीं, इसका विकास एक ऐसे साधन के रूप में किया जाएगा जिससे नीति निर्माताओं एवं निवेशकों दोनों को ही मांग एवं आवश्यकता आधारित महत्वपूर्ण उपाय करने में मदद मिलेगी

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

विश्व बैंक Doing Business Report (DBR, 2019)

चर्चा में क्यों?

- विश्व बैंक ने 2019 का Doing Business Report (DBR, 2019) निर्गत कर दिया है। इस रिपोर्ट में 190 अर्थव्यवस्थाओं को रैंकिंग दी गई है।

भारत का प्रदर्शन

- इस रिपोर्ट के अनुसार भारत पिछले वर्ष की तुलना में 23 स्थान आगे बढ़कर 77वें रैंक पर पहुँच गया है।
- रिपोर्ट के अनुसार चीन, जिबूती (Djibouti) और अजरबैजान जैसी पहले की तुलना में सुधरी हुई 10 शीर्षस्थ अर्थव्यवस्थाओं में भारत का नाम आया है।
- भारत में व्यवसाय संचालन की सरलता में यह सुधार इसलिए हुआ है कि यहाँ ऐसे कई सुधार हुए हैं जिससे व्यवसायियों को आसानी से निर्माण के लिए (construction permits) अनुमति मिल जाती है। साथ ही में सरलतापूर्वक वे कर जमा कर सकते हैं और सीमा-पार व्यापार भी कर सकते हैं।

सरकार द्वारा किये गए सुधार

- भारत में कई आवेदन प्रपत्रों को एक प्रपत्र में बदल दिया गया है।
- निर्माण कार्य के लिए अनुमति की प्रणाली भी सुचारू कर दी गई है। ऐसी अनुमति का दाम भी पहले से घटा दिया गया है।
- सरकार ने insolvency and bankruptcy code में भी सुधार किया है।
- भारत में कर संरचना पहले जटिल थी परन्तु अब उसे सरल बना दिया गया है।
- राष्ट्रीय व्यापार सुविधा कार्य योजना 2017-2020 (National Trade Facilitation Action Plan) के अधीन किये गये उपायों के कारण सीमा-पार व्यापार पहले से अधिक कारगर हो गया है।

वैश्विक प्रदर्शन

- रैंकिंग में जो 5 देश सबसे ऊपर हैं, वे हैं - न्यूजीलैंड, सिंगापुर, डेनमार्क, हांगकांग और कोरिया।
- अमेरिका पिछले साल 6वें स्थान था, इस बार 8वें स्थान पर आ गया है।
- रिपोर्ट के अनुसार अफगानिस्तान 16 स्थान आगे बढ़कर इस वर्ष 167वें स्थान पर है।
- सबसे बड़ी जनसंख्या वाली दो अर्थव्यवस्थाएँ - चीन और भारत - इस वर्ष उन शीर्षस्थ 10 देशों में हैं जिन्होंने अपनी रैंकिंग सुधारी हैं।
- रैंकिंग में सर्वाधिक सुधार लाने वाले 10 देशों की सूची में ये देश आते हैं - अफगानिस्तान, जिबूती, अजरबैजान, टोगो, केन्या, कोट डी'आईवोयर, तुर्की और रवांडा।
- जिबूती और भारत ही ऐसी अर्थव्यस्थाएँ हैं जो लगातार दूसरे वर्ष सबसे अधिक सुधार लाने वाले 10 अर्थव्यवस्थाओं में हैं।

स्रोतः इकोनॉमिक टाइम्स

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

आरबीआई के इकॉनोमिक कैपिटल फ्रेमवर्क के परीक्षण के लिए विशेषज्ञ समिति बनाने का निर्णय

चर्चा में क्यों?

- भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के केन्द्रीय निदेशक मंडल की केंद्र सरकार के साथ बैठक में केन्द्रीय बैंक के इकॉनोमिक कैपिटल फ्रेमवर्क के अध्ययन के लिए विशेषज्ञ समिति बनाने का निर्णय लिया गया है।

मुख्य तथ्य

- इस बैठक में आरबीआई बोर्ड ने बेसल फ्रेमवर्क सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के जोखिम में फंसे ऋण पुनर्गठन और प्रॉन्प्ट करेक्टिव एक्शन के तहत बैंकों की वित्तीय स्थिति पर चर्चा की गई।
- निदेशक मंडल में इकॉनोमिक कैपिटल फ्रेमवर्क के अध्ययन के लिए विशेषज्ञ समिति बनाने, समिति के सदस्यों और समिति के कार्य क्षेत्र पर सरकार तथा आरबीआई दोनों ने मिलकर काम करने का निर्णय लिया।

रिजर्व बैंक का फैसला

- आरबीआई प्रॉन्प्ट करेक्टिव एक्शन (पीसीए) फ्रेमवर्क के प्रावधानों में कुछ संशोधन करने पर सहमत हुआ है ताकि कुछ सरकारी बैंकों को इसके दायरे से बाहर निकाला जा सके।
- वर्तमान समय में 11 सरकारी बैंक पीसीए के दायरे में है। इसके लिए अलग से समिति गठित नहीं होगी बल्कि आरबीआई की वित्तीय निगरानी से जुड़ा एक बोर्ड इस बारे में विचार करेगा।
- पीसीए क्या होता है: जब किसी बैंक के पास जोखिम का सामना करने के लिए पर्याप्त पूंजी नहीं होती तथा आय या मुनाफा नहीं हो रहा या एनपीए बढ़ रहा है तो उस बैंक को पीसीए केटेगरी में डाल दिया जाता है। पीसीए में शामिल बैंक नए कर्ज नहीं दे सकते और नई ब्रांच नहीं खोल सकते।

प्रमुख तथ्य

- रिजर्व बैंक का पूंजी आधार इस समय 9.69 लाख करोड़ रुपए है. रिजर्व बैंक के स्वतंत्र निदेशक और स्वदेशी विचार एस गुरुमूर्ति तथा वित्त मंत्रालय चाहते हैं कि इस कोष को वैश्विक मानकों के अनुरूप कम किया जाना चाहिए।
- बैठक में जिस विशेषज्ञ समिति के गठन का फैसला किया गया है वह इस कोष के उचित स्तर के बारे में अपनी सिफारिश देगी।
- बैठक में बोर्ड ने आरबीआई को एमएसएमई के जोखिम में फंसे संस्थानों के पुनर्गठन स्कीम पर भी विचार करने के लिए कहा है। इसके तहत आरबीआई सिर्फ 25 करोड़ रुपए के ऋण पर भी विचार करेगा।
- बयान में कहा गया है कि प्रॉन्प्ट करेक्टिव एक्शन के तहत आए बैंकों के मामले का केन्द्रीय बैंक का फाइनेंशियल सुपर विजन बोर्ड परीक्षण करेगा।
- गौरतलब है कि आरबीआई बोर्ड में कुल 18 सदस्य हैं जिनमें उर्जित पटेल के अतिरिक्त उनके चार डिप्टी गवर्नर भी शामिल हैं। उर्जित पटेल के अलावा किसी भी डिप्टी गवर्नर को मतदान करने का अधिकार नहीं है। बोर्ड में दो सरकारी अधिकारी और सरकार द्वारा मनोनीत सात स्वतंत्र निदेशक हैं।

स्रोत: इकोनॉमिक टाइम्स

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारत का पहला जलमार्ग बंदरगाह वाराणसी में आरंभ

चर्चा में क्यों?

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 12 नवंबर 2018 को अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी को 2400 करोड़ रुपये की सौगात दी। उन्होंने यहां रामनगर स्थित पहले वॉटर वेज टर्मिनल का उद्घाटन किया। इस दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य आदि मौजूद थे।
- प्रधानमंत्री ने अपने संसदीय निर्वाचन क्षेत्र वाराणसी में देश के पहले मल्टी-मॉडल टर्मिनल समेत 2413 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास करने के बाद आयोजित जनसभा को संबोधित भी किया. यह जलमार्ग वाराणसी-हल्दिया मार्ग पर बनाया गया है।

वाराणसी-हल्दिया जलमार्ग

- गंगा नदी में बंगाल से वाराणसी तक पोत का परिचालन शुरू हो गया है. आजाद भारत में पहली बार गंगा के रास्ते एक कंटेनर कोलकाता से वाराणसी पहुंचा है।
- पेप्सिको कंपनी गंगा नदी के रास्ते जलपोत एमवी आरएन टैगोर के जरिए अपने 16 कंटेनर को कोलकाता से वाराणसी लेकर आई।
- इनलैंड वाटर हाइवे-1 पर दो जहाजों के माध्यम से ये कंटेनर आए, जिन्हें 30 अक्टूबर को कोलकाता से रवाना किया गया था।
- यह जलपोत एमवी आरएन टैगोर वाराणसी से इफ्को कंपनी का उर्वरक लेकर वापस कोलकाता लौटेंगे।
- इस टर्मिनल को हल्दिया-वाराणसी के बीच राष्ट्रीय जलमार्ग-1 पर विकसित किया जा रहा है।
- इस टर्मिनल के जरिए 1500 से 2000 टन के बड़े जहाजों की भी आवाजाही संभव हो सकेगी।

अन्य परियोजनाओं का शिलान्यास

- इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इण्टरसेप्शन डाइवर्जन ऑफ ड्रेन एण्ड ट्रीटमेण्ट वर्क एट रामनगर-वाराणसी, किला कटरिया मार्ग पर आईआरक्यूपी का कार्य, पूर्व राष्ट्रीय मार्ग संख्या-7 पड़ाव रामनगर (टेगरा मोड़) मार्ग पर आईआरक्यूपी का कार्य, लहरतारा-काशी हिन्दू विश्वविद्यालय मार्ग पर उपरिगामी फुटपाथ का निर्माण, वाराणसी में हेलीपोर्ट का निर्माण, ड्राइवर प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना कार्य आदि परियोजनाओं का शिलान्यास किया।

भारत के राष्ट्रीय जलमार्ग

- राष्ट्रीय जलमार्ग-1 - (इलाहाबाद से हल्दिया) - गंगा नदी से गुजरनेवाले 1680 किलोमीटर लंबे इलाहाबाद-हल्दिया जलमार्ग को भारत में राष्ट्रीय जलमार्ग-1 का दर्जा दिया गया है। गंगा नदी का प्रयोग नागरिक यातायात तथा भारवहन के लिए के लिए काफी समय से किया जाता रहा है. इस जलमार्ग पर स्थित प्रमुख शहर इलाहाबाद, वाराणसी, मुगलसराय, बक्सर, आरा, पटना, मोकामा, बाढ, मुंगेर, भागलपुर, फरक्का, कोलकाता तथा हल्दिया है।
- राष्ट्रीय जलमार्ग-2 - (सादिया से धुबरी पट्टी) - ब्रह्मपुत्र नदी में धुबरी से सदिया तक के मार्ग को राष्ट्रीय जलमार्ग-2 के नाम से जाना जाता है। इस जलमार्ग को वर्ष 1988 में राष्ट्री य जलमार्ग घोषित किया गया था। इस जलमार्ग की कुल लम्बाई 891 किमी है इस राजमार्ग के महत्वपूर्ण वाणिज्यिक केन्द्र धुबरी, गोगीघोपा, गवाहटी, तेजपुर, निमाती, डिब्रूगढ, सदिया तथा सायखोवा है।
- राष्ट्रीय जलमार्ग-3 - (कोल्लम से कोट्टापुरम) - पश्चिमी भारत में स्थित तटीय नहरों की श्रृंखला को कोट्टापुरम से कोल्लयम तक राष्ट्रीय जालमार्ग - 3 घोषित किया गया है। इस जलमार्ग की शुरूआत वर्ष 1992 में हुई थी। इस राष्ट्रीय जलमार्ग कुल लंबाई 205 किमी है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

- राष्ट्रीय जलमार्ग-4 – (काकीनाडा से मरक्कानम) – काकीनाडा पुदुचेरी नहर विस्तार के साथ गोदावरी नदी विस्तार तथा कृष्णा नदी विस्तार को सम्मिलित रूप से राष्ट्रीय जलमार्ग-4 नाम से जाना जाता है। इस जलमार्ग की लंबाई 1095 किमी है। यह जलमार्ग चेन्नई बंदरगाह को काकीनाडा तथा मच्छलीपट्टम के बन्दरगाहों को जोड़ता है।
- राष्ट्रीय जलमार्ग-5 – (तलचर से धमरा) – पूर्वी तटीय नहर प्रणाली में ब्राह्मणी तथा महानदी डेल्टा क्षेत्र को राष्ट्रीय जलमार्ग 5 के नाम से जाना जाता है। यह जलमार्ग मंगलगडी से पारादीप बन्दतरगाह के बीच 101 किमी जलमार्ग को भी जोड़ता है। इस जलमार्ग की कुल लंबाई 623 किमी है। इसकी शुरूआत 1985 में हुई थी इसे वर्ष 2008 में राष्ट्रीय जलामार्ग घोषित किया गया था।
- राष्ट्रीय जलमार्ग-6 – (लखीपुर से भंगा) – भंगा से लखीपुर जलमार्ग को राष्ट्रीय जलमार्ग 6 कहा गया है। अभी यह जलमार्ग प्रस्तावित है इसकी शुरूआत अभी नहीं हुई है। इस राष्ट्रीय जलमार्ग की कुल लंबाई 121 किमी है।

स्रोत: द हिंदू

केंद्र सरकार और विश्व बैंक ने 310 मिलियन डॉलर के ऋण समझौता पर हस्ताक्षर किया

चर्चा में क्यों?

- केंद्र सरकार और विश्व बैंक ने 20 नवम्बर 2018 को नई दिल्ली में झारखंड विद्युत प्रणाली सुधार परियोजना के लिए 310 मिलियन डॉलर के ऋण समझौता पर हस्ताक्षर किया।

मुख्य तथ्य

- झारखंड के लोगों को 24 × 7 विश्वसनीय, गुणवत्तासंपन्न तथा किफायती बिजली प्रदान करने के उद्देश्य से झारखंड विद्युत प्रणाली सुधार परियोजना के लिए भारत सरकार, झारखंड सरकार तथा विश्व बैंक ने ऋण समझौता पर हस्ताक्षर किया।
- झारखंड विद्युत प्रणाली सुधार परियोजना से झारखंड में नई बिजली ट्रांसमिशन संरचना बनाने में मदद मिलेगी और राज्य की बिजली क्षेत्र की कंपनियों की तकनीकी दक्षता और वाणिज्यिक प्रदर्शन में सुधार होगा।
- परियोजना से ऑटोमेटेड सब-स्टेशन तथा नेटवर्क विश्लेषण और नियोजन उपकरण जैसे आधुनिक टेक्नोलॉजी समाधान लागू करने में मदद मिलेगी। इससे बिजली की विश्वसनीय आपूर्ति होगी और उपभोक्ताओं की संतुष्टि में वृद्धि होगी।

उद्देश्य:

- प्रस्तावित निवेश के एक बड़े भाग का उद्देश्य बिजली ट्रांसमिशन संरचना में सुधार करना है. परियोजना सरकारी क्षेत्र की बिजली ट्रांसमिशन और वितरण कंपनियों की संस्थागत क्षमताओं को विकसित करने और उनके संचालन में सुधार पर फोकस करेगी।
- पुनर्निमाण और विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय बैंक (आईबीआरडी) से 310 मिलियन डॉलर के ऋण की रियायत अवधि 5 वर्ष है और इस ऋण की अंतिम परिपक्वता अवधि 25 वर्ष है।
- झारखंड वितरण कंपनी के डाटा के अनुसार राज्य के 80 प्रतिशत लोगों तक बिजली पहुंची है, लेकिन राज्य को उपभोक्ताओं के लिए विश्वसनीय रूप से 24×7 बिजली देने के लिए कार्य जारी रखना होगा।
- झारखंड में वित्त वर्ष 2016 के अंत तक बिजली की खपत प्रति व्यक्ति 552 किलोवाट रही है, जो राष्ट्रीय औसत से लगभग आधी है।
- परियोजना के प्रमुख घटकों में नए सब-स्टेशनों तथा मुख्य रूप से 132 किलोवाट वॉल्टेज स्तर की नई ट्रांसमिशन लाइनों का निर्माण करना और राज्य लोड डिस्पैच स्तर (एलडीसी) के संचालन को मजबूत बनाने के लिए प्रणाली स्थापित करने में झारखंड ऊर्जा संचार निगम लि. (जेयूएसएनएल) को समर्थन देना है। इससे राज्य ग्रिड में नवीकरणीय ऊर्जा को एकीकृत करने में मदद मिलेगी।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

बिजली योजना:

- झारखंड सबके लिए बिजली योजना में शामिल होने वाले पहले राज्यों में है और राज्य ट्रांसमिशन तथा बिजली वितरण सुधार का प्रयास कर रहा है।
- बिजली की विश्वसनीय मांग आने वाले वर्षों में लगभग दोगुनी हो जाएगी. यह परियोजना राज्य के आर्थिक विकास के लिए ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरी करने में मदद देगी।
- झारखंड सरकार राज्य के आर्थिक विकास के लिए लोगों को गुणवत्ता संपन्न बिजली आपूर्ति के लिए संकल्पबद्ध है।
- यह परियोजना घरों, उद्योगों, कारोबार तथा अन्य उत्पादक क्षेत्रों को बिजली आपूर्ति बढ़ाने में सहायता देगी और गरीबी उपशमन तथा झारखंड में समावेशी विकास में योगदान करेगी।

पृष्ठभूमि:

- यह परियोजना भारत सरकार द्वारा वर्ष 2014 में लांच किए गए सबके लिए बिजली कार्यक्रम का हिस्सा है। योजना में निजी और सार्वजनिक निवेश के माध्यम से वर्ष 2022 तक 4.5 गीगावाट बिजली उत्पादन क्षमता (सौर ऊर्जा से 1.5 गीगावाट उत्पादन सहित) को जोड़ने का प्रावधान है।

स्रोत: पीआईबी

ऑपरेशन ग्रीन के लिए मार्ग-निर्देश जारी

चर्चा में क्यों?

- केंद्रीय मंत्री हरसिमरत कौर बादल के नेतृत्व में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय ने 05 नवम्बर 2018 को ऑपरेशन ग्रीन के लिए संचालन संबंधी उपायों को अपनी मंजूरी दे दी है।
- देशभर में पूरे वर्ष तक मूल्यों में उतार-चढ़ाव के बिना टमाटर, प्याज और आलू की आपूर्ति और उपलब्धता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सरकार ने 2018-19 के बजट भाषण में 500 करोड़ रूपये की लागत से ऑपरेशन ग्रीन की घोषणा की थी।

मंत्रालय द्वारा किए गए उपायों में निम्नलिखित बिंदु शामिल हैं:-

(I) लघुकालिक मूल्य स्थिरीकरण उपाय

- मूल्य स्थिरीकरण उपाय को लागू करने में नेफेड शीर्ष एजेंसी होगा। निम्नलिखित दो घटकों पर खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय 50 प्रतिशत सब्सिडी देगा।

i. उत्पादन से लेकर भंडार तक आलू, प्याज और टमाटर फसलों की ढुलाई;

ii. टमाटर, प्याज और आलू फसलों के लिए समुचित भंडार सुविधाओं का किराया;

(II) दीर्घकालिक समन्वित मूल्य श्रृंखला विकास परियोजना

i. किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) और उनके केंद्रों का क्षमता निर्माण

ii. गुणवत्तापूर्ण उत्पादन

iii. फसल पश्चात प्रसंस्करण सुविधा

iv. कृषि उपस्कर

v. विपणन / उपभोग केंद्र

vi. टमाटर, प्याज और आलू फसलों की मांग और आपूर्ति प्रबंधन के लिए ई-प्लेटफॉर्म का निर्माण और प्रबंधन

सभी क्षेत्रों में पात्र परियोजना लागत के 50 प्रतिशत की दर से अनुदान सहायता इस प्रणाली में शामिल होगी, बशर्ते प्रति परियोजना अधिकतम 50 करोड़ रूपये हो। पात्र संगठन में राज्य कृषि और अन्य विपणन परिसंघ, किसान उत्पादक संगठन, सहकारी संगठन, कंपनी, स्व-सहायता समूह, खाद्य प्रसंस्करणकर्ता, उपस्कर ऑपरेटर, सेवाप्रदाता, आपूर्ति श्रृंखला ऑपरेटर, खुदरा और थोक श्रृंखला तथा केंद्रीय और राज्य सरकार तथा उनकी इकाइयां/संगठन शामिल हैं, जो इस कार्यक्रम में भाग लेने के साथ ही वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए पात्र होंगे।

स्रोत: पीआईबी

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम का अनुभाग 7

चर्चा में क्यों?

- भारत सरकार भारतीय रिजर्व बैंक को विशेष निर्देश देने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम के अनुभाग 7 (Section 7 of the Reserve Bank of India Act) का प्रयोग करने जा रही है। ऐसा कयास भी लगाया जा रहा है कि RBI के गवर्नर उर्जित पटेल इस धारा के अंतर्गत एक विशिष्ट दिशानिर्देश जारी किए जाने के कारण इस्तीफा दे सकते हैं।

section 7 of the RBI Act क्या है?

- RBI Act के अनुभाग 7 के अनुसार केंद्र सरकार को यह शक्ति है कि वह समय-समय पर RBI गवर्नर से परमर्श करके भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) को ऐसे निर्देश दे सके जो उसकी दृष्टि में लोकहित में आवश्यक है. "The Central Government may from time to time give such directions to the Bank as it may after consultation with the Governor of the Bank consider necessary in the public interest], Section 7(1) of the RBI Act reads-
- RBI Act ds Section 7 में एक उप-अनुभाग भी जो कहता है कि – "भारत सरकार चाहे तो बैंक के सामान्य पर्यवेक्षण और कारोबार को वह एक केन्द्रीय निदेशक बोर्ड (Central Board of Directors) को सौंप सकती है जो बैंक द्वारा किये जाने वाले सभी कार्य कर सकता है और बैंक की सारी शक्तियों का प्रयोग कर सकता है."

RBI Board का स्वरूप

- RBI Board एक ऐसा निकाय है जिसमें निम्नलिखित प्राधिकारी होते हैं।
  - रिजर्व बैंक का गवर्नर
  - चार डिप्टी गवर्नर
  - विभिन्न क्षेत्रों के अधिकतम 10 गैर-सरकारी निदेशक जिन्हें भारत सरकार नामित करती है
  - दो सरकारी अधिकारी
  - RBI के चार स्थानीय बोर्डों से एक-एक निदेशक

RBI Board के सदस्यों का कार्यकाल

- बोर्ड के गवर्नर और डिप्टी गवर्नर का कार्यकाल अधिकतम 5 वर्ष का होता है।
- भारत सरकार द्वारा नामित 10 निदेशकों का कार्यकाल चार वर्ष का होता है।
- बोर्ड के सरकारी अधिकारियों का कार्यकाल सरकार के प्रसाद-पर्यन्त होता है।

बोर्ड का कार्य

- RBI नियमों के अनुसार रिजर्व बैंक के कार्यों का सामान्य पर्यवेक्षण और दिशा-निर्देश का कार्य इस बोर्ड को सौंपा गया है। इस प्रकार रिजर्व बैंक जो भी कार्यकलाप करता है वे सभी कार्यकलाप यह बोर्ड भी कर सकता है। बोर्ड का काम सरकार को बैंक नोटों की रूपरेखा, आकार और इनके लिए प्रयुक्त सामग्री के विषय में अनुशंसा करना भी है।

बोर्ड कब बैठता है?

- रिजर्व बैंक का गवर्नर एक वर्ष में कम-से-कम छह बार बोर्ड की बैठक आहूत करता है। यह बैठक प्रत्येक तिमाही में कम-से-कम एक बार होना आवश्यक है। यदि कम-से-कम चार निदेशक ऐसा चाहें तो गवर्नर को बैठक बुलानी होती है. किसी कारण से यदि गवर्नर उपस्थित नहीं होता है तो उसके द्वारा प्राधिकृत डिप्टी गवर्नर बोर्ड की बैठक की अध्यक्षता करता है। यदि मत-विभाजन होता है तो गवर्नर एक अलग से दूसरा वोट भी दे सकता है जो कि निर्णायक होगा।

स्रोतः द हिंदू

विज्ञान और प्रौद्योगिकी, रक्षा एवं स्वास्थ्य

भारत और ब्रिटेन की नौसेनाओं के बीच संयुक्त अभ्यास 'कोंकण 2018' गोवा में शुरू

चर्चा में क्यों?

- भारत और ब्रिटेन के बीच रणनीतिक स्थिरता, आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देने और समुद्री इलाके में सकारात्मक माहौल सुनिश्चित करने के लिए दोनो देशों की नौसेनाओं के बीच संयुक्त युद्धाभ्यास 'आईएन-आरएन कोंकण 2018' गोवा में 29 नवम्बर 2018 से शुरू हो गया है।

मुख्य तथ्य

- इसमें दोनों देशों के नौसैनिक एक दूसरे के साथ एक सप्ताह से भी अधिक समय तक रण कौशल के विभिन्न गुर तथा अनुभव साझा करेंगे। इस अभ्यास के दौरान बीच सागर में किसी संदिग्ध पोत का औचक निरीक्षण किया जाता है।
- इस बार हवा और जमीन से किये जाने वाले हमलों से निपटने तथा पनडुब्बी रोधी प्रणालियों का अभ्यास विशेष रूप से किया जायेगा।
- कोंकण युद्धाभ्यास दोनों देशों की नौसेनाओं को एक ऐसा मंच प्रदान करता है जहाँ समुद्र और बंदरगाह में समय-समय पर युद्धाभ्यास हो सके ताकि पारस्परिकता निर्मित की जा सके और बेहतरीन कार्यप्रणाली का आदान-प्रदान किया जा सके।

उद्देश्य:

- इस युद्धाभ्यास का उद्देश्य एक दूसरे के अनुभवों से आपसी लाभ प्राप्त करना है और यह दोनों देशों के बीच सहयोग जारी रखने का संकेत है।
- पिछले कुछ वर्षों में इस तरह के युद्धाभ्यासों के परिणामस्वरूप हासिल पारस्परिकता दोनों नौसेनाओं के लिए लाभकारी सिद्ध हुई है।
- नौसैनिक सहयोग रणनीतिक स्थिरता और आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए समुद्र में एक सकारात्मक माहौल सुनिश्चित करने के लिए दोनों सैनिकों की प्रतिबद्धता का स्पष्ट प्रतीक है।

कोंकण 2018 युद्धाभ्यास

- कोंकण 2018 युद्धाभ्यास 28 नवम्बर से 06 दिसम्बर 2018 तक गोवा में होगा जिसमें दोनों नौसेनाओं की यूनिटें भाग लेंगी. बंदरगाह चरण 28 नवम्बर से 30 नवम्बर 2018 तक चलेगा जिसके बाद 02 दिसम्बर से 06 दिसम्बर 2018 तक समुद्री चरण जारी होगा।
- रॉयल नेवी का प्रतिनिधित्व एचएमएस ड्रेगन, टाइप 45 क्लास विध्वंसक पोत करेगा, जो वाइल्डकैट हेलीकॉप्टर से लैस है. भारतीय नौसेना आईएनएस कोलकाता को उतारेगी, यह पहला नवीनतम कोलकाता क्लास विध्वंसक पोत है, जिसमें सीकिंग और एक आईएन पनडुब्बी लगी है।
- साथ ही आईएन समुद्री गश्ती विमान डोर्नियर भी युद्धाभ्यास में भाग लेगा। पिछले कुछ वर्षों में आईएन-आरएन युद्धाभ्यास के परिणामस्वरूप द्विपक्षीय युद्धाभ्यास के संबंध में पेशेवर संतुष्टि बढ़ी है।
- इस वर्ष के युद्धाभ्यास का मुख्य विषय वायु भेदी जंग, जमीन रोधी जंग, पनडुब्बी रोधी जंग, समुद्र में कार्रवाई और युद्ध कौशल (विजिट बोर्ड सर्च एंड सीजर) जहाज को चलाने की कला का क्रमिक विकास है। समुद्र में युद्धाभ्यास के अलावा कोंकण-2018 में पेशेवर परस्पर क्रियाओं और क्रीडा प्रतियोगिताओं को भी सम्मिलित किया गया है।

कोंकण युद्धाभ्यास श्रृंखला की शुरूआत:

- कोंकण युद्धाभ्यास श्रृंखला की शुरूआत वर्ष 2004 में हुई थी और तब से इसमें बढ़ोत्तरी हुई है। इसका उद्देश्य रण कौशल की बारिकीयों तथा अनुभवों का परस्पर आदान प्रदान करना है।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

मिशन 'रक्षा ज्ञान शक्ति' लॉन्च

चर्चा में क्यों?

- भारत की रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण ने 27 नवंबर 2018 को मिशन रक्षा ज्ञान शक्ति का शुभारंभ किया। इस मिशन का उद्देश्य रक्षा उद्योग में आविष्कार और नए उत्पादों के विकास को प्रोत्साहित करना है। रक्षा मंत्री ने मिशन मोड प्रोग्राम के तहत मिशन रक्षा ज्ञान शक्ति का कार्यक्रम शुरु किया।

मिशन रक्षा ज्ञान शक्ति

- इस कार्यक्रम में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ), रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों और आयुध फैक्टरीयों द्वारा विशेष आविष्कारों तथा नवाचारों को प्रस्तुत किया गया।
- कार्यक्रम में इन उत्पादों के लिए बौद्धिक संपदा अधिकार के तहत सफल आवेदनों का भी परिचय दिया गया. राष्ट्र के लिए उपयोगी उत्पादों के आविष्कार के संबंध में श्रीमती सीतारमण ने कुछ वैज्ञानिकों का भी स्वागत किया।
- गुणवत्ता आश्वासन महानिदेशालय को कार्यक्रम के समन्वय और कार्यान्वयन की जिम्मेदारी दी गई है।
- कार्यक्रम में इन उत्पादों के लिए बौद्धिक संपदा अधिकार के तहत सफल आवेदनों का भी परिचय दिया गया। राष्ट्र के लिए उपयोगी उत्पादों के आविष्कार के संबंध में रक्षा मंत्री ने कुछ वैज्ञानिकों का भी स्वागत किया।
- इस अवसर पर आयोजित परिचर्चा में सभी रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों के अध्यक्ष और महानिदेशकों ने हिस्सा लिया. परिचर्चा में भविष्य के लिए रणनीति पर विचार किया गया।

पृष्ठभूमि

- बौद्धिक सम्पदा के क्षेत्र में भारतीय रक्षा वैज्ञानिको और इंजीनियरों को ट्रेनिग दी जा रही है। इसके तहत अब तक आर्डनेंस फैक्ट्री बोर्ड और सार्वजनिक रक्षा उपक्रमों के दस हजार स्टाफ को ट्रेनिंग दी गई है। इसका उद्देश्य भारतीय रक्षानिर्माण में बौद्धिक सम्पदा के प्रति जागरुरता पैदा करना और एक नई संस्कृति का विकास करना है।

स्रोतः पीआईबी

परमाणु पनडुब्बी अरिहंत ने पहला गश्ती अभियान सफलतापूर्वक पूरा किया

चर्चा में क्यों?

- भारत की सामरिक परमाणु पनडुब्बी अर्थात् न्यूक्लियर पनडुब्बी आईएनएस अरिहंत ने 05 नवंबर 2018 को अपना पहला गश्ती अभियान सफ़लतापूर्वक पूरा कर लिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस मौके पर न्यूक्लियर पनडुब्बी आईएनएस अरिहन्त के अधिकारियों और कर्मियों से मुलाकात की।
- पनडुब्बी अरिहंत के इस अभ्यास से भारत के नाभिकीय त्रिकोण की पूर्ण स्थापना हुई. यह उपलब्धि भारत को उन गिने-चुने देशों की अग्रिम पंक्ति में खड़ी करती है जो एसएसबीएन को डिजाइन करने, उसे बनाने और उसके संचालन करने की क्षमता रखते हैं।

परमाणु पनडुब्बी अरिहंत की विशेषताएं

- अरिहंत का जलावतरण पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और उनकी पत्नी गुरशरण कौर द्वारा 26 जुलाई 2009 को जलावतरण किया गया। यह दिन इसलिए भी चुना गया क्योंकि यह कारगिल युद्ध में विजय की सालगिरह भी थी और इस दिन को कारगिल विजय दिवस या विजय दिवस) रूप में मनाया जाता है।
- भारत, अमेरिका, फ्रांस, रूस, ब्रिटेन और चीन के बाद छठा ऐसा देश हो गया है, जिसने अपनी परमाणु पनडुब्बी बनाने में कामयाबी हासिल की है।
- छह हजार टन वजनी अरिहंत में 750 किलोमीटर से लेकर 3500 किलोमीटर तक की मारक क्षमता वाली मिसाइलें तैनात हैं।
- इससे पानी के भीतर और पानी की सतह से परमाणु मिसाइल दागी जा सकती हैं।
- इससे पानी के अंदर से किसी विमान को भी निशाना बनाया जा सकता है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

- परमाणु पनडुब्बी अरिहंत एटमी हथियारों से लैस काफी महत्वपूर्ण हथियार है। यह पनडुब्बी समुद्र के किसी भी कोने से लक्ष्य को निशाना बनाने की क्षमता वाली मिसाइल छोड़ सकती है।
- साथ ही, इसे जल्दी डिटेक्ट भी नहीं किया जा सकता। साथ ही परमाणु रिएक्टर से मिली एनर्जी से चलने वाली दूसरी खूबियों के कारण लंबे समय तक गहरे पानी के भीतर भी रह सकती है।
- भारत को आईएएनएस अरिहंत जैसी छह परमाणु पनडुब्बियों की आवश्यकता है जिन पर 90 हजार करोड़ खर्च का अनुमान है।

स्मरणीय तथ्य

- अमेरिका 70 से ज्यादा परमाणु पनडुब्बियों के साथ पहले नंबर पर है, जबकि 30 पनडुब्बियों के साथ रूस दूसरे नंबर पर है। इंग्लैंड के पास 12 और फ्रांस के पास 12 पनडुब्बियां हैं।
- चीन, अमेरिका और रूस की पनडुब्बियां 5000 किलोमीटर तक मारक क्षमता वाली हैं, वहीं आईएनएस अरिहंत की क्षमता 750 से 3500 किलोमीटर तक की है।
- परमाणु पनडुब्बी के निर्माण लिए भारत का प्रयास 1970 में शुरू हुआ था। जबकि इस क्षेत्र में भारत को 90 के दशक में सफलता हासिल हुई।
- आईएनएस अरिहंत को पहली बार साल 2009 में विशाखापत्नम में शिप बिल्डिंग सेंटर में लॉन्च किया गया था।
- अगस्त 2018 में इसे भारतीय नौसेना में सेवा के लिए सौंप दिया गया।

स्रोत: द हिंदू

भारतीय तटरक्षक बल द्वारा गश्ती जहाज आईसीजीएस वाराह लॉन्च

चर्चा में क्यों?

- भारतीय तटरक्षक बल द्वारा गश्ती जहाज आईसीजीएस वाराह लॉन्च किया गया. यह गश्ती जहाज समुद्र के तटीय इलाकों में गश्त करने के लिए लाया गया है।
- यह एक ऑफशोर पट्रोल वेसल है, इसे चेन्नई के लार्सन एंड टुब्रा कटुपल्ली शिपयार्ड में लांच किया गया। यह 98एम ओपीवी श्रेणी का चौथा गश्ती जहाज है। इसका निर्माण लार्सेन एंड टुब्रो द्वारा स्वदेशी रूप से निर्मित किया गया है।

आईसीजीएस वाराह के बारे में जानकारी

- इस जहाज में एडवांस्ड नेविगेशन तथा संचार उपकरण, सेंसर तथा मशीनरी का उपयोग किया गया है।
- इसमें 30 मिमी तथा दो 12.7 मिमी गन का उपयोग किया गया है।
- इसकी अधिकतम गति 26 नॉट है।
- इसमें इंटीग्रेटेड ब्रिज सिस्टम, ऑटोमेटेड पॉवर मैनेजमेंट, इंटीग्रेटेड प्लेटफार्म मैनेजमेंट हाई पॉवर एक्सटर्नल फायर फाइटिंग सिस्टम का उपयोग किया गया है।

पृष्ठभूमि

- केन्द्रीय रक्षा मंत्रालय ने तीन वर्ष पूर्व मार्च 2015 में लार्सन एंड टुब्रो को सात ओपीवी के निर्माण हेतु अनुबंध प्रदान किया था।
- कम्पनी द्वारा अब तक दो ओपीवी भारतीय तटरक्षक बल को सौंपे जा चुके हैं। इन्हें वर्तमान में पश्चिमी तट तथा भारत के पूर्वी तट पर तैनात किया गया है।
- तीसरा तटरक्षक गश्ती जहाज वर्ष 2019 के आरंभ में तटरक्षक बल को सौंपा जायेगा। यह भी घोषणा की गई है कि मार्च 2021 तक सातों ओपीवी तटरक्षक बल को सौंप दिए जायेंगे।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारत और इंडोनेशिया के मध्य संयुक्त नौसेनिक अभ्यास

चर्चा में क्यों?

- भारत और इंडोनेशिया के मध्य पहला दिवपक्षीय नौसौनिक अभ्यास 'समुद्र शक्ति' इंडोनेशिया के द्वीप सुराबाया पर आरंभ किया गया। यह नौसेनिक अभ्यास 12 नवम्बर 2018 से शुरू हुआ है जो 18 नवम्बर तक चलेगा।
- यह माना जा रहा है कि इस संयुक्त अभ्यास से भारत और इंडोनेशिया के बीच नौसैनिक सहयोग का एक नया दौर शुरु होगा। इस संयुक्त अभ्यास का उद्देश्य आपसी रिश्तों को विस्तार देना, समुद्री सहयोग को गहरा करना और एक-दूसरे की श्रेष्ठ प्रथाओं को अपनाना है।

समुद्र शक्ति संयुक्त अभ्यास

- अभ्यास का हार्बर फेज 12 से 15 नवम्बर तक चलेगा। इस दौरान दोनों देशों के नौसैनिक एक-दूसरे के युद्धपोतों का दौरा करेंगे और आपसी वार्ता करेंगे। इसके बाद 15 से 18 नवम्बर तक सी- फेज चलेगा।
- इस दौरान पनडुब्बी नाशक अभ्यास, हेलीकाप्टर आपरेशन, सतही युद्ध अभ्यास और समुद्री डाकाजनी के खिलाफ कार्रवाई आदि के अभ्यास होंगे।
- इस अभ्यास में भाग लेने के लिए भारतीय नौसेना का युद्धपोत आईएनएस राणा इंडोनेशिया के समुद्र तट पर पहुंच चुका है।
- यह युद्धपोत इन दिनों दक्षिण पूर्व एशिया के समुद्री इलाके के दौरे पर है।
- आईएनएस राणा विशाखापतनम स्थित पूर्वी नौसैनिक अड्डे का युद्धपोत है।
- गौरतलब है कि पिछले वर्ष प्रधानमंत्री मोदी के इंडोनेशिया दौरे में दोनों देशों के बीच सामरिक साझेदारी के रिश्तों को समग्र सामरिक साझेदारी का दर्जा दिया गया था। इंडोनेशिया के लिये भारतीय युद्धपोत का दौरा इंडोनेशिया के इलाके में समुद्री व्यवस्था को प्रोत्साहन देना है।

भारत - इंडोनेशिया संबंध

- भारत के पहले प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा इंडोनेशिया के पहले राष्ट्रपति सुकर्णो के बीच मैत्री के कारण दोनों देशों के बीच सौहार्दपूर्ण संबंधों का बीज बोया गया था।
- जिस समय इंडोनेशिया डच साम्राज्यवाद को समाप्त करने के लिए संघर्ष कर रहा था उस समय पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इंडोनेशिया के उद्देश्य का भरपूर समर्थन किया था।
- वर्तमान समय में भारत और इंडोनेशिया के मध्य रक्षा और सुरक्षा सहयोग सुदृढ़ हुए हैं। व्यापारिक एवं आर्थिक क्षेत्र में भारतीय कम्पनियों ने इंडोनेशिया में अवसंरचना, विद्युत, कपड़ा, इस्पालत, ऑटोमोटिव, खनन, बैंकिंग तथा एफएमजीसी क्षेत्रों में निवेश किया है।

स्रोतः द हिंदू

विश्व एड्स दिवस 2018

चर्चा में क्यों?

- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 01 दिसंबर 2018 को विश्व एड्स दिवस (World Aids Day) मनाया गया। इस अवसर पर प्रत्येक देश में जागरुकता कार्यक्रम, चर्चा एवं गोष्ठियां आयोजित की गयीं। यह दिन इस जानलेवा रोग के बारे में जागरूकता फैलाने का अवसर प्रदान करता है और एचआईवी तथा एड्स की रोकथाम, उपचार और देखभाल को बढ़ावा देता है।
- सरकार और स्वास्थ्य अधिकारी, गैर सरकारी संगठन और दुनिया भर में लोग अक्सर एड्स की रोकथाम और नियंत्रण पर शिक्षा के साथ, इस दिन का निरीक्षण करते हैं। विश्व एड्स दिवस के हिस्से के तौर पर, संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (यूनिसेफ) ने यह कहते हुए कि 15 वर्ष के बच्चों के बीच संक्रमण को रोकना अधिक जरूरी है अधिक निवेश एवं बच्चों तक उपचार की पहुंच बढ़ाने पर जोर दिया।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

इस वर्ष का विषय

- इस वर्ष का विषय था: 'अपनी स्थिति जानें'. इसका मतलब यह है कि हर इंसान को अपने एचआईवी स्टेटस की जानकारी होनी चाहिए। एड्स वर्तमान युग की सबसे बड़ी स्वास्थ्य समस्याओं में से एक है।

उद्देश्य:

- विश्व एड्स दिवस का उद्देश्य एड्स रोग के बारे में जागरूकता फैलाना है। इसका उद्देश्य एचआईवी संक्रमण के प्रसार की वजह से एड्स महामारी के प्रति जागरूकता बढाना, और इस बीमारी से जिसकी मौत हो गई है उनका शोक मनना है।

यूनिसेफ की रिपोर्ट

- यूनिसेफ (UNICEF) की रिपोर्ट के मुताबिक 36.9 मिलियन लोग एचआईवी (HIV) के शिकार हो चुके हैं। भारत सरकार द्वारा जारी किए गए आकड़ों के अनुसार भारत में एचआईवी के रोगियों की संख्या लगभग 2.1 मिलियन है। इस आंकडे के साथ पूरी दुनिया में पाए जाने वाले मरीजों वाले देशों में इसका तीसरा नबंर है।

विश्व एड्स दिवस के बारे में:

- विश्व एड्स दिवस का विचार वर्ष 1987 में विश्व स्वास्थ्य संगठन में कार्यरत ग्लोबल प्रोग्राम ऑन एड्स के सूचना अधिकारियों जेम्स बन तथा थॉमस नीटर का था।
- विश्व एड्स दिवस, 1988 के बाद से 1 दिसंबर को हर साल मनाया जाता है।
- एचआईवी और एड्स का इतिहास वर्ष 1981 में अमेरिका में शुरु हुआ जब देश में यह नई बीमारी कुछ समलैंगिक पुरुषों में पाई गई।
- हालांकि मूल रूप से यह स्वीकार किया गया है कि एचआईवी का मूल अफ्रीका में है तथा अमेरिका पहला देश था जिसने इस वायरस के बारे में लोगों को बताया।
- पहला विश्व एड्स दिवस वर्ष 1988 में आयोजित किया गया था और वह पहला वैश्विक स्वास्थ्य दिवस था।
- विश्व एड्स दिवस पूरी विश्व के लोगों को एचआईवी के विरुद्ध जंग में एकजुट होने का अवसर प्रदान करने, एचआईवी संक्रमित लोगों को अपना समर्थन दर्शाने तथा इस बीमारी से मारे गए लोगों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए प्रत्येक वर्ष 01 दिसंबर को मनाया जाता हैं।

स्रोत: द हिंदू

वर्ष 2030 तक निमोनिया से भारत में 17 लाख बच्चों की मौत का खतरा: रिपोर्ट

चर्चा में क्यों?

- एक वैश्विक अध्ययन में चेतावनी दी गयी है कि आसानी से उपचार किये जाने योग्य बीमारी निमोनिया से भारत में 2030 तक 17 लाख से अधिक बच्चों के मरने की की आशंका है।
- विश्व निमोनिया दिवस के मौके पर 12 नवम्बर 2018 को जारी इस अध्ययन में पाया गया है कि इस संक्रामक बीमारी के चलते 2030 तक पांच साल से कम उम्र के 1.1 करोड़ बच्चों की मौत होने की आंशका है।

रिपोर्ट के मुख्य तथ्य

- ब्रिटेन स्थित गैर सरकारी संगठन 'सेव द चिल्ड्रन' द्वारा यह रिपोर्ट जारी की गई है।
- इस रिपोर्ट के अनुसार सबसे अधिक मौतें नाइजीरिया, भारत, पाकिस्तान और कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में हो सकती हैं।
- सेव द चिल्ड्रन की इस रिपोर्ट के अनुसार इनमें से एक तिहाई यानी 40 लाख से अधिक मौतें टीकाकरण, उपचार और पोषण की दरों में सुधार के ठोस कदम से आसानी से टाली जा सकती हैं।
- रिपोर्ट में कहा गया है कि मलेरिया, दस्त एवं खसरा को मिलाकर जितनी मौतों होती हैं, उससे कहीं ज्यादा अकेले इस बीमारी से मौतें होती हैं।
- वर्ष 2016 में 8,80,000 बच्चों की मौत इसी बीमारी के कारण हुई थी। इनमें से अधिकतर बच्चे दो साल से कम उम्र के थे।
- इस अध्ययन के अनुसार वर्तमान रुझान के हिसाब से 2030 तक इस बीमारी से लगभग 10,865,728 बच्चों की मौत हो सकती है।
- इसमें कहा गया है कि सबसे अधिक 17,30,000 बच्चे नाइजीरिया में, 17,10,000 बच्चे भारत में, 7,06,000 बच्चे पाकिस्तान में और 6,35000 बच्चे कांगो में मौत के मुंह समा सकते हैं।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

दिल्ली पुलिस ने कर्मचारियों के प्रशिक्षण हेतु 'निपुण' पोर्टल लॉन्च किया

चर्चा में क्यों?

दिल्ली पुलिस ने अपने जवानों को ज्यादा प्रोफेशनल और जनता के प्रति ज्यादा संवेदनशील बनाने के लिए उनके प्रशिक्षण में विशेष गतिविधियों को शामिल करने की प्रक्रिया शुरु कर दी है। दिल्ली पुलिस के आयुक्त अमूल्य पटनायक ने 15 नवंबर 2018 को जवानों को प्रशिक्षण देने के लिए ई-ट्रेनिंग पोर्टल 'निपुण' की शुरुआत की। तकनीकी ज्ञान मुहैया कराने के लिए दिल्ली पुलिस के डिजिटल होने की ओर एक और कदम कहा जा सकता है। जानकारी के मुताबिक इस पोर्टल पर जवानों को अनेक विषयों पर जानकारी मिल सकेगी।

'निपुण' ई-लर्निंग पोर्टल

- पोर्टल पर उपलब्ध ऑनलाइन कोर्स को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, फिक्की, एनएचआरसी, एनसीपीसीआर तथा जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, दिल्ली द्वारा प्रोजेक्ट सीएलएपी के तहत तैयार किया गया है।
- दिल्ली कानूनी सेवा प्राधिकरण ने दिल्ली पुलिस के कुछ एक विशेष कोर्स तैयार करने के लिए सहयोग देने पर सहमती प्रकट की है।
- इस पोर्टल पर कानून, स्थायी आदेश, जांच-पड़ताल चेकलिस्ट, केस फाइल के लिए फॉर्म, उच्च न्यायायम तथा सर्वोच्च न्यायालय के नवीनतम निर्णय उपलब्ध होंगे।
- इन कोर्स से छानबीन करने वाले पुलिस अधिकारियों को भी काफी लाभ होगा।
- दिल्ली पुलिस के अधिकारी लॉग इन करके इस पोर्टल का उपयोग कर सकते हैं।
- इस कोर्स को कभी भी कहीं पर भी देखा जा सकता है। इससे पुलिस आसानी से अपने कौशल में वृद्धि कर सकती है और अपनी रोजाना की कार्यशैली में समन्वय स्थापित कर सकती है।

ई-शिक्षा

ई-शिक्षा (ई-लर्निंग) को सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक समर्थित शिक्षा और अध्यापन के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो स्वाभाविक तौर पर क्रियात्मक होते हैं और जिनका उद्देश्य शिक्षार्थी के व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास और ज्ञान के सन्दर्भ में ज्ञान के निर्माण को प्रभावित करना है। सूचना एवं संचार प्रणालियां शिक्षा प्रक्रिया को कार्यान्वित करने वाले विशेष माध्यम के रूप में अपनी सेवा प्रदान करती हैं। ई-शिक्षा के समानार्थक शब्दों के रूप में सीबीटी (CBT) (कंप्यूटर आधारित प्रशिक्षा), आईबीटी (IBT) (इंटरनेट-आधारित प्रशिक्षा) या डब्ल्यूबीटी (WBT) (वेब-आधारित प्रशिक्षा) जैसे संक्षिप्त शब्द-रूपों का इस्तेमाल किया जाता है।

स्रोतः बिजनेस स्टैंडर्ड

अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र ने पूरे किए 20 साल

चर्चा में क्यों?

ई-शिक्षा (ई-लर्निंग) को सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक समर्थित शिक्षा और अध्यापन के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो अंतरिक्ष में 20 नवम्बर 2018 को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र ने 20 साल पूरे किए. अंतरिक्ष को करीब से जानने समझने के लिए 20 नवंबर 1998 को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र (आइएसएस) को अंतरिक्ष में स्थापित किया गया था।

मुख्य तथ्य

- यह स्टेशन 17,500 मील प्रति घंटे की रफ्तार से पृथ्वी का चक्कर लगा रहा पृथ्वी से अंतरिक्ष में भेजी गई अब तक की सबसे बड़ी वस्तु है। पृथ्वी के अधिकतर हिस्से से बिना किसी उपकरण के देखा जा सकने वाला यह केंद्र आकार में किसी फुटबाल मैदान जितना बड़ा है।
- 20 नवंबर 1998 को इस केंद्र के पहले हिस्से को भेजा गया था, जिसे नासा ने तैयार किया था। इसके बाद रूस ने अपना हिस्सा भेजा।
- एक के बाद पहुंचे हिस्से को अंतरिक्ष में ही जोड़कर केंद्र तैयार किया गया। आइएसएस का हर हिस्सा अपने आप में एक यान है जो वैज्ञानिकों की भाषा में मॉड्यूल कहलाता है। ये आपस में रोबोटिक तरीके से जुड़े रहते हैं और इनके किसी हिस्से में आई खराबी को स्वत: तरीके से ठीक कर लिया जाता है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

अंतरिक्ष स्टेशन का निर्माण और संचालन:

- स्टेशन के संचालन का काम प्रमुख रूप से अमेरिका और रूस के हाथ में है। इनके सहयोग हेतु जापान, कनाडा और यूरोपीय संघ भी शामिल हैं। इस अंतरिक्ष स्टेशन के निर्माण और संचालन में अमेरिका की नासा और रूस की स्पेस एजेंसी रॉस्कॉस्मॉस की प्रमुख भागेदारी होती है।
- 1500 खोजों में खगोल विज्ञान से जुड़े मामलों की बड़ी हिस्सेदारी है। इसके अलावा जीव विज्ञान, भौतिकी, मौसम विज्ञान और अन्य क्षेत्रों में अहम शोध हुए है। आकाशीय बिजली की तस्वीर जैसे छोटे काम से लेकर डार्क मैटर की खोज की जा चुकी है. डस्ट प्लाज्मा में छिद्र का पता यहीं लगा।
- इस केंद्र के रखरखाव पर वर्ष 2010 तक 150 अरब डॉलर खर्च हो चुका था जिसमें सबसे बड़ा हिस्सा नासा द्वारा वहन किया गया। इस स्टेशन को चलाने और अनुसंधान कार्यों हेतु रूस द्वारा वर्ष 2024 तक का और अमेरिका द्वारा वर्ष 2025 तक का बजट पारित किया जा चुका है। इनके अलावा इन्हें जापान, कनाडा और अन्य सदस्य देश भी फंड करते हैं।

अंतरराष्ट्रीय अन्तरिक्ष केन्द्र:

- अंतरराष्ट्रीय अन्तरिक्ष केन्द्र (आईएसएस) बाहरी अन्तरिक्ष में अनुसंधान सुविधा या शोध स्थल है जिसे पृथ्वी की निकटवर्ती कक्षा में स्थापित किया है. आईएसएस कार्यक्रम विश्व की कई स्पेस एजेंसियों का संयुक्त उपक्रम है।
- इसे बनाने में संयुक्त राज्य की नासा के साथ रूस की रशियन फेडरल स्पेस एजेंसी (आरकेए), जापान एयरोस्पेस एक्सप्लोरेशन एजेंसी (जेएएक्सए), कनाडा की कनेडियन स्पेस एजेंसी (सीएसए) और यूरोपीय देशों की संयुक्त यूरोपीयन स्पेस एजेंसी (ईएसए) काम कर रही हैं।
- इनके अतिरिक्त ब्राजीलियन स्पेस एजेंसी (एईबी) भी कुछ अनुबंधों के साथ नासा के साथ कार्यरत है। इसी तरह इटालियन स्पेस एजेंसी (एएसआई) भी कुछ अलग अनुबंधों के साथ कार्यरत है।
- अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन अंतरिक्ष में स्थित एक वेधशाला के तौर पर कार्य करता है। अन्य अंतरिक्ष यानों के मुकाबले इसके कई फायदे हैं जिसमें इसमें रहने वाले एस्ट्रोनॉट्स को अधिक समय तक अंतरिक्ष में रहकर काम करने का मौका मिलता है।

स्रोत: द हिंदू

वैज्ञानिकों द्वारा किलोग्राम की परिभाषा बदले जाने की घोषणा

चर्चा में क्यों?

- वैज्ञानिकों ने 16 नवंबर 2018 को सर्वसम्मति से किलोग्राम की परिभाषा बदलने का निर्णय लिया है. इस नई परिभाषा के परिणामस्वरूप पेरिस में 1889 में अपनाए गए प्लैटिनम अलॉय सिलिंडर का उपयोग बंद हो जाएगा।
- प्लैंक कांस्टेंट द्वारा पुनर्परिभाषित नए सिस्टम में द्रव्यमान की यूनिट इलेक्ट्रिकल फोर्स के जरिए निर्धारित होती है। ये नए बदलाव 20 मई 2019 से वर्ल्ड मेट्रोलोजी डे पर प्रभाव में आएंगे।

मुख्य तथ्य

- वैज्ञानिकों ने किलोग्राम की परिभाषा बदल दी है। नई परिभाषा को 50 से ज्यादा देशों ने सर्वसम्मति से मंजूरी भी दे दी है।
- वर्तमान में इसे प्लेटिनम से बनी एक सिल के वजन से परिभाषित किया जाता है जिसे 'ली ग्रैंड के' (Le Grand K) कहा जाता है। ऐसी एक सिल पश्चिमी पेरिस में इंटरनेशनल ब्यूरो ऑफ वेट्स एंड मेजर्स (बीआईपीएम) के पास साल 1889 से बंद है।
- वैज्ञानिकों का पक्ष था कि किलोग्राम को यांत्रिक और विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा के आधार पर परिभाषित किया जाए।
- भविष्य में किलोग्राम को किब्बल या वाट बैलेंस का उपयोग करके मापा जाएगा। यह एक ऐसा उपकरण है जो यांत्रिक और विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा का उपयोग करके सटीक गणना करता है।
- ऐसा होने पर किलोग्राम की परिभाषा न बदली जा सकेगी और न ही इसे कोई नुकसान पहुँचाया जा सकेगा। यह न केवल फ्रांस में बल्कि दुनिया में कहीं भी वैज्ञानिकों को एक किलो का सटीक माप उपलब्ध करवाएगा।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

अंतरराष्ट्रीय मानक प्रणाली में किलो

- अंतरराष्ट्रीय मानक प्रणाली में किलो सात बेसिक यूनिट्स में से एक है। उनमें से चार हैं- किलो, एंपियर (विद्युत प्रवाह), केल्विन (ताप) और मोल (पार्टिकल नंबर). किलोग्राम अंतिम एसआई बेस यूनिट है जो अभी तक एक फिजीकल ऑब्जेक्ट द्वारा परिभाषित है।

क्यों किया गया परिवर्तन?

- 19वीं शताब्दी में फ्रांस के अंतरराष्ट्रीय ब्यूरो ऑफ वेट एंड मेजर्स (BIPM) के दफ्तर में एक कांच के कटोरे में प्लेटिनम इरीडियम धातु (Le Grand K) का एक टुकड़ा रखा गया था। इसका आकार सिलिंडर के जैसा है।
- ली ग्रैंड के' लंदन में निर्मित 90 प्रतिशत प्लेटिनम और दस प्रतिशत इरिडियम से बना 4 सेंटीमीटर का एक सिलेंडर है, जो पश्चिमी पेरिस के सीमांत सेवरे में इंटरनेशनल ब्यूरो ऑफ वेट्स एंड मेजर्स (बीआईपीएम) के वॉल्ट में साल 1889 से बंद है।
- वैज्ञानिकों का मानना है कि फिजीकल ऑब्जेक्ट आसानी से परमाणु को खो सकते हैं या हवा से अणुओं को अवशोषित कर सकते हैं, इसी कारण इसकी मात्रा माइक्रोग्राम में दसियों बार बदली गई थी।
- इसका अर्थ यह हुआ कि किलोग्राम और स्तर मापने के लिए दुनिया भर में प्रोटोटाइप का उपयोग किया जाता है। सामान्य जीवन में इसे मापा नहीं जा सकता लेकिन वैज्ञानिक दृष्टिकोण के लिए यह समस्या पैदा कर सकता है।

स्रोतः द हिंदू

नवगठित नवाचार परिषद का उद्घाटन

चर्चा में क्यों?

- देशभर के उच्च शिक्षण संस्थानों में नवाचार की संस्कृति को व्यवस्थित ढंग से प्रोत्साहित करने के लिये मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने 21 नवम्बर 2018 को अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) में एक 'नवोन्मेष प्रकोष्ठ' स्थापित किया।
- मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए मंत्रालय के नवोन्मेष प्रकोष्ठ के 'प्रतिष्ठान की नवोन्मेष परिषद' कार्यक्रम की शुरूआत की। मंत्रालय की विज्ञप्ति के अनुसार, इसका उद्देश्य देशभर के उच्च शिक्षण संस्थानों में नवाचार की संस्कृति को व्यवस्थित ढंग से प्रोत्साहित करना है।

मुख्य तथ्य

- यह देश में नवाचार को संस्थागत बनाने और एक वैज्ञानिक प्रकृति विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।
- मंत्री द्वारा बताया गया कि 1000 से अधिक उच्च शिक्षण संस्थानों ने पहले से ही अपने परिसरों में आईआईसी का गठन कर लिया है और मंत्रालय के नवोन्मेष प्रकोष्ठ द्वारा व्यवस्थित आईआईसी नेटवर्क के लिए नामांकित किया है।
- अब भारतीय विश्वविद्यालय भी संस्थान के नवोन्मेष परिषद कार्यक्रम के जरिए अनुसंधान केन्द्र स्थापित कर रहे हैं और उन्हें उम्मीद है कि इस पहल के जरिए अगले दो-तीन वर्षों में वैश्विक नव-परिवर्तन रैंकिंग में अच्छे रैंक तक पहुंच सकते हैं।
- उच्च शिक्षा में शैक्षणिक दृष्टि से तभी आगे बढ़ा जा सकता है जब हम नवोन्मेष में सर्वश्रेष्ठ कार्य प्रणालियों को प्रोत्साहित करें, अनुसंधान को आगे बढ़ाएं।
- नवोन्मेष प्रकोष्ठ ने इस दिशा में अनेक पहल की हैं जैसे नवोन्मेष उपलब्धि पर संस्थानों की अटल रैंकिंग (एआरआईआईए), स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन (एसआईएच)-2019 आदि जैसे कार्यक्रमों को लागू किया गया है।

उद्देश्य

- उच्च शिक्षण संस्थानों में नवोन्मेष परिषद (आईआईसी) का नेटवर्क बनाने का उद्देश्य युवा छात्रों के रचनात्मक वर्षों में उनकी अद्भुत कल्पनाओं और कार्य विधियों को प्रदर्शित करके उन्हें प्रोत्साहित, प्रेरित और विकसित करना है।

स्रोतः पीआईबी

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

आईआईटी मद्रास ने भारत का पहला स्वदेशी माइक्रोप्रोसेसर 'शक्ति' तैयार किया

चर्चा में क्यों?

- भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास ने भारत का पहला स्वदेशी माइक्रोप्रोसेसर विकसित और डिजाईन किया है। इस माइक्रोप्रोसेसर को 'शक्ति' नाम दिया गया है।
- यह स्वदेशी माइक्रोप्रोसेसर जल्द मोबाइल फोन, सर्विलांस कैमरा और स्मार्ट मीटर्स को ताकत देने में सहायता करेगा। इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन, चंडीगढ़ की सेमी कंडक्टर लैब में माइक्रोचिप के साथ इसे बनाया गया है।

स्वदेशी माइक्रोप्रोसेसर

- आईआईटीएम की राइज लैब के लीड रिसर्चर प्रफेसर कामकोटी वीजीनाथन का कहना है कि वर्तमान डिजिटल इंडिया में बहुत सारी एप्स को कस्टमाइज्ड प्रोसेसर कोर की आवश्यकता रहती है।
- हमारे नए डिजाइन के साथ ये सभी चीजें काफी आसान हो जाएंगी।
- इससे आयात की गई माइक्रो चिप पर निर्भरता कम होगी. साथ ही इन माइक्रो चिप की वजह से होने वाले साइबर अटैक का खतरा भी कम होगा।
- सभी कंप्यूटिंग और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का मस्तिष्क ऐसे कई माइक्रोप्रोसेसरों से जुड़ा है, जो उच्च गति प्रणालियों और सुपर कंप्यूटरों को संचालित करने के लिए उपयोग किए जाते है।
- जुलाई में आईआईटी मद्रास के शुरुआती बैच ने 300 चिप डिजाइन की थी, जिन्हें अमेरिका के ऑरेगन में इंटेल की फैसिलिटी में जोड़ा गया था।
- अब यह देश में ही तैयार किया गया माइक्रो प्रोसेसर पूरी तरह भारतीय है।
- भारत में बना माइक्रोप्रोसेसर 180 एनएम का है, जबकि अमेरिका में बना प्रोसेसर 20 एनएम का है।

माइक्रोप्रोसेसर क्या होता है?

- माइक्रोप्रोसेसर एक ऐसी डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक युक्ति है जिसमें लाखों ट्रांजिस्टरों को एकीकृत परिपथ (इंटीग्रेटेड सर्किट या आईसी) के रूप में प्रयोग कर तैयार किया जाता है। इससे कंप्यूटर के केन्द्रीय प्रक्रमण इकाई (सीपीयू) की तरह भी काम लिया जाता है। इंटीग्रेटेड सर्किट के आविष्कार से ही आगे चलकर माइक्रोप्रोसेसर के निर्माण का रास्ता खुला था. माइक्रोप्रोसेसर के अस्तित्व में आने के पूर्व सीपीयू अलग-अलग इलेक्ट्रॉनिक अवयवों को जोड़कर बनाए जाते थे या फिर लघुस्तरीय एकीकरण वाले परिपथों से. सबसे पहला माइक्रोप्रोसेसर 1970 में बना था।

स्रोतः द हिंदू

विश्वभर में मुफ्त वाईफाई के लिए चीनी कंपनी 272 सैटेलाइट लॉन्च करेगी

चर्चा में क्यों?

- चीन की एक प्राइवेट कंपनी द्वारा घोषणा की गई है कि वह पूरी दुनिया में मुफ्त वाईफाई देने के लिए 272 सैटेलाइट लॉन्च करेगी। यह सैटेलाइट अपनी क्षमता से विश्व के किसी भी कोने में रहने वाले व्यक्ति को इंटरनेट का लाभ उठाने में सक्षम बना सकेंगे।
- चीनी कंपनी लिंकश्योर ने बताया कि इस सैटेलाइट को अगले साल चीन के जिऊक्वॉन सैटेलाइट लॉन्च सेंटर से लॉन्च किया जाएगा और 2020 तक अंतरिक्ष में इस तरह की 10 सैटेलाइट पहुंचाई जाएंगी। वहीं कंपनी का लक्ष्य 2026 तक ऐसी 272 सैटेलाइट पहुंचाने का है।

मुख्य तथ्य

- भारत में बना माइक्रोप्रोसेसर 180 एनएम का है, जबकि अमेरिका में बना प्रोसेसर 20 एनएम का है।
- लिंकश्योर की सीईओ वांग जिंग्याइंग ने मीडिया को बताया कि उनकी कंपनी इस प्रोजेक्ट पर 3 बिलियन युआन (करीब 30 अरब रुपए) का निवेश करने की तैयारी कर रही है।
- इस दिशा में पहला सैटेलाइट की मदद से फ्री इंटरनेट एक्सेस देने के लिए गूगल, स्पेस एक्स, वन वेब और टेलीसैट जैसी कई कंपनियां तैयारी कर रहीं हैं।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

- चीन के पश्चिमोत्तर में स्थित गांसू प्रांत में स्थित जियुकान सेटेलाइट लांच सेंटर से अगले साल लांच किया जाएगा और 2020 तक अंतरिक्ष में ऐसे 10 उपग्रह भेजे जाने की योजना बनाई गई है।
- संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार, 3.9 अरब लोग 2017 के अंत तक भी इंटरनेट की पहुंच से दूर थे।
- बैंक ऑफ अमेरिका मेरिल लिंच ने अनुमान लगाया है कि 2045 तक दुनिया की स्पेस इंडस्ट्री का मार्केट 2.7 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच सकता है।

क्या लाभ होगा?

- विश्व में ऐसे कई स्थान है, दुर्गम स्थल हैं जहां टेलीकॉम नेटवर्क लगाना नामुमकिन है। इस कारण वहां रहने वाले लोग इंटरनेट का उपयोग नहीं कर पाते हैं। इस सैटेलाइट के अंतरिक्ष में पहुंचने के बाद लोग इन स्थानों से भी अपने मोबाइल फोन की मदद से फ्री वाई-फाई का इस्तेमाल कर सकते हैं, जहां टेलीकॉम नेटवर्क की पहुंच नहीं है।

स्रोतः द हिंदू

इसरो ने सफलतापूर्वक 8 देशों के 30 सैटेलाइट लॉन्च किये

चर्चा में क्यों?

- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने अपने पोलर सैटेलाइट लॉन्च वीइकल (पीएसएलवी) सी-43 की मदद से 29 नवंबर 2018 को आठ देशों ने 30 सैटेलाइट लॉन्च किये. विदेशी उपग्रहों में 23 अमेरिका से हैं। इस लॉन्च लिए एक दिन पूर्व श्रीहरिकोटा के सतीश धवन स्पेस सेंटर में उल्टी गिनती शुरू हो गई थी यह पीएसएलवी की 45वीं उड़ान है।

मुख्य तथ्य

- एचवाईएसआईएस (HysIS) इस मिशन का प्राथमिक सैटेलाइट है।
- एचवाईएसआईएस उपग्रह का प्राथमिक उद्देश्य पृथ्वी की सतह के साथ इलेक्ट्रोमैग्नेटिक स्पैक्ट्रम में इंफ्रारेड एवं शॉर्ट वेव इंफ्रारेड क्षेत्रों का अध्ययन करना है।
- इसरो ने कहा कि यह सैटेलाइट सूर्य की कक्षा में 97.957 डिग्री के झुकाव के साथ स्थापित होगा किया जाएगा।
- जिन देशों के उपग्रह भेजे गये हैं उनमें इसमें 23 सैटेलाइट अमेरिका के हैं जबकि आस्ट्रेलिया, कनाडा, कोलंबिया, फिनलैंड, मलेशिया, नीदरलैंड और स्पेन की एक-एक सैटेलाइट शामिल हैं।
- इससे पूर्व 14 नवंबर को एजेंसी ने अपना हालिया संचार सैटेलाइट जीसैट-29 लॉन्च किया था।

स्मरणीय तथ्य

- पीएसएलवी की प्रक्षेपण प्रक्रिया चार चरणों में पूरी होगी।
- पीएसएलवी-सी 43 का भार 380 किग्रा है।
- इनमें एक छोटा और 29 नैनो सैटेलाइट शामिल हैं।
- 31 सैटेलाइटों का कुल भार 261.5 किग्रा है।
- यह मिशन 112 मिनट में पूरा हुआ।
- एचवाईएसआईएस (HysIS) की आयु करीब 5 साल है।

पीएसएलवी

ध्रुवीय उपग्रह प्रमोचन वाहन (पीएसएलवी), विश्व के सर्वाधिक विश्वसनीय प्रमोचन वाहनों में से एक है. यह गत 20 वर्षो से भी अधिक समय से अपनी सेवाएं उपलब्ध करा रहा है तथा इसने चंद्रयान-1, मंगल कक्षित्र मिशन, अंतरिक्ष कैप्सूल पुनःप्रापण प्रयोग (स्पेस कैप्सूल रिकवरी एक्सपरिमेंट), भारतीय क्षेत्रीय दिशानिर्देशन उपग्रह प्रणाली (आईआरएनएसएस) आदि जैसे अनेक ऐतिहासिक मिशनों के लिए उपग्रहों का प्रमोचन किया है। प्रमोचन सेवादाता के रूप में पीएसएलवी कई संगठनों की पहली पसंद है तथा इसने 19 देशों के 40 से अधिक उपग्रहों को प्रमोचित किया है। सन् 2 008 में इसने एक प्रमोचन में सर्वाधिक, 10 उपग्रहों को विभिन्न निम्न पृथ्वी कक्षा में स्थापित करने का रिकार्ड बनाया था।

स्रोतः द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

नासा का 'मार्स इनसाइट लैंडर' मंगल ग्रह पर उतरा

चर्चा में क्यों?

नासा का इनसाइट लैंडर मंगल ग्रह की सतह पर सुरक्षित उतर गया है। यह यान 26-27 नवंबर 2018 की रात भारतीय समयानुसार 1 बजकर 24 मिनट पर मंगल ग्रह की सतह पर पहुंचा।

मुख्य तथ्य

- यह ग्रह की सतह पर उतरने के दौरान 12,300 मील प्रति घंटे की रफ्तार से छह मिनट के भीतर शून्य की रफ्तार पर आ गया।
- नासा ने इस यान को मंगल ग्रह के निर्माण की प्रक्रिया को समझने के लिए और इस ग्रह से जुड़े नए तथ्यों का पता लगाने के लिए तैयार किया है।
- मार्स 'इंटीरियर एक्सप्लोरेशन यूजिंग सीस्मिक इंवेस्टिगेशंस, जियोडेसी एंड हीट ट्रांसपोर्ट' (इनसाइट) लेंडर को मई 2018 में लॉन्च किया गया था।
- इससे पहले वर्ष 2012 में 'क्यूरियोसिटी रोवर' के को भेजा गया था जिसने मंगल ग्रह के बारे में पुख्ता जानकारियां पृथ्वी पर भेजी थीं।

इनसाइट (InSight) मिशन

- नासा का यह यान सिस्मोमीटर की मदद से मंगल की आंतरिक परिस्थितियों का अध्ययन करेगा।
- सौर ऊर्जा और बैटरी से ऊर्जा पाने वाले लैंडर को 26 महीने तक संचालित होने के लिए डिजाइन किया गया है।
- नासा का यह यान लाल ग्रह की जानकारियां पृथ्वी पर भेजेगा। यह यान ग्रह की आंतरिक संचरना का अध्ययन करने के लिए सिस्मोमीटर का उपयोग करेगा।
- इससे यह पता लगाने में मदद मिलेगी कि मंगल का निर्माण कैसे हुआ और यह पृथ्वी से इतना अलग क्यों है।
- इनसाइट प्रोजेक्ट के प्रमुख वैज्ञानिक ब्रूस बैनर्ट ने कहा कि यह एक परियोजना एक टाइम मशीन की तरह है है, जो यह पता लगाएगी कि 4.5 अरब साल पहले मंगल, धरती और चंद्रमा जैसे पथरीले ग्रह कैसे बने।

इनसाइट (InSight) यान की विशेषताएं

- लगभग 358 किलोग्राम के इनसाइट का पूरा नाम 'इंटीरियर एक्सप्लोरेशन यूजिंग सिस्मिक इन्वेस्टिगेशंस' है।
- सौर ऊर्जा और बैटरी से चलने वाला यह यान 26 महीने तक काम करने के लिए डिजाइन किया गया है।
- नासा के इस यान में 1 बिलियन डॉलर यानी 70 अरब रुपए का खर्च आया है।
- 7000 करोड़ के इस मिशन में यूएस, जर्मनी, फ्रांस और यूरोप समेत 10 से ज्यादा देशों के वैज्ञानिक शामिल हैं।
- इसका मुख्य उपकरण सिस्मोमीटर (भूकंपमापी) है, जिसे फ्रांसीसी अंतरिक्ष एजेंसी ने बनाया है।
- लैंडिंग के बाद 'रोबोटिक आर्म' सतह पर सेस्मोमीटर लगाएगा. दूसरा मुख्य उपकरण 'सेल्फ हैमरिंग' है जो ग्रह की सतह में ऊष्मा के प्रवाह को दर्ज करेगा।
- नासा ने इनसाइट को लैंड कराने के लिए इलीशियम प्लैनिशिया नाम की लैंडिंग साइट चुनी। इससे सीस्मोमीटर लगाने और सतह को ड्रिल करना आसान हुआ।
- इनसाइट की मंगल के वातावरण में प्रवेश के दौरान अनुमानित गति 12,300 मील प्रति घंटा रही।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

उत्तराखंड में देश का पहला एचसीआई टेक्नोलॉजी स्टेट डेटा सेंटर खुला

चर्चा में क्यों?

- उत्तराखंड के मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत ने 26 नवम्बर 2018 को देहरादून में देश के पहले हाइपर कन्वर्जड इन्फ्रास्ट्रक्चर (एचसीआई) टेक्नोलॉजी युक्त स्टेट डेटा सेंटर का उद्घाटन किया। उन्होंने इस मौके पर कहा कि इस सेंटर से सरकारी विभागों की सभी जानकारियां एक ही जगह उपलब्ध होंगी तथा इसके साथ ही हमारे कार्यो में गति तेज होगी तथा ऊर्जा की बचत होगी।
- उत्तराखण्ड सरकार की सूचना प्रौद्योगिकी विकास एजेंसी (आईटीडीए) द्वारा विकसित यह 3-टीयर राज्य डेटा सेन्टर 100 प्रतिशत सॉफ्टवेयर आधारित एचसीआई तकनीक युक्त देश का पहला डेटा सेन्टर है।
- डेटा सेंटर से नीतियां बनाने में राज्य सरकार को मदद मिलेगी. इसमें सभी विभागों से जुड़ी सूचनाएं एकत्रित होंगी।

एचसीआई टेक्नोलॉजी स्टेट डेटा सेंटर:

- इस सेंटर की क्षमता 105 टीबी से बढ़ाकर 12,000 टीबी तक की जा सकती है।
- इसे बिजली उपयोग कम करने और बिजली दक्षता बढ़ाने हेतु हरित परिकल्पना पर विकसित किया गया है।
- अत्याधुनिक स्टेट डाटा सेन्टर की स्थापना से सरकार के सभी विभागों की जानकारियां एक ही स्थान पर उपलब्ध होंगी तथा हमारे कार्यो में गति तेज होने के साथ ही ऊर्जा की बचत भी होगी।
- यह सेंटर राज्य सरकार के विभिन्न विभागों को सभी प्रकार की सुरक्षित, विश्वसनीय, कुशल और हर समय उपलब्ध रहने वाली डिजिटल सेवाएं प्रदान करेगा।
- उत्तराखण्ड स्टेट डाटा सेन्टर को बिजली के उपयोग को कम करने व बिजली दक्षता बढ़ाने हेतु ग्रीन कांसेप्ट पर विकसित किया गया हैं।
- यह विभिन्न विभागों के लिए एक साझा डाटा सेन्टर है जिसके माध्यम से विभाग अपनी आईटी जरूरतें सामान्य निजी क्लाउड पर पूरी कर सकते है।
- आधुनिक बायोमेट्रिक प्रणाली एवं 24 घंटे सीसीटीवी निगरानी स्टेट डाटा सेन्टर को और अधिक सुरक्षित व विश्वसनीय बनाते हैं।

डाटा सेंटर खुलने से प्रदेश के लोगों को फायदे:

- डाटा सेंटर खुलने से प्रदेश के लोगों को सभी नागरिक सेवाओं का लाभ एक स्थान पर मिल सकेगा। इससे योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता आएगी। साथ ही साथ समय, धन और मानव संसाधन की भी बचत होगी।

पृष्ठभूमि:

- वर्ष 2008 से डाटा सेंटर बनाने की कयावद चल रही थी। जो वर्ष 2018 में बनकर तैयार हुई। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत ने कहा कि डाटा सेंटर हाई स्पीड इंटरनेट सेवा से जुड़ा हुआ है। यह प्रधानमंत्री के डिजिटल इंडिया के सपने को साकार करने में अहम भूमिका निभाएगा। स्टेट डाटा सेंटर के स्थापित होने से डिजिटल क्षेत्र में अपार संभावनाएं खुलने की आशा है।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

दुनिया भर के मलेरिया के कुल मामलों में से 80% मामले भारत और अफ्रीकी देशों से: डब्ल्यूएचओ

चर्चा में क्यों?

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की रिपोर्ट के मुताबिक, दुनियाभर में पिछले साल (वर्ष 2017) मलेरिया के 80% मामले नाइजीरिया, कॉन्गो, युगांडा, मोजांबिक व मेडागास्कर समेत 15 अफ्रीकी देशों और भारत में दर्ज हुए।
- बतौर डब्ल्यूएचओ, भारत में 2017 में 2016 के मुकाबले मलेरिया के कम मामले सामने आए और रिपोर्ट के अनुसार भारत में 1.25 अरब लोग इस मच्छर जनित बीमारी की चपेट में आने की कगार पर थे।

रिपोर्ट से संबंधित मुख्य तथ्य:

- हालांकि डब्ल्यूएचओ की 2018 के लिए विश्व मलेरिया रिपोर्ट में एक सकारात्मक बात भी कही गई है जिसके मुताबिक भारत एकमात्र ऐसा देश है जिसने वर्ष 2016 के मुकाबले वर्ष 2017 में मलेरिया के मामलों को घटाने में प्रगति की है।
- विश्व भर में मलेरिया के करीब आधे मामले पांच देशों से सामने आए जिनमें नाइजीरिया (25 प्रतिशत), कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (11 प्रतिशत), मोजाम्बिक (पांच प्रतिशत) और भारत व युगांडा से चार-चार प्रतिशत मामले देखे गए।
- रिपोर्ट के मुताबिक भारत में 2016 की तुलना में 2017 में मलेरिया के तीस लाख यानी तकरीबन 24 प्रतिशत मामलों में कमी आई है। उड़ीसा, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल मलेरिया से सबसे ज्यादा प्रभावित राज्य हैं।
- रिपोर्ट में कहा गया है कि कुल मिलाकर विश्व भर में मलेरिया के 80 प्रतिशत मामले 15 उप सहारा अफ्रीकी देशों और भारत से थे। भारत में 1.25 अरब लोगों पर मलेरिया की चपेट में आने का जोखिम था।
- रिपोर्ट के मुताबिक भारत उन देशों में से है जिन्होंने इलाज में असफलता की उच्च दर का पता लगाया और फिर अपनी इलाज संबंधी नीतियों में बदलाव किया।
- भारत और इंडोनेशिया वर्ष 2020 तक मलेरिया के मामलों में 20 से 40 फीसदी की कमी लाने की राह पर हैं। मलेरिया से प्रत्येक वर्ष, एक अनुमान के अनुसार 660,000 लोगों की जान जाती है।
- हालांकि, 2017 में वर्ष 2016 के मुकाबले पूरी दुनिया में मलेरिया के मामलों में कमी देखी गई है. वर्ष 2016 में 219 मिलियन केस मिले थे, जबकि 2017 में इनकी संख्या 217 रही।

मलेरिया मुक्त भारत:

- वर्ष 2030 तक दुनिया को मलेरिया मुक्त बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इससे तीन साल पहले यानी वर्ष 2027 तक भारत खुद को मलेरिया मुक्त घोषित करने की कोशिश में है।

मलेरिया क्या है?

- मलेरिया प्लाज्मोडियम नाम के पैरासाइट से होने वाली बीमारी है। यह मादा एनोफिलीज मच्छर के काटने से होता है। ये मच्छर गंदे पानी में पनपता है। आमतौर पर मलेरिया के मच्छर रात में ही ज्यादा काटते हैं। कुछ मामलों में मलेरिया अंदर ही अंदर बढ़ता रहता है। ऐसे में बुखार ज्यादा न होकर कमजोरी होने लगती है और एक स्टेज पर मरीज को हीमोग्लोबिन की कमी हो जाती है।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारतीय सहयोगी एवं स्वास्थ्य सेवा परिषद के गठन को मंजूरी

चर्चा में क्यों?

- केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने 22 नवंबर 2018 को सहयोगी एवं स्वास्थ्य सेवा प्रोफेशनलों द्वारा दी जाने वाली शिक्षा एवं सेवाओं के नियमन और मानकीकरण के लिए सहयोगी एवं स्वास्थ्य सेवा पेशा विधेयक 2018 को मंजूरी दे दी है। यह बैठक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में हुई।
- इस विधेयक में एक भारतीय सहयोगी एवं स्वास्थ्य सेवा परिषद और संबंधित राज्य सहयोगी एवं स्वास्थ्य सेवा परिषदों के गठन का प्रावधान किया गया है, जो सहयोगी एवं स्वास्थ्य सेवा पेशों के लिए एक मानक निर्धारक और सुविधाप्रदाता की भूमिका निभाएंगी।

मुख्य तथ्य:

- केन्द्रीय एवं संबंधित राज्य सहयोगी एवं स्वास्थ्य सेवा परिषदों में सहयोगी एवं स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े विषयों में 53 पेशों सहित 15 प्रमुख प्रोफेशनल श्रेणियां होंगी।
- विधेयक में केन्द्रीय परिषद और राज्य परिषदों की संरचना, गठन, स्वरूप एवं कार्यकलापों का उल्लेख किया गया है जैसे कि नीतियां एवं मानक तैयार करना, प्रोफेशनल आचरण का नियमन, लाइव रजिस्टरों का सृजन एवं रखरखाव, कॉमन एंट्री एवं एक्जिट परीक्षाओं के लिए प्रावधान इत्यादि।
- केन्द्रीय एवं राज्य परिषदों के अधीनस्थ प्रोफेशनल सलाहकार निकाय विभिन्न मुद्दों पर स्वतंत्र ढंग से गौर करेंगे और विशिष्ट मान्यता प्राप्त श्रेणियों से संबंधित सिफारिशें पेश करेंगे।
- इस विधेयक को दायरे में आने वाले किसी भी पेशे से जुड़े किसी भी अन्य मौजूदा कानून से ऊपर माना जाएगा।
- राज्य परिषद सहयोगी एवं स्वास्थ्य सेवा संस्थानों को मान्यता देने का कार्य करेगी।
- कदाचार की रोकथाम के लिए विधेयक में अपराधों एवं जुर्माने से जुड़े अनुच्छेद को शामिल किया गया है।
- नियम-कायदे बनाने और कोई अनुसूची जोड़ने अथवा किसी अनुसूची में संशोधन करने के लिए केन्द्र सरकार को भी परिषद को निर्देश देने का अधिकार दिया गया है।
- विधेयक के तहत केन्द्र एवं राज्य सरकारों को भी नियम बनाने का अधिकार दिया गया है।
- अधिनियम पारित होने के 6 माह के भीतर एक अंतरिम परिषद का गठन किया जाएगा, जो केन्द्रीय परिषद का गठन होने तक दो वर्षों की अवधि के लिए प्रभार संभालेगी।
- केन्द्र एवं राज्यों में परिषद का गठन कॉरपोरेट निकाय के रूप में किया जाएगा जिसके तहत विभिन्न स्रोतों से धनराशि प्राप्त करने का प्रावधान होगा।
- आवश्यकता पड़ने पर परिषदों की सहायता क्रमश: केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा भी अनुदान सहायता के जरिए की जाएगी। हालांकि, यदि राज्य सरकार असमर्थता जताती है तो वैसी स्थिति में केन्द्र सरकार आरंभिक वर्षों के लिए राज्य परिषद को कुछ अनुदान जारी कर सकती है।

परिषद संरचना:

- केन्द्रीय परिषद में 47 सदस्य होंगे जिनमें से 14 सदस्य पदेन होंगे, जो विविध एवं संबंधित भूमिकाओं और कार्यकलापों का प्रतिनिधित्व करेंगे, जबकि शेष 33 सदस्य गैर-पदेन होंगे जो मुख्यत: 15 प्रोफेशनल श्रेणियों का प्रतिनिधित्व करेंगे।
- राज्य परिषदों की परिकल्पना केन्द्रीय परिषद को प्रतिबिंबित करने के रूप में भी की गई है, जिसमें 7 पदेन सदस्य और 21 गैर-पदेन सदस्य होंगे। गैर-पदेन सदस्यों में से ही इसके अध्यक्ष का निर्वाचन किया जाएगा।
- प्रथम चार वर्षों में कुल लागत 95 करोड़ रुपये रहने का अनुमान लगाया गया है। कुल बजट का लगभग 80 प्रतिशत (अर्थात 75 करोड़ रुपये) राज्यों के लिए निर्धारित किया जा रहा है,जबकि शेष राशि के जरिए 4 वर्षों तक केन्द्रीय परिषद के परिचालन के साथ-साथ केन्द्रीय एवं राज्य स्तरीय रजिस्टरों को तैयार करने में सहयोग दिया जाएगा।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

उद्देश्य:

- इस विधेयक का उद्देश्य मुहैया कराई जाने वाली स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़ी प्रणाली को सुदृढ़ बनाना है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि इस विधेयक से देश की पूरी आबादी और समग्र रूप से समूचा स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र लाभान्वित होगा।
- यह अनुमान लगाया गया है कि सहयोगी एवं स्वास्थ्य सेवा पेशा विधेयक, 2018 से देश में सीधे तौर पर लगभग 8-9 लाख मौजूदा सहयोगी एवं स्वास्थ्य सेवा संबंधी प्रोफेशनल और हर वर्ष कार्यबल में बड़ी संख्या में शामिल होने वाले एवं स्वास्थ्य प्रणाली में अहम योगदान देने वाले अन्य स्नातक प्रोफेशनल लाभान्वित होंगे।
- परिषद के गठन से सहयोगी एवं स्वास्थ्य सेवा से जुड़े कार्यबल के प्रोफेशनल रुख का लाभ उठाते हुए स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में योग्य, अत्यंत कुशल और उपयुक्त रोजगारों को सृजित करने का अवसर मिलेगा।
- आयुष्मान भारत के विजन अनुरूप उच्च गुणवत्ता वाली विविध स्वास्थ्य सेवाएं सुलभ हो पाएंगी, जिससे 'डॉक्टर आधारित' मॉडल के बजाय 'सुगम्य सेवा एवं टीम आधारित' मॉडल की ओर अग्रसर होना संभव हो पाएगा।

पृष्ठभूमि:

- वर्तमान स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में ऐसे अनेक सहयोगी और स्वास्थ्य सेवा प्रोफेशनल कार्यरत हैं, जो अब तक न तो चिन्हित एवं विनियमित किए गए हैं और न ही जिनका अब तक अपेक्षा के अनुरूप इस्तेमाल किया जा रहा है। सहयोगी एवं स्वास्थ्य सेवा प्रोफेशनल (एएंडएचपी) असल में स्वास्थ्य मानव संसाधन नेटवर्क का अभिन्न हिस्सा हैं और कुशल एवं दक्ष सहयोगी एवं स्वास्थ्य सेवा प्रोफेशनल इसके साथ ही स्वास्थ्य संबंधी देखभाल की लागत कम करने एवं बेहतरीन स्वास्थ्य सेवाओं तक लोगों की व्यापक पहुंच सुनिश्चित करने में अत्यंत मददगार साबित हो सकते हैं।
- वैश्विक स्तर पर सहयोगी एवं स्वास्थ्य सेवा प्रोफेशनल आरंभ में आम तौर पर न्यूनतम 3-4 वर्षों के स्नातक पूर्व (अंडरग्रैजुएट) डिग्री पाठ्यक्रम से जुड़ते हैं और वे अपने-अपने विषयों में पीएचडी स्तर की योग्यता हासिल कर सकते हैं।
- विश्व भर में ज्यादातर देशों में एक वैधानिक लाइसेंसिंग अथवा नियामकीय निकाय होता है, जो इस तरह के प्रोफेशनलों, विशेष कर सीधे तौर पर मरीजों की देखभाल करने वालों (जैसे कि फिजियोथेरेपिस्ट, पोषण विशेषज्ञ इत्यादि) अथवा मरीजों की देखभाल को सीधे तौर पर प्रभावित करने वाले पेशों से जुड़े लोगों (लैब टेक्नोलॉजिस्ट, डॉसिमेट्रिस्ट इत्यादि) की योग्यताओं एवं सक्षमताओं को लाइसेंस देने एवं प्रमाणित करने के लिए अधिकृत होता है।

स्रोत: द हिंदू

भारत-अमेरिका का 'वज्र प्रहार' नामक संयुक्त सैन्य अभ्यास राजस्थान में आयोजित

चर्चा में क्यों?

- भारत व अमेरिका की सेना के संयुक्त युद्धाभ्यास श्वज्र प्रहार-2018 का 19 नवम्बर 2018 को आरंभ हुआ। यह युद्धाभ्यास 2 दिसम्बर 2018 तक चलेगा। गौरतलब है कि एशिया की सबसे बड़ी व सेना की दक्षिण-पश्चिमी कमान द्वारा विश्व स्तरीय ट्रेनिंग नोड के रूप में स्थापित की गई महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में भारत व अमेरिका की सेना संयुक्त युद्धाभ्यास कर रही हैं
- एशिया की सबसे बड़ी व सेना की दक्षिण-पश्चिमी कमान द्वारा विश्व स्तरीय ट्रेनिंग नोड के रूप में स्थापित की गई महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में एक बार फिर भारत व अमेरिका की सेना संयुक्त युद्धाभ्यास कर रही है।

'वज्र प्रहार' के बारे में

- इस युद्ध अभ्यास में अमेरिकी सेना का प्रतिनिधित्व अमेरिकी प्रशांत कमांड के स्पेशल फोर्सेज ग्रुप द्वारा किया जा रहा है।
- इस अभ्यास में 12 दिन तक अर्धमरुस्थलीय तथा ग्रामीण परिवेश में प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- इससे दोनों देशों की सेनाओं के बीच इंटर-ओपेराबिलिटी और सैन्य सहयोग में वृद्धि होगी।
- इस अभ्यास दोनों देशों की सेनाएं बंधकों को छुड़ाने, मरुस्थलीय परिस्थिति में स्वयं को ढालने तथा कॉम्बैट फायरिंग का भ्यास करेंगी।
- प्रशिक्षण की समाप्ति के बाद तीन दिवसीय आउटडोर अभ्यास का आयोजन किया जायेगा।
- 'वज्र प्रहार' भारत-अमेरिकी विशेष बल का एक संयुक्त प्रशिक्षण अभ्यास है, जो दोनों देशों में बारी-बारी से आयोजित किया जाता है।
- इसमें भारतीय सेना के दक्षिणी कमान पुणे की विशेष बल टीम के 45 सदस्यों ने अमेरिकी सैनिकों के साथ अभ्यास किया।
- इस संयुक्त सैन्य अभ्यास का आयोजन वर्ष 2010 से किया जा रहा है।
- इस अभ्यास का पिछला संस्करण मार्च, 2017 में जोधपुर (राजस्थान) में आयोजित हुआ था।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

एयरसेवा 2.0 वेब पोर्टल लांच

चर्चा में क्यों?

- केन्द्रीय नागरिक उड्डयन एवं वाणिज्य मंत्री सुरेश प्रभु और नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री जयंत सिन्हा ने 19 नवंबर 2018 को नई दिल्ली में एयरसेवा 2.0 वेब पोर्टल और मोबाइल एप का उन्नत वर्जन लांच किया।
- इस अवसर पर नागरिक उड्डयन मंत्री ने कहा कि उपयोगकर्ताओं (यूजर) को बेहतर अनुभव प्रदान करने के उद्देश्य से एयरसेवा के एक उन्नत वर्जन के विकास की जरूरत महसूस की जा रही थी।

वेब पोर्टल से संबंधित मुख्य तथ्य:

- इस वेब पोर्टल में कई खूबियां शामिल की गई हैं। सोशल मीडिया के साथ सुरक्षित साइन-अप एवं लॉग-इन, यात्रियों की सुविधा के लिए चौटबॉट, सोशल मीडिया पर शिकायतों सहित बेहतर शिकायत प्रबंधन, वास्तविक समय पर उड़ानों की ताजा स्थिति से अवगत कराना और उड़ान कार्यक्रम से जुड़ा विस्तृत विवरण उपलब्ध कराना इन खूबियों में शामिल हैं।
- एयरसेवा के उन्नत एवं बेहतरीन वर्जन का संचालन संवादात्मक वेब पोर्टल के साथ-साथ एंड्रायड एवं आईओएस दोनों ही तरह के प्लेटफॉर्मों पर प्रभावकारी मोबाइल एप के जरिए किया जाता है। इससे यात्रियों को बाधामुक्त एवं सुविधाजनक हवाई यात्रा करने का आनंद मिलेगा।
- वेब पोर्टल और एप्लीकेशन से हवाई यात्रियों की प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों से अवगत होने में मदद मिलेगी जिससे ठोस नीतिगत कदम उठाना आसान हो जाएगा।
- इस अवसर पर सुरेश प्रभु एवं जयंत सिन्हा ने चेन्नई एयरपोर्ट को चौंपियन पुरस्कार प्रदान किया. चेन्नई एयरपोर्ट पर शत-प्रतिशत शिकायतों का निवारण एक साल के अंदर कर दिया गया है।

पृष्ठभूमि:

- विमानन मंत्रालय के अनुसार, प्रत्येक वर्ष 5 करोड़ लोग हवाई सफर करते हैं और यह संख्या निकट भविष्य में कई गुना बढ़ जाएगी। एयरसेवा के जरिए अब तक 12 हजार से ज्यादा शिकायतों का समाधान किया जा चुका है. एयरसेवा 2.0 और आगामी एयरसेवा 3.0 में प्राप्त यात्रियों के फीडबैक के आधार पर आगे की नीतियां बनाई जाएंगी।
- एयरसेवा 3.0 में डिजियात्रा का उपयोग करने वाले यात्रियों को एयरपोर्ट के डिजिटल मैप के अलावा लोकेशन ट्रैकिंग की सहूलियत भी मिलेगी। एयरसेवा पोर्टल और मोबाइल एप नवंबर 2016 में शुरू किया गया था। मंत्रालय के अनुसार एयरसेवा 1.0 को शुरू किए जाने के बाद इसके जरिये विमान यात्रियों की कई चिंताओं को दूर करने में मदद मिली है।

स्रोत: पीआईबी

संचार उपग्रह जीसैट-29 का सफल प्रक्षेपण

चर्चा में क्यों?

- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने 14 नवंबर 2018 को गाजा नामक तूफान के खतरे की आशंका के बावजूद आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा से संचार उपग्रह जीसैट-29 का सफल प्रक्षेपण किया।
- इस उपग्रह का वजन 3,423 किलोग्राम है तथा यह उपग्रह इसरो के सबसे ताकतवर रॉकेट जीएसएलवी-एमके3-डी2 के जरिए श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से लॉन्च किया गया. जीसैट-29 शाम 5:08 बजे लॉन्च किया गया। यह श्रीहरिकोटा से लॉन्च हुआ 67वां और भारत का 33वां संचार सैटेलाइट है।

लाभ

- इसरो द्वारा प्रक्षेपित किये गये जीसैट-29 उपग्रह को भारत के लिए काफी अहम माना जा रहा है। इससे जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर के दूर-दराज के इलाकों में इंटरनेट पहुंचाने में मदद मिलेगी।
- उपग्रह में यूनिक किस्म का हाई रिजॉल्यूशन कैमरा लगा है। इसे जियो आई नाम दिया गया है. इससे हिंद महासागर में जहाजों पर भी निगरानी की जा सकेगी।
- यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इस उपग्रह की मदद से भविष्य के स्पेस मिशन के लिए पहली बार इन तकनीकियों का परीक्षण किया गया है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

जीएसएलवी-एमके3-डी2 रॉकेट

- जीसैट -29 को लॉन्च करने के लिए जीएसएलवी-एमके 2 रॉकेट का इस्तेमाल किया गया है।
- इसे भारत का सबसे वजनी रॉकेट माना जाता है, जिसका वजन 640 टन है।
- इस रॉकेट की सबसे खास बात यह है कि यह पूरी तरह भारत में बना है। इस पूरे प्रॉजेक्ट में 15 साल लगे हैं।
- इस रॉकेट की ऊंचाई 13 मंजिल की बिल्डिंग के बराबर है और ये चार टन तक के उपग्रह लॉन्च कर सकता है।
- अपनी पहली उड़ान में इस ने रॉकेट 3136 किलोग्राम के सैटलाइट को उसकी कक्षा में पहुंचाया था।
- इस रॉकेट में स्वदेशी तकनीक से तैयार हुआ नया क्रायोजेनिक इंजन लगा है, जिसमें लिक्विड ऑक्सीजन और हाइड्रोजन का ईंधन के तौर पर इस्तेमाल होता है।
- जीएसएलवी-एमके 2 की दूसरी उड़ान होगी, जो लॉन्च होने के बाद 10 साल तक काम करेगा।
- लॉन्च होने के बाद इसे पृथ्वी से 36,000 किमी दूर जियो स्टेशनरी ऑर्बिट (जीएसओ) में स्थापित किया गया है।

भारत के संचार उपग्रह

- दूरसंचार के प्रयोजनों के लिए संचार उपग्रह अंतरिक्ष में तैनात एक कृत्रिम उपग्रह है. भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह (इन्सैट) प्रणाली, भूस्थिर कक्षा में स्थापित नौ प्रचलनात्मक संचार उपग्रहों सहित एशिया-पेसिफिक क्षेत्र में सबसे बड़े घरेलू संचार उपग्रहों में से एक है।
- इन्सैट-1बी से शुरूआत करते हुए इसकी स्थापना 1983 में की गई. इसने भारत के संचार क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण क्रांति की शुरूआत की तथा बाद में भी इसे बरकरार रखा।
- वर्तमान में प्रचलनात्मक संचार उपग्रह है इन्सैट-3ए, इन्सैट-3सी, इन्सैट-3ई, इन्सैट-4ए, इन्सैट-4सी.आर, जीसैट-8, जीसैट-10 तथा जीसैट-12।

स्रोतः द हिंदू

छह वर्षों में भारत में कैंसर के मामलों में 15.7% वृद्धिः अध्ययन

चर्चा में क्यों?

- ग्लोबल कैंसर ऑब्जर्वेटरी (ग्लोबोकेन) द्वारा हाल ही में जारी आंकड़ों के अनुसार भारत में पिछले छह वर्षों में भारी वृद्धि दर्ज की गई है। यह आंकड़े वर्ष 2012 से 2018 तक के हैं. इन आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2018 में लगभग 11.57 लाख कैंसर के मामलें दर्ज किये गए, जो कि वर्ष 2012 में दर्ज 10 लाख मामलों की तुलना में 15.7 प्रतिशत अधिक हैं।

अध्ययन रिपोर्ट के मुख्य बिंदु

- वर्ष 2012 में कैंसर के कारण सात लाख लोगों की मौत हुई थी जबकि वर्ष 2018 में कैंसर के कारण होने वाली मौतों की संख्या में 12.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।
- अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार होंठ और ओरल कैंसर की संख्या में सबसे अधिक वृद्धि देखने को मिली है. वर्ष 2012 की तुलना में अब तक 114.2% की वृद्धि दर्ज की गई है।
- वर्ष 2018 में 1.62 लाख स्तन कैंसर के मामले सामने आए जो कि वर्ष 2012 की तुलना में10.7 प्रतिशत अधिक हैं. वर्ष 2012 के 1.45 लाख मामले सामने आये थे।
- गर्भाशय ग्रीवा कैंसर के मामलों की संख्या में 21.2 प्रतिशत की गिरावट आई है. वर्ष 2018 में मात्र 96,922 मामले ही सामने आए जबकि वर्ष 2012 में 1.23 लाख गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर के मामले दर्ज किये गए थे।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

ग्लोबोकेन

- ग्लोबोकन कैंसर नियंत्रण एवं अनुसंधान के संबंध में कैंसर के वैश्विक आँकड़े प्रस्तुत करने वाला एक इंटरैक्टिव वेब-आधारित मंच है। आईएआरसी (अंतरराष्ट्रीय कैंसर अनुसंधान एजेंसी) द्वारा हाल ही में प्रकाशित ग्लोबोकन, 2018 डेटाबेस में विश्व के 185 देशों में 36 प्रकार के कैंसर के कारण होने वाली घटनाओं और मृत्यु दरों का अनुमान व्यक्त किया गया है।

भारत में ओरल कैंसर के मामलों में बढ़ोतरी

- धूम्रपान, गुटखा या अधिक शराब पीने वाले लोगों में ओरल कैंसर का खतरा सबसे अधिक होता है। एक अनुमान के मुताबिक भारत में ओरल कैंसर के मरीज पूरे विश्व में सबसे अधिक हैं. ओरल कैंसर के करीब 90 प्रतिशत मरीज तंबाकू का सेवन करते हैं। हाल ही में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2012 की तुलना में अब तक 114.2% की वृद्धि दर्ज की गई है।
- मुंह के अंदर छाले 15 दिन यह उससे अधिक समय के बाद भी ठीक न होना, गले, मुंह में गांठ महसूस होना, आवाज में बदलाव आना, खाना निगलने में दिक्कत महसूस होना, मसूड़ों का सूजना या खून आना आदि लक्षणों के दिखने पर मुंह के कैंसर की जांच कराई जानी चाहिए।

स्रोतः द हिंदू

धर्म गार्जियन-2018: भारत और जापान के बीच संयुक्त सैन्य अभ्यास

चर्चा में क्यों?

- भारत और जापान सैन्य सहयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रथम संयुक्त सैन्य अभ्यास 'धर्म गार्जियन-2018' का आयोजन मिजोरम में शुरू हो चूका हैं। यह आयोजन 01 नवम्बर से 14 नवम्बर 2018 तक मिजोरम के वैरेंटे में स्थित काउंटर इन्सर्जेंसी वारफेयर स्कूल में हो रहा है।
- इस सैन्य अभ्यास में भारतीय सेना और जापान ग्राउंड सेल्फ डिफेंस फोर्स भाग ले रहे हैं। भारत और जापान की सेनाओं के बीच सहयोग को बढ़ावा देने के लिए पहली बार यह संयुक्त सैन्य अभ्यास हो रहा हैं।
- भारतीय दल का प्रतिनिधित्व 6/1 गोरखा रायफल्स और जापानी दल का प्रतिनिधित्व जापान ग्राउंड सेल्फ डिफेंस फोर्स की 32 इन्फैंट्री रेजीमेंट द्वारा किया जा रहा है। इस सैन्य अभ्यास से भारत और जापान की सेनाओं को सुरक्षा संबंधी चुनौतियों का सामना करने के लिए समन्वय भी बेहतर होगा।

संयुक्त सैन्य अभ्यासः

- इस संयुक्त सैन्य अभ्यास में जंगली इलाके में युधाभ्यास किया जा रहा हैं। इसका उद्देश्य दोनों देशों की सेनाओं के बीच इंटर-ओपेराबिलिटी को बढ़ावा देना हैं।
- इस युद्ध अभ्यास में दोनों देशों की सेनाएं युद्ध की स्थिति के लिए अभ्यास करेंगी तथा युद्ध के मध्यनजर योजना निर्माण तथा उसके क्रियान्वयन का अभ्यास भी करेंगी।
- इस दौरान दोनों देशों से सुरक्षा विशेषज्ञ सेना के कार्य सम्बन्धी विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार साझा करेंगे। दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग सहित सामरिक संबंधों को सुदृढ़ करने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम है।
- इस संयुक्त सैन्य अभ्यास से दोनों देशों के बीच आपसी सम्बन्ध बेहतर होंगे तथा आतंकवाद के विरुद्ध लड़ने में सहायता मिलेगी।
- इस सैन्य अभ्यास से पारंस्परिक समझ विकसित करने और एक दूसरे की सेनाओं के प्रति सम्मान भाव उत्पन्न करने में काफी मदद मिलेगी।
- इससे आतंकवाद से जुड़े वैश्विक घटनाक्रम पर करीबी नजर रखने में भी आसानी होगी। भारत और जापान के प्रगतिशील सबंधों में यह एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा। यह अभ्यास जापान की थल सेना के साथ पहला सैनिक अभ्यास हैं।

स्रोतः द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

OSIRIS – REx अभियान

चर्चा में क्यों?

दो वर्ष अन्तरिक्ष में यात्रा करने के पश्चात् NASA ds ORSIS–Rex अन्तरिक्षयान ने अपने गन्तव्य अर्थात् क्षुद्रग्रह Bennu के फोटो लेने शुरू कर दिए हैं।

OSIRIS–REx अभियान क्या है?

- OSIRIS & REx का full form है - Origins, Spectral Interpretation, Resource Identification, Security & Regolith Eñplorer-
- यह NASA के New Frontiers program का तीसरा अभियान है।
- इसके पहले इस कार्यक्रम के तहत प्लूटो और वृहस्पति की ओर क्रमशः छमू भ्वतप्रवदे और श्रनदव नामक अन्तरिक्षयान छोड़े गये थे।

अभियान के वैज्ञानिक लक्ष्य

- यह अन्तरिक्ष यान Bennu की कक्षा में तीन वर्ष रहेगा और उस क्षुद्रग्रह की थाह लेने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयोग करेगा।
- OSIRIS – REx Bennu उल्कापिंड का नक्शा तैयार करेगा और वह जगह चुनेगा जहाँ से वह नमूने जमा करेगा।
- यह अन्तरिक्ष यान उस उल्कापिंड की सतह पर फैले regolith नामक मिट्टी जैसे पदार्थ का नमूना लेगा।
- रेगोलिथ का नमूना लेने के लिए यह अन्तरिक्षयान मात्र 5 सेकंड के लिए उल्कापिंड की सतह पर आएगा और नाइट्रोजन गैस का विस्फोट करके regolith में हलचल पैदा करेगा जिससे कि वह उसको चूसकर अपने अन्दर संगृहीत कर सके।
- इसके लिए अन्तरिक्षयान में इतना nitrogen जमा कर दिया गया है जिससे तीन बार विस्फोट किया जा सके।
- NASA को आशा है कि वह 60 से लेकर 2000 ग्राम रेगोलिथ धरती पर लाया सकेगा।

Bennu ही क्यों?

- OSIRIS & REñ मिशन के लिए ठमददन को 5 लाख ज्ञात क्षुद्रग्रहों में से चुना गया था जिसके मुख्य कारण ये हैं।

पृथ्वी से निकटता

- Bennu की कक्षा पृथ्वी की कक्षा के समान है। ज्ञातव्य है कि पृथ्वी से अपेक्षाकृत निकट 7,000 क्षुद्रग्रहों में से 200 ही ऐसे क्षुद्रग्रह पृथ्वी के समान हैं और उनमें Bennu एक है।
- छोटे-छोटे क्षुद्र का व्यास 200 meter से कम का है जिसके कारण ये बड़े क्षुद्र ग्रहों की तुलना में अधिक तेजी से घूमते हैं। परिणामतः इसका regolith पदार्थ अन्तरिक्ष में बिखर सकता है। किन्तु दूसरी ओर Bennu का व्यास 500 meter का है, इसलिए यह इतना धीरे घूमता है कि इसकी रेगोलिथ उसके भूमि-तल पर टिका रह जाता है।
- Bennu की बनावट : - Bennu एक प्राथमिक क्षुद्रग्रह है अर्थात् 4 बिलियन वर्ष पहले सौरमंडल के बनने के समय से इसमें कोई खास परिवर्तन नहीं आया है। इसमें कार्बन भी बहुत है जिसका अभिप्राय यह हुआ है कि इसमें ऐसे जैव-अणु (organic molecules) भी हो सकते हैं।
- Bennu के बारे में एक और रोचक तथ्य यह है कि यह पृथ्वी के लिए खतरनाक है। प्रत्येक छठे वर्ष Bennu की कक्षा उसको पृथ्वी के 2 लाख मील के अन्दर ले आती है। इसका अर्थ यह हुआ है कि 22वीं शताब्दी के अंतिम भाग में बहुत करके यह हो सकता है कि यह क्षुद्र ग्रह पृथ्वी से टकरा जाए।

स्रोतः द हिंदू

एंटीमाइक्रोबियल स्टेवार्डशिप गाइडलाइन

चर्चा में क्यों?

- चिकित्सा से सम्बंधित स्थानों में एंटी-बायोटिक के उचित उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (ICMR) ने एंटीमाइक्रोबियल स्टेवार्डशिप गाइडलाइन निर्गत किये हैं जिनके अनुसार अस्पतालों को अपने यहाँ एंटीमाइक्रोबियल स्टेवार्डशिप कार्यक्रम (Antimicrobial Stewardship Programmes – AMSP) चलाने होंगे।

AMSP की आवश्यकता क्यों?

- आज सूक्ष्माणुओं का प्रतिरोध (Antimicrobial resistance – AMR) एक बहुत बड़ी स्वास्थ्य चुनौती बन चुका है। नए एंटी-बायोटिकों के आने की आशा बहुत कम रह गयी है, इसलिए यह आवश्यक है कि जो भी दवाइयाँ आज उपलब्ध हैं उनका उपयोग सोच समझकर किया जाए।
- भारत में एंटी-बायोटिक दवाइयों का उपयोग आवश्यकता से अधिक होता है। AMSP कार्यक्रम इन्हीं सभी बातों को ध्यान में रखते हुए अस्पतालों के लिए तैयार किया गया है।
- भारत में रोगियों को बहुत अधिक एंटी-बायोटिक दवाइयाँ दी जाती हैं। इस कारण लोगों में इनके प्रति प्रतिरोध उत्पन्न हो रहा है जोकि स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत चिंतनीय है।

सूक्ष्माणु प्रतिरोध के मुख्य कारण हैं-

- एंटी-बायोटिक औषधियों को खाने के लिए कई रोगों में बिना सोचे समझे सलाह देना।
- एंटी-बायोटिक औषधियों की बिक्री के ऊपर उचित नियंत्रण नहीं होना।
- बिना चिकित्सक की सलाह के द्वारा लेना।
- एंटी-बायोटिक दवाओं के बारे में ज्ञान और जागरूकता की कमी।
- राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति, 2017 भी यही कहती है कि सूक्ष्माणुओं का प्रतिरोध आज स्वास्थ्य की एक बहुत बड़ी समस्या है। इस नीति के अनुसार एंटी-बायोटिक के उपयोग के बारे में निर्देश निर्गत होने चाहिएँ जिनमें बिना चिकित्सक के इनकी खरीद पर रोकथाम लगाई जाए और पशुओं पर इनके प्रयोग को सीमित कर दिया जाए।

स्रोतः द हिंदू

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण

❍ क्लोरोफ्लोरो कार्बन (CFC) से निकलने वाले क्लोरीन की वायुमंडल में अनुपस्थिति के चलते ओजोन परत फिर से बनने लगे हैं।

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में NASA के एक अध्ययन से पता चला है कि क्लोरोफ्लोरो कार्बन (CFC) से निकलने वाले क्लोरीन की वायुमंडल में अनुपस्थिति के चलते ओजोन परत फिर से बनने लगे हैं।

अध्ययन से सम्बन्धित मुख्य तथ्य

- अध्ययन में वायुमंडल की रासायनिक बनावट का नक्शा तैयार किया गया था। इससे पता चला कि 2005 से लेकर 2016 तक प्रत्येक वर्ष वायुमंडल में क्लोरीन का स्तर 0.8% गिरता रहा है। यह संभवत: इसलिए हुआ है कि पूरे विश्व में CFC के उपयोग पर प्रतिबंध लग गया है। पहले भी कुछ शोधों से पता चला था कि ओजोन परत के क्षरण में कमी आई है। वैज्ञानिकों विश्वास है कि 2080 तक ओजोन परत पूरा का पूरा बन जाएगा।

ओजोन परत क्या होता है?

- ओजोन गैस पूरे पृथ्वी के ऊपर एक परत के रूप में छाया रहता है और क्षतिकारक UV किरणों के विकिरण को धरातल पर रहने वाले प्राणियों तक पहुँचने से रोकता है। इस परत को ओजोन परत कहते हैं। यह परत मुख्य रूप से समताप मंडल में होती है। इस परत की मोटाई 10-50 किलोमीटर तक होती है। इसे जीवन सहायक इसलिए माना जाता है कि इसमें कम तरंग दैर्ध्य (wave length) का प्रकाश, जो कि 300 नैनोमीटर से कम हो, को अपने में अवशोषित करने की विलक्षण क्षमता है। जहाँ पर वातावरण में ओजोन उपस्थित नहीं होगी, वहाँ सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी किरणें (UV rays) पृथ्वी पर पहुँचने लगेंगी। ये किरणें मनुष्य के साथ-साथ जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों के लिए भी बहुत खतरनाक है। ध्रुवों के ऊपर इसकी परत की मोटाई 8 km है और विषुवत् रेखा (equator line) के ऊपर इसकी मोटाई 17 km है।

ओजोन छिद्र क्या होता है?

- ओजोन छिद्र उस ओजोन परत के उस भाग को कहते हैं जहाँ वह परत झीनी पड़ गई है। यह छिद्र ध्रुवीय प्रदेशों के ऊपर स्थित है। अगर ओजोन की यह चादर और पतली हो गई तो धरती में गर्मी बढ़ेगी और पराबैंगनी किरण (ultraviolet rays@UV) समस्त प्राणियों और वनस्पतियों को मुश्किल में डाल देगी। ध्रुवों की बर्फ पिघल जाएगी, जिसके चलते समुद्र के पानी का स्तर ऊपर आएगा और फलत: तटवर्ती क्षेत्र बाढ़ की चपेट में आ जायेंगे। चर्म कैंसर के मामले ओजोन छिद्र के कारण बढ़े हैं।

CFC क्या है?

- क्लोरोफ्लूरो कार्बन (CFC) एक यौगिक गैस है जिसमें क्लोरीन, फ्लोरीन और कार्बन के तत्त्व होते हैं। हमारे एरोसोलों, वातानुकूलन पदार्थों (refrigerants) और प्लास्टिक फोम (foams) में CFC होता है। जब यह CFC हवा में प्रवेश करता है तो यह उड़ते-उड़ते ओजोन परत तक पहुँच कर ओजोन कणों को नष्ट करने लगता है। CFC 50 से 100 वर्षों तक सक्रिय रहता है।

हमारे सामने चुनौती

- CFC यौगिकों का घरेलू और औद्योगिकों क्षेत्रों में इतना ज्यादा प्रयोग हो रहा है कि उनकी जगह दूसरे रसायन को इस्तेमाल करना हमारे लिए एक बड़ी चुनौती बन गया है। अभी तक कोई विकल्प नहीं खोजा जा सका है। इन यौगिकों का प्रयोग वातानुकूलन उपकरणों में, पैकेजिंग उद्योग में, इलेक्ट्रॉनिक उद्योग में, बिजली पैदा करने में, आग को बुझाने के उपकरणों में होता है। CFC विकल्प खोजते समय हमें यह बात दिमाग में रखनी होगी कि जिस तरह CFC यौगिकों में आग नहीं लग सकती, कोई विष नहीं फैल सकता और किसी दूसरे रसायन से वे क्रिया भी नहीं करते - ये खूबियाँ उसके वैकल्पिक यौगिकों में भी होनी चाहिए। इसके साथ ही वैकल्पिक यौगिकों में ओजोन में कमी लाने का दुर्गुण या तो बिल्कुल नहीं या न के बराबर होना चाहिए।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

CFC का विकल्प

- अनुसंधानों से पता चला है कि ओजोन की परत (ozone layer) नष्ट करने में दो बातें मुख्य रूप से असर डालती हैं-
- यौगिक में मौजूद क्लोरिन का अनुपात
- वायुमंडल में तरल यौगिक के सक्रिय बने रहने का समय
- इस आधार पर जो मूल CFC खोजे गए थे उनका ओजोन विनाशक अंक एक (1) था और आग बुझाने वाले उपकरणों में विद्यमान CFC में 3 से 10 था। इस आधार पर ऐसे यौगिक खोजे जा रहे हैं जो वायुमंडल में बहुत तेजी से फैल जाएँ और ज्यादा देर तक टिके रहें।
- ऐसे यौगिकों की खोज करते हुए वैज्ञानिक हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (HFC) यौगिकों तक पहुँचे। ये टिकाऊ हैं और वायुमंडल की ऊपरी सतह तक पहुँचते-पहुँचते लगभग इनका विनाश हो जाता है। पर्यावरण की दृष्टि से यदि देखें तो CFC यौगिकों की अपेक्षा HFC यौगिक अधिक स्वीकार्य हैं इनका ओजोन विनाशक अंक शून्य से 0.05 तक है जो CFC की तुलना में बहुत कम है। लेकिन अभी नए HFC यौगिकों पर ज्यादा खोज नहीं हुई है। इस विषय में बहुत कम आँकड़े उपलब्ध हैं और इनकी सत्यता के बारे में शंकाएँ उठाई गई हैं।
- परन्तु जब तक हम सुरक्षित रसायनों और नई तकनीकों को पूरी तरह से विकसित न कर लें तब तक हमारा कर्तव्य है कि हम पृथ्वी के जीव-जंतुओं और वनस्पतियों की सुरक्षा के लिए ऐसे रसायनों का प्रयोग कम करें जो ओजोन के सुरक्षा कवच को कमजोर बना रहे हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए CFC पर पूरे विश्व में प्रतिबंध लगाया जा चुका है।

स्रोतः द हिंदू

ग्रीनहाउस गैस बुलेटिन रिपोर्ट-2018

चर्चा में क्यों?

- संयुक्त राष्ट्र के तहत जलवायु से संबंधित संस्था अंतरराष्ट्रीय मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) ने हाल ही में ग्रीनहाउस गैस बुलेटिन नाम से वार्षिक रिपोर्ट जारी की है। रिपोर्ट में बताया गया है कि वर्तमान समय में पृथ्वी के वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा रिकॉर्ड स्तर पर पहुँच गई है।
- यह रिपोर्ट वर्ष 2018 की प्रतिबद्धताओं पर आधारित है। इसमें विश्व के विभिन्न देशों द्वारा ग्रीन हाउस गैसों को लेकर उठाये गये कदमों, आवश्यकताओं, कमजोरियों तथा आंकड़ों को शामिल किया गया है।

मुख्य तथ्य

- कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड का स्तर पूर्व औद्योगिक स्तर से काफी अधिक और इसमें कमी होने की कोई संभावना दूर-दूर तक नहीं दिखाई दे रही है।
- कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसों में कटौती किये बिना जलवायु परिवर्तन का खतरा तेजी से बढ़ता जाएगा और पृथ्वी पर इसका अपरिवर्तनीय प्रभाव पड़ेगा।
- कार्बन डाइऑक्साइड व अन्य ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में भारी कटौती नहीं की गई तो जलवायु परिवर्तन का पृथ्वी के जीव-जगत पर विनाशकारी असर होगा।
- वातावरण में मौजूद आवश्यकता से अधिक कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को हटाने के लिये वर्तमान में कोई प्रभावी उपाय नहीं है।
- कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन की मात्रा में भारी कटौती करना ही जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने का एकमात्र रास्ता है।

विश्व मौसम विज्ञान संगठन

- विश्व मौसम विज्ञान संगठन एक मौसम विज्ञान संगठन है को 23 मार्च 1950 में स्थापित किया गया था।
- यह संगठन पृथ्वी के वायुमंडल की परिस्थिति और व्यवहार, महासागरों के साथ इसके संबंध, मौसम और परिणामस्वरूप जल संसाधनों के वितरण के बारे में जानकारी देने के लिये संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक संस्था है।
- कुल 191 सदस्यों वाले विश्व मौसम विज्ञान संगठन का मुख्यालय जिनेवा में स्थित है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

ग्रीन हाउस गैसों की स्थिति

- कार्बन डाइऑक्साइड: वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा 2015 और 2016 की तुलना में 2017 में अधिक हुई है। वर्ष 2017 में वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर 405.5 पीपीएम वैश्विक औसत पर पहुँच गया, जो औद्योगिक क्रांति से पहले की तुलना में ढाई गुना अधिक है। वर्ष 2016 में वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर 403.3 पीपीएम और 2015 में 400.1 पीपीएम था।
- मीथेन: 2017 में वायुमंडल में मीथेन 1859 पीपीबी (पार्ट प्रति बिलियन) के नए ऊँचे स्तर पर पहुँच गई थी। यह पूर्व-औद्योगिक स्तर से 257 प्रतिशत ज़्यादा है।
- नाइट्रस ऑक्साइड: वायुमंडल में नाइट्रस ऑक्साइड का स्तर 2017 में 329.9 पीपीबी रहा। यह पूर्व-औद्योगिक स्तर से 122 प्रतिशत अधिक है।

स्रोत: द हिंदू

केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने मौसम विज्ञान संबंधी योजनाओं को मंजूरी प्रदान की

चर्चा में क्यों?

- प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल की आर्थिक मामलों की समिति द्वारा समग्र योजना 'एटमॉस्फेयर एंड क्लाइमेट रिसर्च - मॉडलिंग ओब्सर्विंग सिस्टम्स एंड सर्विसेज' (ACROSS) की नौ उप-योजनाओं को 1450 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत से वर्ष 2017 से 2020 तक की अवधि के दौरान जारी रखने हेतु अपनी मंजूरी दे दी गई है।
- इन योजनाओं का कार्यान्वयन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा अपनी प्रमुख संस्थाओं यथा, भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD), भारतीय उष्णकटिबंध मौसम विज्ञान संस्थान (IITM), नेशनल सेंटर फॉर मीडियम रेंज वेदर फॉरकास्टिंग (NCMRWF) और भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (INCOIS) के माध्यम से किया जाएगा।

योजना के मुख्य बिंदु

- एक्रॉस (ACROSS) योजना पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से संबंधित है जो चक्रवात, तूफान, लहर, तेज गर्मी और गरज के साथ बारिश जैसे विभिन्न पहलुओं से निपटती है।
- एक्रॉस (ACROSS) योजना 9 उप-कार्यक्रमों से मिलकर बनी है जो बहु-विषयक और बहु-संस्थानीय स्वरूप की हैं। इस योजना का उद्देश्य समाज की बेहतरी के लिये एक विश्वसनीय मौसम और जलवायु पूर्वानुमान प्रदान करना है।
- इस योजना का उद्देश्य कृषि-मौसमविज्ञान संबंधी सेवाएँ, विमानन सेवाएँ, पर्यावरण संबंधी निगरानी सेवाएँ, जल-मौसमविज्ञान संबंधी सेवाएँ, जलवायु सेवाएँ, पर्यटन, तीर्थयात्रा, पर्वतारोहण जैसी सभी सेवाओं को अंतिम उपयोगकर्ता तक समय पर पहुँचाने के कार्य को सुनिश्चित करने के लिये सतत् अवलोकनों, गहन अनुसंधान विकास और प्रभावी विस्तार तथा संचार रणनीतियों को प्रभावी रूप से अपनाकर मौसम और जलवायु पूर्वानुमान की कुशलता में सुधार लाना है।
- मौसम आधारित सेवाओं को आम लोगों तक पहुँचाने हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का कृषि विज्ञान केंद्र, विश्वविद्यालय और स्थानीय नगर पालिकाओं जैसी एजेंसियों के इसमें शामिल होने से एवं बड़ी संख्या में वैज्ञानिक तथा तकनीकी कर्मियों के साथ-साथ आवश्यक प्रशासनिक सहायता की जरूरत के कारण इस योजना द्वारा बेहतर रोजगार का सृजन होगा।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय

- राष्ट्रपति की अधिसूचना के माध्यम से 12 जुलाई, 2006 को नए पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस) की स्थापना की गई जिसमें भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD), भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान (IITM) और राष्ट्रीय मध्यम अवधि मौसम पूर्वानुमान केंद्र (NCRWFM) को इसके प्रशासनिक नियंत्रण में लाया गया।
- सरकार ने अंतरिक्ष और परमाणु ऊर्जा आयोग के तर्ज पर पृथ्वी आयोग की स्थापना को भी अनुमोदन प्रदान कर दिया है।
- पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के पास मौसम, जलवायु और प्राकृतिक खतरे से संबंधित घटनाओं का पूर्वानुमान करने के लिये क्षमता का विकास एवं सुधार करने हेतु अनुसंधान और विकास गतिविधियों को आयोजित करने का अधिकार है।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

जैव प्रौद्योगिकी विभाग ने ऊर्जा एवं अनुसंधान संस्थान के साथ त्रि-वर्षीय समझौता किया

चर्चा में क्यों?

- जैव प्रौद्योगिकी विभाग (Department of Biotechnology – DBT) ने ऊर्जा एवं अनुसंधान संस्थान (The Energy and Research Institute) के साथ एक त्रि-वर्षीय समझौता किया है जिसके अंतर्गत 11 करोड़ रुपयों का व्यय करके एक केंद्र स्थापित किया जाएगा जो उन्नत जैव ईंधन और जैव सामग्रियाँ उत्पादित करेगा।

मुख्य तथ्य

- यह इस प्रकार का पाँचवा केंद्र है जिसे जैव प्रौद्योगिकी विभाग ने जैव ऊर्जा के विषय में अनुसन्धान और विकास करने के लिए स्थापित किया है। अन्य चार ऐसे केंद्र जो पहले से बने हैं, वे हैं-

1. भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली,
2. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहाटी
3. ट्रांसटेक ग्रीन पॉवर लिमिटेड, जयपुर
4. खनिज तेल एवं प्राकृतिक गैस ऊर्जा केंद्र, NCR

- यह जैव केंद्र न केवल प्रौद्योगिकी का विकास करेगा अपितु इसका व्यवसायीकरण भी करेगा।
- यह केंद्र ईंधन के अतिरिक्त जिन उत्पादों को तैयार करेगा, वे हैं – खाद्य सामग्री, चारा, पूरक पोषण सामग्री, जैव-प्लास्टिक तथा नए विशिष्ट रसायन।

जैव ईंधन का महत्त्व

- विश्व-भर में पिछले दशक से लोगों का ध्यान जैव ईंधन की और गया है. अत: यह आवश्यक है कि भारत भी जैव ईंधन के मामले में अन्य देशों से पीछे न रहे। ऐसे ईंधन का भारत में बहुत ही महत्त्व है क्योंकि न केवल यह सरकार के लिए Make in India, स्वच्छ भारत अभियान, कौशल विकास जैसी पहलों के लिए शुभ है अपितु यह इन महत्त्वाकांक्षी लक्ष्यों को प्राप्त करने में भी सहायक होगा – किसानों की कमाई दुगुनी करना, आयात में कमी लाना, रोजगार बढ़ाना, कचरे से संपदा का निर्माण करना आदि।

जैव ईंधन की श्रेणियाँ

- पहली पीढ़ी के जैव ईंधन – इसमें किण्वन के पारम्परिक तरीके द्वारा ऐथनॉल बनाने के लिए गेहूँ और गन्ने जैसी खाद्य फसलों और बायोडीजल के लिए तिलहनों का उपयोग किया जाता है।
- दूसरी पीढ़ी के जैव ईंधन – इसमें गैर-खाद्य फसलों का उपयोग किया जाता है और ईंधन के उत्पादन में लकड़ी, घास, बीज फसलों, जैविक अपशिष्ट जैसे फीडस्टॉक का उपयोग किया जाता है।
- तीसरी पीढ़ी के जैव ईंधन – इसमें विशेष रूप से इंजिनियर्ड शैवालों (engineered Algae) का प्रयोग किया जाता है. शैवाल के बायोमास का उपयोग जैव ईंधन में परिवर्तित करने के लिए किया जाता हैं इसमें अन्य की तुलना में ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन कम होता है।
- चौथी पीढ़ी के जैव ईंधन – इसका उद्देश्य न केवल टिकाऊ ऊर्जा का उत्पादन करना है बल्कि यह कार्बन डाइऑक्साइड के अभिग्रहण (capturing) और भंडारण (storage) की एक पद्धति भी है।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन

चर्चा में क्यों?

- अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (International Solar Alliance – ISA) में संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी सदस्य-देशों को इसकी सदस्यता देने के लिए केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की पहली सभा में प्रस्तुत संकल्प पर अपनी घटनोत्तर स्वीकृति प्रदान कर दी है। इस संकल्प के अनुसार गठबंधन के समझौता-ढाँचे (Framework Agreement) में संशोधन किया जाएगा।

सदस्यता के विस्तार का लाभ

- अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की सदस्यता को संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देशों के लिए खोल देने का परिणाम यह होगा कि सौर ऊर्जा एक वैश्विक एजेंडा बन जाएगा और इस प्रकार विश्व के सभी देश सौर-उर्जा के निर्माण और प्रयोग की ओर प्रवृत्त होंगे।

ISA क्या है?

- ISA (International Solar Alliance) की स्थापना CoP21 पेरिस घोषणा के अनुसार हुई है।
- इस alliance का उद्देश्य है सौर ऊर्जा के उत्पादन को बढ़ावा देना है जिससे पेट्रोल, डीजल पर निर्भरता कम की जा सके।
- यह एक अंतर्राष्ट्रीय, अंतर-सरकारी alliance है जो आपसी समझौते पर आधारित है।
- अब तक 19 देशों ने इस समझौते को अपनी मंजूरी दे दी है और 48 देशों ने इसके framework agreement को हस्ताक्षरित कर दिए है।
- यह 121 ऐसे देशों का alliance है जो सौर ऊर्जा की दृष्टि से समृद्ध हैं।
- ये देश पूर्ण या आंशिक रूप से कर्क और मकर रेखा के बीच स्थित हैं।
- इसका मुख्यालय भारत में है और इसका अंतरिम सचिवालय फिलहाल गुरुग्राम में बन रहा है।

ISA का लक्ष्य

- ISA चाहता है कि विश्व-भर में 1000 GW सौर ऊर्जा का उत्पादन हो तथा इसके लिए 2030 तक सौर ऊर्जा में US$ 1000 billion से अधिक के निवेश की व्यवस्था हो।

स्रोत: द हिंदू

अर्थ बायो-जीनोम प्रोजेक्ट

चर्चा में क्यों?

- अंतर्राष्ट्रीय जीव वैज्ञानिकों ने अर्थ बायो-जीनोम प्रोजेक्ट (BioGenome Project – EBP) नामक परियोजना आरम्भ की है। यह एक बड़े सोच वाली परियोजना है जिसमें अगले 10 वर्षों तक विश्व के एक-एक ज्ञात पशु, पौधे और फंफूद प्रजाति (fungal species) के DNA का अध्ययन किया जाएगा। इसके लिए 1.5 मिलियन अलग-अलग जिनेमों को क्रमबद्ध किया जाएगा जिसपर अनुमानत: 4.7 बिलियन डॉलर का व्यय आएगा।

EBP क्या है?

- EBP परियोजना में काम करने के लिए विश्व के 19 शोध संस्थानों ने अब तक अपने हस्ताक्षर कर दिए हैं और कुछ अन्य इसमें सम्मिलित होने की सोच रहे हैं।
- जिन प्राणियों की DNA श्रृंखला का अध्ययन होने वाला है, उनमें बैक्टीरिया और archaea जैसे अ-जटिल सूक्ष्म जीवाणुओं को छोड़कर अन्य सभी प्रकार के प्राणी होंगे, जैसे - पशु, पौधे, फंफूद, प्रोटोजोआ आदि।
- इस परियोजना के लिए धनराशि सरकारों, फाउंडेशनों, धार्मादा प्रतिष्ठानों (charities) से प्राप्त की जायेगी।
- इस परियोजना के पहले चरण में 9,000 यूकेरियोटिक (eukaryotic) प्राणिवर्गों, अर्थात् उन प्राणियों जिनके कोषों में झिल्ली से घिरा एक नाभिक होता है, का रेफरेन्स जीनोम तैयार किया जाएगा। इसमें 600 मिलियन डॉलर की आवश्यकता होगी और अभी तक 200 मिलियन डॉलर का प्रबंध हो भी चुका है।
- इस परियोजना में सम्मिलित ब्रिटेन के प्रतिभागी Wellcome Sanger Institute के नेतृत्व में देश में रहने वाले सभी 66,000 ज्ञात प्रजातियों के जेनेटिक कोड को क्रमबद्ध करेंगे। 100 मिलियन पौंड (£100m) वाले इस राष्ट्र-स्तरीय कार्यक्रम को Darwin Tree of Life का नाम दिया गया है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

महत्त्व

- ज्ञातव्य है कि अभी तक झिल्लियों से घिरे हुए नाभिक के कोष वाले मात्र 3,300 प्राणियों के ही DNA क्रमबद्ध किये जा सके हैं जो सम्पूर्ण लक्ष्य का केवल 0.2% ही है। इस परियोजना के अंतर्गत कुल मिलाकर 1.5 मिलियन जीनोम का अध्ययन होना है। यदि यह काम पूरा हो जाता है तो सभी प्राणियों के विषय में एक अतिशय व्यापक सूचना सामग्री उपलब्ध हो जायेगी जिससे जीवन के नियमों और प्राणियों का विकास कैसे होता है, इस विषय में हमारी समझ बढ़ जायेगी। साथ ही हम विरल और संकटग्रस्त प्रजातियों के संरक्षण के लिए नया दृष्टिकोण अपना सकेंगे। इस अध्ययन से शोधकर्ताओं को कृषि और चिकित्सा के क्षेत्र में नई जानकारियाँ और आँकड़ें उपलब्ध हो जायेंगे। यदि सभी देशों का सहयोग रहा और पर्याप्त मात्रा में धनराशि उपलब्ध होती रही तो आशा की जाती है कि 2028 तक 1.5 मिलियन जीनोमों का अध्ययन पूरा हो जाएगा।

स्रोतः द हिंदू

गंगा ग्राम स्वच्छता सम्मेलन

चर्चा में क्यों?

- बिहार के बक्सर जिले में स्थित चौसा गाँव के च्यवनऋषि आश्रम में हाल ही में गंगा ग्राम स्वच्छता सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में गंगा ग्राम परियोजना के संदर्भ में हुई प्रगति की समीक्षा की गई।

गंगा ग्राम परियोजना

- नमामि गंगे योजना (Namami Ganga Project) के तहत अब एक नयी परियोजना लायी गयी है जिसका नाम गंगा ग्राम परियोजना रखा गया है। इस परियोजना को 23 December, 2017 को केंद्र सरकार ने औपचारिक रूप से आरम्भ किया था। इस परियोजना के लिए खुले शौच से मुक्त हुए 4,470 गाँवों में से 24 गाँवों का चयन किया गया था।
- चुने हुए 24 गाँवों में ऐसे प्रयास किए जायेंगे जिससे कि गाँव सही मायनों में स्वच्छ हो सकें।
- इसके लिए उनमें ठोस और तरल कचरे के निपटान की व्यवस्था की जाएगीं
- जल संरक्षण के लिए परियोजनाएँ चलाई जायेंगी।
- तालाबों और अन्य जलाशयों का निर्माण किया जायेगा।
- अ-रासायनिक खादों (organic farming) और कीटनाशकों के द्वारा खेती की जाएगी।
- बागबानी (horticulture) पर बल दिया जायेगा।
- औषधीय गुणों (medicinal plants) वाले पौधों को लगाने के लिए बढ़ावा दिया जायेगा।
- गंगा ग्राम परियोजना (Ganga Gram Project) को ऊपर वर्णित 24 गाँवों में 31 December, 2018 तक पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था।

नमामि गंगे योजना (Namami Ganga Project)

नमामि गंगे कार्यक्रम क्या है?

- नमामि गंगे भारत सरकार का एक कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य गंगा नदी को कारगर ढंग से स्वच्छ बनाना है। इस लक्ष्य को पाने के लिए इसमें सभी हितधारकों को भी संलग्न किया गया है, विशेषकर गंगा घाटी के उन पाँच राज्यों के हितधारकों को जो राज्य गंगा की घाटी में स्थित हैं, यथा - उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल।
- इस कार्यक्रम में जो कार्य किये जाते हैं, वे हैं - नदी की सतह की सफाई, इसमें गिरने वाले नाली प्रवाह का उपचार, रिवर फ्रंटों का विकास, जैव-विविधता का विकास, वनरोपण एवं जन-जागरूकता के कार्य।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

कार्यान्वयन

- इस कार्यक्रम का कार्यान्वयन राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (National Mission for Clean Ganga – NMCG) और राज्यों में स्थित इसके समकक्ष संगठनों, जैसे - राज्य कार्यक्रम प्रबंधन समूह (State Program Management Groups – SPMGs) द्वारा किया जाता है।
- योजना के सही कार्यान्वयन के लिए एक त्रि-स्तरीय प्रणाली गठित करने का प्रस्ताव है। इस प्रणाली के तीन स्तर होंगे जो निम्नवत हैं ।

(a) राष्ट्रीय स्तर पर एक उच्च स्तरीय कार्यदल जिसके अध्यक्ष कैबिनेट सचिव होंगे जिनकी सहायता NMCG करेगी।

(b) राज्य-स्तर पर एक समिति होगी जिसकी अध्यक्षता मुख्य सचिव करेंगे और जिनकी सहायता SPMG करेगी।

(c) जिला-स्तर पर एक जिला-स्तरीय समिति होगी जिसकी अध्यक्षता जिला मजिस्ट्रेट करेंगे।

इस कार्यक्रम में केंद्र और राज्य सरकारों के विभिन्न मंत्रालयों/एजेंसियों के मध्य समन्वय के तन्त्र को सुधारने पर बल दिया गया है।

स्रोत: द हिंदू

उन्नत मोटर ईंधन तकनीक सहयोग कार्यक्रम

चर्चा में क्यों?

- भारत अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (International Energy Agency – IEA) के अंतर्गत उन्नत मोटर ईंधन तकनीक सहयोग कार्यक्रम (Advanced Motor Fuels Technology Collaboration Programme – AMF TCP) का एक सदस्य बन गया है।
- इसका मुख्य उद्देश्य उत्सर्जन में कमी लाना और परिवहन क्षेत्र में अधिक कारगर ईंधन के प्रयोग को बढ़ावा देना है।

AMF TCP क्या है?

- उन्नत मोटर ईंधन तकनीक सहयोग कार्यक्रम (AMF TCP) अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के ढाँचे के अंतर्गत एक अंतर्राष्ट्रीय मंच है जिसका उद्देश्य अधिक स्वच्छ और अधिक ऊर्जा बचाने वाले ईंधनों तथा परिवहन तकनीकों के प्रयोग को बढ़ावा देने के विषय में सदस्य देशों के बीच समन्वय स्थापित करना है।
- यह कार्यक्रम उन्नत मोटर ईंधनों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराता है और उनके प्रयोग को बढ़ावा देता है. यह परिवहन ईंधनों के विषय में विधिवत विचार करता है और उनके उत्पादन, वितरण एवं प्रयोग के बारे में सारे पहलुओं पर ध्यान देता है।
- उत्सर्जन में कमी लाने के लिए यह विभिन्न ईंधनों का विश्लेषण करता है। इस मंच पर नए वैकल्पिक ईंधनों की पहचान करते हुए उनके परिवहन क्षेत्र में प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाता है और सम्बन्धित R & D गतिविधियों के सम्पादन में सहयोग किया जाता है।

MF TCP के सदस्यगण

- भारत AMF TCP का 16वाँ सदस्य होगा. अन्य सदस्य देश हैं - संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, जापान, कनाडा, चिली, इजराइल, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, स्वीडन, फिनलैंड, डेनमार्क, स्पेन, कोरिया गणराज्य, स्विट्जरलैंड और थाईलैंड।

भारत को क्या लाभ है?

- भारत के AMF TCP से जुड़ने से वैकल्पिक ईंधनों की पहचान और प्रयोग के इसके प्रयासों को बल मिलेगा और इस प्रकार अधिक कारगर ईंधनों के परिवहन क्षेत्र में प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा एवं साथ ही उत्सर्जन में कमी आएगी।
- AMF TCP की सदस्यता के फलस्वरूप सार्वदेशिक तकनीकी संसाधनों और लागतों का भारत को लाभ मिल सकेगा।
- भारत स्वयं अधिक सक्षम ईंधनों पर अनुसंधान करता आया है। AMF TCP का सदस्य बन जाने पर वह जान सकेगा कि इस विषय में अन्य देश क्या अनुसंधान कर रहे हैं। इससे इसके अपने ज्ञान में वृद्धि होगी ही, इसकी R&D क्षमता भी अधिक सुदृढ़ हो जायेगी।
- अब भारत को बेहतर ईंधन के सम्बन्ध में उत्कृष्ट प्रथाओं की जानकारी तो मिलेगी ही, साथ ही अन्य अनुसंधानकर्ताओं के अनुसंधानों और उनके व्यवहारिक प्रयोग के विषय में सूचना भी उपलब्ध हो पाएगी।
- AMF TCP का सदस्य बनने के पश्चात् भारत उन्नत जैव ईंधनों और अन्य मोटर ईंधनों के विषय में R&D शुरू करेगा जिससे जीवाश्म ईंधनों पर देश की निर्भरता में कमी लाई जा सकेगी।

स्रोत: द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

हाथी गलियारों को पर्यावरण की दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्र (Eco - sensitive zones) घोषित करने पर विचार

चर्चा में क्यों?

राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण (National Green Tribunal – NGT) ने पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को कहा है कि वह देश के सभी हाथी गलियारों को पर्यावरण की दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्र (Eco&sensitive zones) घोषित करने पर विचार करे। इसके लिए प्राधिकरण ने मंत्रालय को 2 सप्ताह का समय दिया है।

भूमिका

राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण (NGT) का यह निर्देश उस प्रार्थना-पत्र पर सुनवाई करते समय दिया गया जिसमें सूचित किया गया था कि बहुत-से हाथी अप्राकृतिक ढंग से मर रहे हैं। इसका कारण यह दिया गया था कि हाथियों के निवास वाले जंगल घटते जा रहे हैं और हाथियों को इस कारण लोगों की बस्तियों की ओर आना पड़ रहा है। ऐसे हाथी या तो बदले की कारवाई में जानबूझकर मारे जाते हैं अथवा रेल क्रासिंग में दुर्घटना के शिकार होते हैं। कुछ हाथी उच्च शक्ति वाले बिजली के तारों, बिजली के बाड़ों और खाइयों के कारण मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

Eco – sensitive zone क्या हैं?

- पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम, 1986 में इको-सेंसिटिव जोन का उल्लेख नहीं है।
- परन्तु अधिनियम का अनुभाग 3(2)(अ) कहता है कि केंद्र सरकार कुछ क्षेत्रों में उद्योग लगाना अथवा चलाना प्रतिबंधित कर सकती है।
- अधिनियम का अनुभाग 5 (1) कहता है कि केंद्र सरकार किसी क्षेत्र की जैव-विविधता को ध्यान में रखते हुए वहाँ उद्योग लगाने और चलाने पर निषेध लगा सकती है अथवा उसे सीमित कर सकती है जिससे उस क्षेत्र में प्रदूषण न हो और वहाँ की जमीन पर्यावरण की दृष्टि से उपयुक्त रहे।
- ऊपर वर्णित किये गये दोनों अनुच्छेदों का सरकार ने कारगर ढंग से उपयोग करते हुए पर्यावरण की दृष्टि से संवेदनशील जोन (Eco Sensitive Zones – ESZ) अथवा पर्यावरण की दृष्टि से नाजुक क्षेत्र (Ecologically Fragile Areas – EFA) घोषित किये हैं। इसी प्रकार समान मापदंडों वाले विकास से परे जोन भी घोषित किये गये हैं।

ESZ घोषित करने के मानदंड

- वन एवं पर्यावरण मंत्रालय ने ऐसे जोन घोषित करने के लिए कुछ मापदंड तय किये हैं जो मंत्रालय की एक समिति ने तैयार किये हैं। इनके अनुसार ये क्षेत्र पर्यावरण की दृष्टि से संवेदनशील घोषित हो सकते हैं।
- जहाँ कोई प्रजाति अधिक हो अथवा अत्यंत कम हो।
- जहाँ पवित्र कुंज और जंगल (sacred groves frontier forests etc) हों।
- जहाँ अनिर्वासित द्वीप हों, नदियों का उद्गम हो आदि।

स्रोतः द हिंदू

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

अन्य खबरें

बाल गंगा नामक मेले का आयोजन

- नवम्बर 4, 2018 को HCL के नोएडा-स्थित परिसर में राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (National Mission for Clean Ganga – (NMCG) ने HCL फाउंडेशन तथा जर्मन विकास एजेंसी (GIZ) के सहयोग से बाल गंगा नामक मेले का आयोजन किया।
- विदित हो कि 2008 में नवम्बर 4 में ही गंगा को भारत की राष्ट्रीय नदी घोषित किया गया है। इसलिए नवम्बर 4 की तिथि को प्रतीक के रूप में इस मेले के आयोजन के लिए चुना गया।

अरविंद सक्सेना UPSC के चेयरमैन नियुक्त

- अरविंद सक्सेना को संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) का चेयरमैन नियुक्त किया गया है। उनकी नियुक्ति के संबंध में 28 नवम्बर 2018 को आधिकारिक बयान जारी किया गया। इस पद पर उनका कार्यकाल 07 अगस्त 2020 तक होगा। उनसे पहले विनय मित्तल यूपीएससी के चेयरमैन थे। उन्हें 20 जून 2018 को यूपीएससी का एक्टिंग चेयरमैन नियुक्त किया गया था।
- राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने यूपीएससी अध्यक्ष पद पर अरविंद सक्सेना की नियुक्ति को मंजूरी दे दी है। यूपीएससी आने से पहले अरविंद सक्सेना उड्डयन शोध केंद्र में निदेशक के रूप में कार्य कर रहे थे। अरविंद सक्सेना को 8 मई 2015 को यूपीएससी का सदस्य बनाया गया था. उन्होंने दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), दिल्ली से पढ़ाई की है. वे भारतीय डाक सेवा में 1978 बैच के अधिकारी रहे हैं।

पहली और दूसरी क्लास के बच्चों को नहीं मिलेगा होमवर्क: केंद्र सरकार

- केंद्रीय मानव संसाधन मंत्रालय (एचआरडी) ने पहली और दूसरी क्लास के बच्चों को होमवर्क देने पर रोक लगा दी है। मंत्रालय ने स्कूल बैग का भार कम करने के लिए भी दिशा निर्देश जारी किए हैं। एचआरडी मंत्रालय ने स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग की ओर से राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों को इस संबंध में सर्कुलर जारी किया है। बच्चों की सेहत के मद्देनजर सरकार ने नई गाइडलाइन जारी कर दी है।
- मंत्रालय ने पहली से 10वीं क्लास तक के लिए बच्चों के स्कूल बैग के वजन को निर्धारित कर दिया है। इससे मासूम बच्चों को होने वाली स्वास्थ्य दिक्कतों से छुटकारा मिल जाएगा। बच्चों के होमवर्क को लेकर भी नियम बनाया गया है। स्कूली बस्तों के भारी भरकम वजन की वजह से बच्चों की कमर पर बुरा असर पड़ रहा था। सरकार ने स्कूली बच्चों पर भारी बैग के कारण स्वास्थ्य पर पड़ रहे असर को कम करने हेतु यह फैसला किया है।

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जॉर्ज एच डब्ल्यू बुश का निधन

- अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जॉर्ज एच डब्ल्यू बुश का 30 नवम्बर 2018 को निधन हो गया। वे 94 वर्ष के थे। वे रक्त में संक्रमण के रोग से ग्रसित थे। हाल ही में उन्हें तबीयत खराब होने के बाद अस्पताल में भर्ती कराया गया था। निधन के समय तक बुश अमेरिका के सबसे उम्रदराज जीवित राष्ट्रपति थे।
- वे लंबे समय से बिमारी के कारण व्हील चेयर पर थे। भारत आने वाले 5वें राष्ट्रपति जॉर्ज डबल्यू बुश थे। बुश ने वर्ष 2006 में भारत का दौरा किया था। अप्रैल 2018 में उनकी पत्नी बारबरा बुश का निधन हुआ था। अमेरिकी इतिहास में बारबरा बुश एकमात्र ऐसी महिला बनीं, जिन्होंने अपने जीवनकाल में अपने पति और बेटे को राष्ट्रपति पद के लिए निर्वाचित होते देखा।

जॉर्ज एच डब्ल्यू बुश के बारे में:

- जॉर्ज एच डब्ल्यू बुश का पूरा नाम जॉर्ज हर्बर्ट वॉकर बुश था।
- जॉर्ज हरबर्ट वॉकर बुश का जन्म 12 जून 1924 को मिल्टन, मैसाचुसेट्स में हुआ था।
- उन्हें बचपन में माता-पिता श्पोप्पीश पुकारते थे. जॉर्ज की शुरुआती पढ़ाई ग्रीनविच कंट्री डे स्कूल में हुई थी।
- जॉर्ज हरबर्ट वॉकर बुश अमेरिका के 41वें राष्ट्रपति थे। उनका कार्यकाल वर्ष 1989 से वर्ष 1993 तक था।
- वर्ष 1988 में राष्ट्रपति चुने जाने से पहले वो संयुक्त राष्ट्र (यूएन) और चीन में अमेरिका के राजदूत रह चुके थे। साथ ही वे केंद्रीय जांच एजेंसी (सीआईए) के निदेशक भी रह चुके थे। वे 8 वर्षों तक अमेरिका के उप-राष्ट्रपति भी थे।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

- जॉर्ज एच डब्ल्यू बुश के शासन काल में ही खाड़ी युद्ध हुआ था। तब इराक ने कुवैत पर हमला बोल दिया था। इसके बाद उस वक्त जॉर्ज डब्ल्यू बुश की अगुवाई में ही अमेरिका ने इराक के तानाशाह सद्दाम हुसैन की फौजों को कुवैत से बाहर खदेड़ा था।
- जॉर्ज एच डब्ल्यू बुश ने शीतयुद्ध के खात्मे के बाद अमेरिका को आगे बढ़ने में मदद की थी।
- बुश विदेश नीति के अच्छे जानकार थे। वर्ष 1989 में सोवियत संघ के विघटन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।
- देश की कमजोर अर्थव्यवस्था के चलते वर्ष 1992 के चुनाव में उन्हें डेमोक्रेट उम्मीदवार बिल क्लिंटन से मात खानी पड़ी।

भारतीय अंतराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव-2018 का समापन, डोनबास ने स्वर्ण मयूर पुरस्कार जीता

- भारतीय अंतराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव-2018 का 28 नवंबर 2018 को गोवा में समापन हो गया। इस कार्यक्रम में सर्गेई लोजनित्सा द्वारा निर्देशित फिल्म डोनबास ने प्रतिष्ठित स्वर्ण मयूर पुरस्कार जीता है। यह महोत्सव 28 नवंबर, 2018 को गोवा में संपन्न हुआ है। भारतीय वरिष्ठ अभिनेता सलीम खान को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया।
- स्वर्ण मयूर पुरस्कार में 4 मिलियन रुपये (40 लाख रुपये) का नकद पुरस्कार, ट्रॉफी और प्रशस्तिपत्र प्रदान किया जाता है। पुरस्कार राशि निर्माता और निदेशक में बराबर-बराबर बांटी जाती है।

डोनबास फिल्म

- डोनबास फिल्म पूर्वी यूक्रेन के एक क्षेत्र में हुए युद्ध की कहानी है जिसमें अलगाववादी गिरोहों द्वारा बड़े पैमाने पर हत्याओं और लूटपाट के साथ-साथ सशस्त्र संघर्ष को दर्शाया गया है। डोनबास के माध्यम से उत्सुक रोमांचों की श्रृंखला को दर्शाया गया है। यह फिल्म एक क्षेत्र या राजनीतिक व्यवस्था की कहानी नहीं है बल्कि ऐसे विश्व की कहानी है जो सच्चाई के बाद नकली पहचान की दुनिया में खो गयी है।
- डोनबास सर्वेश्रेष्ठ विदेशी भाषा फिल्म के लिए यूक्रेन द्वारा आधिकारिक रूप से भेजी गयी फिल्म है। केन्स फिल्म महोत्सव 2018 में इस फिल्म ने सर्वश्रेष्ठ निदेशक के लिए 'यूएन सर्टेन रिगार्ड' जीता है।

लिजो जोस पेलिसरी को ई.मा.यू. के लिए सर्वश्रेष्ठ निदेशक पुरस्कार

- लिजो जोस पेलिसरी ने अपनी 2018 की फिल्म 'ई.मा.यू' के लिए सर्वश्रेष्ठ निदेशक का पुरस्कार जीता है। यह फिल्म मृत्यु पर एक आश्चर्यजनक व्यंग्य है और यह मानव जीवन को किस तरह प्रभावित करती है इस फिल्म में दर्शाया गया है। केरल के एक तटीय चेलानम गांव की कहानी पर आधारित ये फिल्म एक ऐसे बेटे की दुर्दशा को दर्शाती है जो अपने पिता के लिए एक अच्छे अंतिम संस्कार को करने की कोशिश करता है। इस फिल्म को सर्वश्रेष्ठ निदेशक के लिए रजत मयूर और 15 लाख रुपये का नकद पुरस्कार दिया गया है।

चेम्बैन विनोद को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता पुरस्कार

- सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (पुरुष) का पुरस्कार चेम्बन विनोद को 'ईशी' की ई.मा.यू. में की गयी भूमिका के लिए दिया गया है। वे ऐसे पुत्र बने हैं जो अपने पिता का एक अच्छा अंतिम संस्कार करना चाहता है लेकिन उसके रास्ते में अप्रत्याशित रूप से अनेक बाधाएं और प्रतिक्रियाएं आती है।

अनास्ताशिया पस्तोविट को सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार

- सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार लारियासा फिल्म में की गयी भूमिका के लिए अनास्ताशिया पस्तोविट को प्रदान किया। उन्होंने युक्रेनियन फिल्म श्वैन दा ट्री फॉलश में एक किशोर लड़की की भूमिका के लिए प्रदान किया गया है। सर्वश्रेष्ठ अभिनेता और सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री को रजत मयूर ट्रॉफी 10-10 लाख रुपये का नकद पुरस्कार दिया जाता है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

मिल्को लाजरोव की फिल्म 'आगा' को विशेष जूरी पुरस्कार

- मिल्को लाजरोव की फिल्म श्आगाश को विशेष जूरी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह फिल्म यकुटिया के एक बुजुर्ग दंपत्ति सेडना और नानूक की कहानी पर केंद्रित है जिन्हें अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। विशेष जूरी पुरस्कार में 15 लाख रुपये का नकद पुरस्कार, रजत मयूर और प्रशस्तिपत्र प्रदान किया जाता है।

अल्बर्तो मॉन्तेरास-II को उनकी पहली फिल्म 'रेस्पेतो' के लिए बेहतरीन फीचर फिल्म निर्देशक का पुरस्कार

- फिलीपीन्स के अल्बर्तो मॉन्तेरास-II को उनकी पहली फिल्म 'रेस्पेतो' के लिए बेहतरीन फीचर फिल्म निर्देशक का पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रवीण मोरछाले द्वारा निर्देशित 'वॉकिंग विद दी विंड' ने आईसीएफटी ख्रयूनेस्को गांधी पदक जीता, जिसे इंटरनेशनल काउंसिल फॉर फिल्म, टेलीविजन एंड ऑडियो-विजुअल कम्यूनिकेशन, पेरिस और यूनेस्को ने शुरू किया है। गांधी पदक के मानकों के जरिये पुरुषों और महिलाओं में शांति स्थापना के लिए यूनेस्को का बुनियादी अधिकार प्रदर्शित होता है।

'वॉकिंग विद दी विंड'

- 'वॉकिंग विद दी विंड' में हिमालय के इलाके के एक 10 वर्षीय बालक की कहानी है, जो गलती से अपने दोस्त के स्कूल की कुर्सी तोड़ देता है। पहाड़ी इलाके में स्कूल जाने के लिए वह रोज सात किलोमीटर का सफर तय करता है। जब वह अपने गांव में कुर्सी लाने का फैसला करता है, तो यह सफर उसके लिए भारी मुसीबत और चुनौती बन जाता है।

एएम नाइक राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के अध्यक्ष नियुक्त

- केंद्र सरकार ने अनिल मणिभाई नाइक (एएम नाइक) को राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) का अध्यक्ष नियुक्त किया है। इस समय नाइक भारत के सबसे बड़े इंजीनियरिंग और निर्माण की सबसे बड़ी कंपनी - लार्सन और टूब्रो लिमिटेड (एलएंडटी) के समूह अध्यक्ष हैं।

- उनके पास इन्फ्रास्ट्रक्चर, इंजीनियरिंग व निर्माण क्षेत्र में 50 साल से अधिक का अनुभव है। एनएसडीसी के अध्यक्ष के रूप में नाइक की नियुक्ति कौशल विकास के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए महत्व को रेखांकित करती है। जैसा कि प्रधानमंत्री बार-बार जोड़ देकर कहते हैं कि कौशल गरीबों में आत्मविश्वास की भावना लाता है।

बीसीसीआई ने आयु में धोखाधड़ी करने वाले खिलाड़ियों पर दो वर्ष के प्रतिबंध की घोषणा की

- भारत क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने घोषणा की है कि उम्र में धोखाधड़ी के दोषी पाए जाने वाले क्रिकेटर को उसके सभी मान्यता प्राप्त टूर्नमेंटों से दो साल के लिए प्रतिबंधित किया जाएगा। बीसीसीआई ने बयान में कहा, 'खेल में आयु धोखाधड़ी को लेकर बीसीसीआई की शून्य सहिष्णुता की नीति है और बीसीसीआई के टूर्नमेंट में पंजीकरण के दौरान जन्म तिथि के प्रमाण पत्र से छेड़छाड़ के दोषी क्रिकेटरों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की गई है।'

- बीसीसीआई का कहना है कि 2018-19 सत्र से जो भी क्रिकेटर अपनी जन्म तिथि से छेड़छाड़ का दोषी पाया जाता है उसे अयोग्य घोषित किया जाएगा। धोखाधड़ी करने वाले खिलाड़ियों को बीसीसीआई के किसी भी टूर्नामेंट में खेलने से दो साल के लिए प्रतिबंधित किया जाएगा, जो 2018-19 और 2019-2020 सत्र होगा।

प्रसिद्ध हिंदी गायक मोहम्मद अजीज का निधन

- 'माई नेम इज लखन' और 'लाल दुपट्टा मलमल का' जैसे कई सुपरहिट गानों से श्रोताओं के दिलों में जगह बनाने वाले जाने-माने गायक मोहम्मद अजीज का हृदयगति रुकने से निधन हो गया। उन्होंने अंतिम सांस मुंबई के नानावती अस्पताल में ली।

- अजीज ने कई फिल्मों के हिट गाने गाए. लाल दुपट्टा मलमल का, मीना से न साकी से जैसे सैकड़ों हिट गाने गाए हैं। अजीज ने मर्द के अलावा बंजारन, आदमी खिलौना है, लव 86, पापी देवता, जुल्म को जला दूंगा, पत्थर के इंसान, बीवी हो तो ऐसी, बरसात की रात जैसी फिल्मों में गाने गाए।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

हॉकी विश्व कप 2018 का भुवनेश्वर में शुभारंभ

- हॉकी विश्व कप 2018 का भुवनेश्वर में शुभारंभ हो गया है। मेजबान भारत 14वें हॉकी विश्व कप में अपने अभियान की शुरुआत की। यह मैच भुवनेश्वर के कलिंगा स्टेडियम पर खेला जा रहा है।
- मेजबान भारत का पहला मैच दक्षिण अफ्रीका से होगा। आठ बार के ओलंपिक चौंपियन भारत ने अब तक सिर्फ एक बार विश्व कप जीता है।
- हॉकी के इस महाकुंभ में विश्व की कुल 16 टीमें हिस्सा ले रही हैं, जो 28 नवंबर से 16 दिसंबर 2018 तक चलेगा।

16 टीमों को चार ग्रुपों में बांटा गया:

- विश्व कप में 16 टीमों को चार ग्रुपों में बांटा गया है। मेजबान भारत को पूल 'सी' में जगह मिली है जबकि पाकिस्तान को पूल 'डी' में रखा गया है। इस विश्व कप में भारत अपना पहला मैच 28 नवंबर को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खेलेगा।
- ग्रुप ए- अर्जेंटीना, न्यूजीलैंड, स्पेन और फ्रांस
- ग्रुप बी- ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, आयरलैंड और चीन
- ग्रुप सी-भारत, बेल्जियम, कनाडा और दक्षिण अफ्रीका
- ग्रुप डी-नेदरलैंड्स, जर्मनी, मलेशिया और पाकिस्तान

विश्व कप हॉकी:

- विश्व कप हॉकी की शुरुआत वर्ष 1971 में हुई थी और अभी तक पाकिस्तान ने सबसे ज्यादा चार बार खिताब पर कब्जा किया है। ऑस्ट्रेलिया और नेदरलैंड्स ने तीन-तीन और जर्मनी ने दो बार विश्व कप पर कब्जा किया है। भारत ने वर्ष 1975 में विश्व कप पर कब्जा किया था।

भारत में तीसरी बार हॉकी विश्व कप का आयोजन:

- भारत में तीसरी बार हॉकी विश्व कप का आयोजन हो रहा है। इससे पहले वर्ष 1982 और वर्ष 2010 में भारत हॉकी विश्व कप का आयोजन कर चुका है।

194 देशों में प्रसारित:

- ओडिशा पुरुष हॉकी विश्व कप टूर्नामेंट के मैच विश्व के 194 देशों में प्रसारित किए जा रहे है। अंतर्राष्ट्रीय हॉकी महासंघ (एफआईएच) ने 26 नवम्बर 2018 को एक विज्ञप्ति के माध्यम से इसकी जानकारी देते हुए कहा कि वर्ष 2014 में हुए पिछले संस्करण की तुलना में इसके प्रसारण में 150 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

भारत 43 साल से नहीं जीता कोई पदक:

- वर्ष 1975 के बाद से एशियाई धुरंधर भारतीय टीम नीदरलैंड, जर्मनी और ऑस्ट्रेलिया के स्तर तक पहुंचने में नाकाम रही। पिछले चार दशक से यूरोपीय टीमों ने विश्व हॉकी पर दबदबा बनाये रखा है। भारत ने वर्ष 1975 के बाद सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन मुंबई में वर्ष 1992 में हुए विश्व कप में किया जब वह पांचवें स्थान पर रहा था। भारत पिछले 43 साल में विश्व कप का कोई भी पदक नही जीत सका। भारत के नाम केवल एक स्वर्ण पदक (1975), एक रजत पदक (1973) और एक कांस्य पदक(1971) सहित कुल तीन पदक हैं।

विश्व रैंकिंग नंबर वन पर ऑस्ट्रेलिया:

- विश्व हॉकी रैंकिंग में इस समय ऑस्ट्रेलिया पहले पायदान पर है। चार बार हॉकी विश्व कप का खिताब अपने नाम कर चुके पाकिस्तान की भूमिका भी इस टूर्नामेंट में काफी अहम मानी जा रही है।
- पाकिस्तान विश्व रैंकिंग में 13वें पायदान पर है। इस समय भारत विश्व रैंकिंग में 5वें पायदान पर है और एशियाई देशों में उसकी रैंकिंग नंबर वन है।
- पिछली बार हॉकी विश्व कप का खिताब ऑस्ट्रेलिया के नाम रहा। वह फाइनल में नीदरलैंड को हराकर वर्ष 2014 में चौंपियन बना था।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

भारतीय टीम:

- **गोलकीपर:**- पी.आर.श्रीजेश, कृष्णन बहादुर पाठक
- **डिफेंडर:**- हरमनप्रीत सिंह, गुरिंदर सिंह, वरुण कुमार, कोथाजीत सिंह, सुरेंद्र कुमार, जर्मनप्रीत सिंह, हार्दिक सिंह
- **मिडफील्डर:**- मनप्रीत सिंह (कप्तान), सुमित, नीलकंठ शर्मा, ललित कुमार उपाध्याय, चिंग्लेसाना सिंह
- **फारवर्ड:**- आकाशदीप सिंह, गुरजंत सिंह, मनदीप सिंह और दिलप्रीत सिंह

सुनील अरोड़ा मुख्य चुनाव आयुक्त बनाये गये

- भारत के वरिष्ठ चुनाव आयुक्त सुनील अरोड़ा को 26 नवंबर 2018 को देश का अगला मुख्य चुनाव आयुक्त नियुक्त किया गया है। सुनील अरोड़ा 2 दिसंबर को वर्तमान मुख्य आयुक्त ओ पी रावत के स्थान पर पदभार ग्रहण करेंगे।
- पूर्व आईएएस अधिकारी सुनील अरोड़ा को 31 अगस्त 2017 को नया चुनाव आयुक्त नियुक्त किया गया था। जुलाई 2017 में नसीम जैदी के मुख्य चुनाव आयुक्त पद से सेवानिवृत होने के बाद तीन सदस्यीय आयोग में चुनाव आयुक्त का एक पद खाली पड़ा था।

पूर्व रेल मंत्री सी.के. जाफर शरीफ का निधन

- वरिष्ठ कांग्रेस नेता और पूर्व केन्द्रीय मंत्री सी. के. जाफर शरीफ का दिल का दौरा पड़ने से 25 नवम्बर 2018 को बेंगलुरु के एक स्थानीय अस्पताल में निधन हो गया। वे 85 साल के थे। वे पिछले कुछ वर्षों से बीमार चल रहे थे और उन्हें सांस लेने में तकलीफ हो रही थी।
- सी.के. जाफर शरीफ जुमे की नमाज के वास्ते जाने के लिए अपनी कार में सवार होने के दौरान गिर गए थे। इसके बाद उन्हें बेंगलुरु के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। शरीफ के परिवार के सूत्रों ने कहा कि पूर्व केंद्रीय मंत्री पिछले कुछ समय से अस्वस्थ थे।

मैरी कॉम ने छठा विश्व चौंपियनशिप स्वर्ण पदक जीतकर विश्व रिकॉर्ड बनाया

- भारत की वरिष्ठ महिला बॉक्सिंग खिलाड़ी एम. सी. मैरी कॉम ने 24 नवंबर 2018 को आईबा महिला विश्व मुक्केबाजी चौम्पियनशिप के 10वें संस्करण में 48 किलोग्राम भार वर्ग का खिताब अपने नाम किया।
- मैरी कॉम ने फाइनल में यूक्रेन की हना ओखोटा को 5-0 से हराकर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। इसी के साथ मैरीकॉम छह वर्ल्ड चौंपियनशिप जीतने वाली दुनिया की पहली खिलाड़ी बन गई हैं। इससे पहले मैरी कॉम ने साल 2002, 2005, 2006, 2008 और साल 2010 में विश्व चौंपियनशिप का खिताब अपनी झोली में डाला था।

समीर वर्मा ने जीता सैयद मोदी अंतरराष्ट्रीय बैडमिंटन चौंपियनशिप का खिताब

- भारत के स्टार शटलर समीर वर्मा ने 25 नवम्बर 2018 को चीन के लू ग्वांगझू को हराकर लगातार दूसरी बार सैयद मोदी अंतरराष्ट्रीय बैडमिंटन चौंपियनशिप का खिताब जीत लिया। उन्होंने खिताबी मुकाबले में चीन के लू ग्वांगझू को 16-21, 21-19, 21-14 से हराया।
- यह मैच समीर ने एक घंटे 10 मिनट में जीता। विश्व नंबर-16 समीर वर्मा की विश्व रैंकिंग में 36वें पायदान पर काबिज लू ग्वांगझू के खिलाफ पहली जीत है। उन्होंने इस जीत के साथ ही इस साल ऑस्ट्रेलियन ओपन में ग्वांगझू से मिली हार का बदला भी चुकता कर लिया है। इस जीत के साथ ग्वांगझू के खिलाफ करियर रिकॉर्ड 1-1 का हो गया है।

प्रसिद्ध हिंदी लेखक हिमांशु जोशी का निधन

- हिंदी के प्रसिद्ध कथाकार और पत्रकार हिमांशु जोशी का 23 नवंबर 2018 को निधन हो गया। वे 83 वर्ष के थे तथा लंबे समय से बीमार थे। हिमांशु जोशी उत्तराखंड के रहने वाले थे। हिमांशु जोशी ने हिंदी साहित्य में अनेक प्रसिद्ध रचनाएं लिखी थीं।
- हिमांशु जोशी को हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू भाषा का अच्छा ज्ञान था. उन्होंने कई कहानी संग्रह, कविता संग्रह और आंचलिक कहानियां लिखी हैं। कहानियों में 'अंतत:', 'मनुष्य चिन्ह', 'जलते हुए डैने', तपस्या, गंधर्व कथा, 'श्रेष्ठ प्रेम कहानियां', 'इस बार फिर बर्फ गिरी तो', 'नंगे पांवों के निशान', 'दस कहानियां' प्रमुख हैं। अग्नि-सम्भव, नील नदी का वृक्ष, एक आँख की कविता, में उनकी कविताओं के संकलन हैं।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

वसीम जाफर रणजी ट्रॉफी में 11,000 रन बनाने वाले पहले खिलाड़ी बने

- घरेलू क्रिकेट में रन बटोरने वाले भारतीय टेस्ट टीम के पूर्व ओपनर वसीम जाफर ने अपने नाम एक नया रिकॉर्ड दर्ज करा लिया है। वह रणजी ट्रॉफी में 11,000 रन बनाने वाले पहले बल्लेबाज बन गए हैं। जाफर ने विदर्भ की तरफ से बड़ौदा के खिलाफ 153 रन की शानदार खेली और इस बीच 11,000 रन भी पूरे किए. जाफर ने इस बीच फैज फजल (151) के साथ 300 रन की साझेदारी की ।
- यह चौथा अवसर है जब उन्होंने रणजी ट्रॉफी में 300 या इससे अधिक रन की साझेदारी की। चालीस वर्षीय वसीम जाफर रणजी ट्रॉफी में मुंबई की ओर से भी खेल चुके हैं। उन्होंने ओपनर की हैसियत से भारत की ओर से भी 31 टेस्ट मैच और दो वनडे खेले हैं। टेस्ट क्रिकेट में उनके नाम पर 34.1 के औसत से 1944 रन हैं, इस दौरान 212 रन उनका सर्वोच्च स्कोर रहा है।

'रेडियो कश्मीर – इन टाइम्स ऑफ पीस एंड वॉर' पुस्तक का विमोचन किया गया

- पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह ने 20 नवंबर 2018 को नई दिल्ली में डॉ. राजेश भट्ट द्वारा लिखित 'रेडियो कश्मीर – इन टाइम्स ऑफ पीस एंड वॉर' (रेडियो कश्मीर-शांति एवं युद्ध काल में) नामक पुस्तक का विमोचन किया।
- रेडियो कश्मीर – इन टाइम्स ऑफ पीस एंड वॉर नामक पुस्तक गहरे और विस्तृत शोध पर आधारित है तथा लेखक ने देश के कल्याण एवं सुरक्षा संबंधी विभिन्नॉ मुद्दों के मद्देनजर सरकार और जनता के रणनीतिक हितों को सुरक्षित बनाने में मीडिया द्वारा निभाई गई अहम भूमिका को रेखांकित किया है।

बीबीसी द्वारा जारी विश्व की 100 प्रभावशाली महिलाओं की सूची में तीन भारतीय

- बीबीसी ने विश्व की 100 प्रभावशाली महिलाओं की सूची जारी की. इसमें विश्व के अलग-अलग देशों की 100 महिलाओं को स्थान दिया गया है। इस सूची में जहां भारत की तीन महिलाएं हैं, वहीं पाकिस्तान की एक महिला शामिल है जो कि एक हिंदू है। इस सूची में 15 से 60 वर्ष की 100 महिलायें हैं जिन्हें 60 देशों से चयनित किया गया है।
- इस सूची में पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की बेटी चेल्सिया क्लिंटन का भी नाम है। उन्हें क्लिंटन फाउंडेशन के लिए उल्लेखनीय कार्य करने के लिए नामित किया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि उन्होंने लाचार सीरियाई छात्रा नुजीन मुस्तफा के जरिये शरणार्थियों की मदद की।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के प्रमुख एरिक सोलहेम ने दिया इस्तीफा

- संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) के प्रमुख एरिक सोलहेम ने 20 नवम्बर 2018 को यात्रा पर काफी समय व धन खर्च करने के लगातार लगते आरोपों के बीच अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। एरिक सोलहेम ने यात्रा के दौरान काफी अधिक खर्च करने के आरोपों के बाद संयुक्त राष्ट्र (यूएन) महासचिव एंटोनियो गुटेरेस को अपना इस्तीफा सौंपा है।
- एंटोनियो गुटेरेस ने उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया है। न्यूयार्क टाइम्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक संयुक्त राष्ट्र के आंतरिक निगरानी सेवा कार्यालय द्वारा आधिकारिक यात्राओं की जांच में खर्चीले विमान यात्रा मार्ग, ज्यादा महंगी एयरलाइंस के चुनाव जैसी खामियां सामने आई थीं।

पाकिस्तान की मशहूर शायरा व लेखिका फहमीदा रियाज का निधन

- पाकिस्तान की मशहूर लेखिका व शायरा फहमीदा रियाज का लंबी बीमारी के बाद 21 नवम्बर 2018 को लाहौर में निधन हो गया है। वे 72 वर्ष की थीं। वे पिछले कुछ समय से बीमार चल रही थीं।
- फहमीदा को साहित्य जगत में अपनी नारीवादी और क्रांतिकारी विचारधारा के लिए जाना जाता है। पाकिस्तान में वे मानवाधिकारों के लिए भी सक्रिय रही हैं। उनके निधन से उर्दू साहित्य जगत को गहरी क्षति पहुंची है।
- फहमीदा को महिलाओं के मुद्दों को साहित्य के जरिए उठाने वाली बेहद खास लेखिकाओं में से एक माना जाता है। वे भारत में छह वर्षों तक आत्म-निर्वासन में रही थीं जब सैन्य तानाशाह जनरल जिया-उल-हक का पाकिस्तान पर शासन था।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

फहमीदा रियाज के बारे में:

- फहमीदा रियाज का जन्म 28 जुलाई 1945 को उत्तर प्रदेश के मेरठ में हुआ था।
- वे एक जानी मानी प्रगतिशील उर्दू लेखिका, कवियित्री, मानवाधिकार कार्यकर्ता और नारीवादी थीं।
- फहमीदा रियाज की पहली साहित्यिक किताब वर्ष 1967 में प्रकाशित हुई थी जिसका नाम 'पत्थर की जुबान' था।
- उनके अन्य कविता संग्रह में धूप, पूरा चांद, आदमी की जिंदगी इत्यादि शामिल हैं. उन्होंने कई उपन्यास भी लिखे जिनमें जिंदा बहर, गोदवरी और करांची प्रमुख हैं।
- उन्होंने जीवन भर सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया. चार साल की उम्र में ही पिता की मृत्यु के बाद उनका पालन-पोषण उनकी मां ने किया।
- बचपन से ही साहित्य में रुचि रखने वाली फहमीदा रियाज ने उर्दू, सिन्धी और फारसी भाषाएं सीख ली थीं. उन्होंने पढ़ाई पूरी करने के बाद रेडियो पाकिस्तान में न्यूजकास्टर के रूप में काम किया।
- वर्ष 1988 में पहली पीपीपी सरकार में फहमीदा को नेशनल बुक काउंसलि ऑफ पाकिस्तान की मैनेजिंग डायरेक्टर बनाया गया।
- बेनजीर भुट्टो के दूसरे कार्यकाल के दौरान वे संस्कृति मंत्रालय से भी जुड़ी रही। उन्हें वर्ष 2009 में उर्दू डिक्शनरी बोर्ड का मुख्य संपादक नियुक्त किया गया था।

विश्व शौचालय दिवस 19 नवंबर

- विश्व शौचालय दिवस (World Toilet Day) 19 नवंबर 2018 को मनाया गया। यह दिवस उन लोगों के बारे में जागरूकता लाने के लिए मनाया जा रहा है, जिनके पास शौचालय की सुविधा नहीं है, जबकि यह उनका मूलभूत अधिकार है। इस दिवस का आयोजन बेहतर पोषण और स्वास्थ्य में सुधार के तथ्य पर बल देते हुए शौचालय के महत्व पर पूरी दुनिया का ध्यान आकर्षित करने के लिए किया गया।
- यह विभिन्न बीमारियों के प्रसार को रोकने में भी मदद करता है. विश्व शौचालय दिवस वैश्विक स्वच्छता संकट से निपटने हेतु प्रेरित करने वाला एक महत्वपूर्ण दिवस है। वर्ष 2018 के लिए विश्व शौचालय दिवस का विषय "व्हेन नेचर कॉल्स (When nature calls)" है।
- विश्व में सभी लोगों को शौचालय की सुविधा उपलब्ध करवाना संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों का हिस्सा है। शौचालय, एक शक्तिशाली अर्थव्यवस्था बनाने और स्वास्थ्य में वृद्धि करने और लोगों की गरिमा और सुरक्षा के संरक्षण में, एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं।
- संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यो में सबको शुध्द पेयजल और स्वच्छता की सुविधा उलब्ध कराने का लक्ष्य भी रखा गया है। लेकिन खराब आधारभूत ढांचे दूषित जल आपूर्ति और गंदगी के कारण प्रत्येक दिन एक हजार बच्चो मौत का शिकार होते हैं।

पिछले चार सालों में ग्रामीण स्वच्छता:

- दरअसल, 02 अक्टूबर 2014 से आरंभ स्वच्छ भारत मिशन ने पिछले चार सालों में ग्रामीण स्वच्छता की कवरेज ने अभूतपूर्व प्रगति हासिल की है। पहले स्वच्छता कवरेज जहां केवल 39 फीसद थी, वह बढ़कर अब 96 फीसद पहुंच गई है। ग्रामीण क्षेत्रों में कुल 8.8 करोड़ से अधिक शौचालयों का निर्माण किया गया है। स्वतंत्र सर्वेक्षण के मुताबिक कुल 92 फीसद से अधिक शौचालय का निरंतर प्रयोग किया जा रहा है।

जागरूकता पैदा करना:

- विश्व शौचालय दिवस के द्वारा निजता के अभाव में महिलाओं और बालिकाओं के साथ यौन हिंसा की आशंका और शौचालय के उपयोग में गैर-बराबरी के बारे में जागरूकता पैदा की जानी है। विश्व शौचालय दिवस की स्थापना के बाद से दुनिया में परिवर्तन करने के लिए व्यवसायों, सरकारों और कई अन्य समूहों ने इसको बढ़ावा देने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

विश्व शौचालय संगठन:

- विश्व शौचालय संगठन एक अंतरराष्ट्रीय गैर-लाभकारी संस्था है जो दुनिया भर में स्वच्छता और शौचालय की स्थिति में सुधार के लिए प्रतिबद्ध है। संगठन के सभी सदस्य शौचालय की समस्या को खत्म करने और दुनिया भर में स्वच्छता के समाधान के लिए काम करते हैं।

विश्व शौचालय दिवस:

- विश्व शौचालय दिवस की स्थापना विश्व शौचालय संगठन द्वारा वर्ष 2001 में की गयी थी। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा वर्ष 2013 में इसे आधिकारिक संयुक्त राष्ट्र विश्व शौचालय दिवस घोषित किया गया। इसका प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र जल संघ द्वारा प्रस्तुत किया गया था।

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को इंदिरा गांधी शांति पुरस्कार प्रदान किया गया

- पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को 19 नवम्बर 2018 को इंदिरा गांधी शांति पुरस्कार प्रदान किया गया. पूर्व प्रधान न्यायाधीश टी एस ठाकुर ने मनमोहन सिंह को यह पुरस्कार (2017 के लिए) प्रदान किया। यह पुरस्कार इंदिरा गांधी स्मृति न्यास द्वारा 'शांति, निरस्त्रीकरण एवं विकास' के लिए काम करने वाले व्यक्तियों, समूहों एवं संस्थाओं को दिया जाता है।
- यह पुरस्कार पूर्व प्रधानमंत्री को समाजसेवा, निरस्त्रीकरण व विकास के कार्य में अहम योगदान देने के लिए दिया गया। मनमोहन सिंह को वर्ष 2004 से वर्ष 2014 तक प्रधानमंत्री के रूप में देश की आर्थिक एवं सामाजिक विकास और विश्व में भारत की साख को बनाने के लिए यह पुरस्कार दिया गया है। इस कार्यक्रम में पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी, पूर्व चीफ जस्टिस टीएस ठाकुर भी मौजूद रहे।

जलवायु परिवर्तन के कारण समाप्त हुई थी हड़प्पा सभ्यता: अध्ययन

- हाल ही में किये गये अध्ययन में पाया गया कि जलवायु परिवर्तन के कारण ही सिंधु घाटी सभ्यता का विनाश हुआ था। इसे हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है। शोधकर्ताओं ने समुद्री जीवाश्म और इसके डीएनए का उपयोग करके यह निष्कर्ष निकाला है कि जलवायु परिवर्तन के प्रकोप के कारण ही हड़प्पा सभ्यता की समाप्ति हुई।
- वैज्ञानिकों के एक अंतर्राष्ट्रीय समूह द्वारा किये गए इस अध्ययन का शीर्षक 'नियोग्लेशियल क्लाइमेट एनॉमलीज एंड हड़प्पाई मेटामॉरफोसिस था। सिंधु घाटी के तापमान तथा मौसम के पैटर्न में बदलाव की वजह से ग्रीष्मकालीन मानसूनी बारिश में धीरे-धीरे कमी आने लगी जिस वजह से हड़प्पाई शहरों के आस-पास कृषि कार्य किया जाना मुश्किल या असंभव हो गया।

संजय कुमार मिश्रा प्रवर्तन निदेशालय के पूर्णकालिक निदेशक बनाए गये

- आईआरएस अधिकारी संजय कुमार मिश्रा को 17 नवम्बर 2018 को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) का पूर्णकालिक प्रमुख नियुक्त किया गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता वाली कैबिनेट की नियुक्ति समिति (एसीसी) ने एक आदेश जारी कर मिश्रा को पद ग्रहण करने की तारीख से दो साल तक या अगले आदेश तक जो भी पहले हो' तक का कार्यकाल दिया है।
- संजय कुमार मिश्रा आयकर कैडर के 1984 बैच के भारतीय राजस्व सेवा (आईआरएस) के अधिकारी हैं जिन्हें 27 अक्टूबर को केन्द्रीय जांच एजेंसी में प्रधान विशेष निदेशक नियुक्त किया गया था और तीन महीने के लिए ईडी निदेशक का 'अतिरिक्त' प्रभार सौंपा गया था। ईडी निदेशक का पद केन्द्र सरकार में अतिरिक्त सचिव के पद के समतुल्य होता है।

वीवीएस लक्ष्मण ने अपनी आत्मकथा '281 एंड बियॉन्ड' लॉन्च की

- भारत के वरिष्ठ क्रिकेटर वीवीएस लक्ष्मण ने हाल ही में अपनी आत्मकथा '281 एंड बियॉन्ड' को लॉन्च किया। इस पुस्तक को वेस्टलैंड सपोर्ट द्वारा प्रकाशित किया गया है। '281 एंड बियॉन्ड' के सह-लेखक आर. कौशिक हैं, वे एक खेल पत्रकार हैं. इस पुस्तक का नाम वीवीएस लक्ष्मण द्वारा वर्ष 2001 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ कलकत्ता के ईडन गार्डन्स में खेली गई 281 रनों की ऐतिहासिक पारी पर रखा गया है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद से ही लक्ष्मण अपनी आत्मकथा लिखना चाहते थे।
- पुस्तक लॉन्च के समय लक्ष्मण ने कहा, "मेरी जिंदगी का निर्णायक मोड़ 281 रन की वह पारी थी। किताब में मैंने मैच में खेलने के बारे में बात की है कि मैं मैच के लिए समय पर कैसे फिट हुआ। चौथे दिन राहुल द्रविड़ के साथ मेरी बल्लेबाजी और हमने वह साझेदारी कैसे बनाई तथा और भी कुछ इसमें बयां किया गया है।"

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

यूनिसेफ द्वारा भारतीय एथलीट हिमा दास को युवा एंबेसडर बनाया गया

- भारत की प्रसिद्ध धाविका तथा एशियन गेम्स की स्वर्ण पदक विजेता हिमा दास 15 नवम्बर 2018 को यूनिसेफ इंडिया की युवा एंबेसडर बनाई गई। हिमा बच्चों के अधिकारों और आवश्यकताओं के बारे में जागरुकता बढ़ाने, बच्चों और युवाओं की आवाज को बुलंद करने में हिस्सा लेंगी।
- विश्व बाल दिवस उत्सव के अवसर पर हिमा दास भारत की पहली युवा एंबेसडर हैं। विशेष बात यह है कि हिमा दास पहली युवा भारतीय लड़की हैं जिन्हें यूनिसेफ ने अपना ब्रैंड एंबेसडर बनाया है। हिमा दास उस समय प्रसिद्ध हुई जब उन्होंने जुलाई 2018 में फिनलैंड में आयोजित आईएएफ वर्ल्ड अंडर-20 चैम्पियनशिप की महिलाओं की 400 मीटर स्पर्धा में गोल्ड मेडल जीता था। उन्होंने फाइनल में 51.46 सेकेंड का समय निकालते हुए स्वर्ण पदक हासिल किया था।

बजरंग पूनिया 65 किलोग्राम वर्ग में नंबर एक पहलवान बने

- भारत के प्रसिद्ध पहलवान बजरंग पूनिया ने 65 किलोग्राम वर्ग में शीर्ष विश्व रैंकिंग हासिल की। इस सत्र में 5 पदक जीतने वाले 24 वर्षीय बजरंग पूनिया यूडब्ल्यूडब्ल्यू की सूची में 96 अंकों के साथ रैंकिंग तालिका में शीर्ष पर हैं। इस वर्ष बजरंग पूनिया ने कॉमनवेल्थ और एशियन गेम्स में गोल्ड जीतने के अलावा वर्ल्ड चौंपियनशिप में सिल्वर पदक हासिल किया था।
- बजरंग पूनिया का प्रदर्शन इस वर्ष सराहनीय रहा. वह बुडापेस्ट वर्ल्ड चौंपियनशिप में वरीयता पाने वाले एकमात्र भारतीय पहलवान रहे। बजरंग ने दूसरे स्थान पर मौजूद क्यूबा के एलेजांद्रो एनरिक व्लाडेस टोबियर पर मजबूत बढ़त बना रखी है जिनके 66 अंक हैं। बजरंग ने विश्व चौंपियनशिप के करीबी सेमीफाइनल में टोबियर को हराया था।

केन्द्रीय मंत्री अनंत कुमार का बेंगलुरु में निधन

- केंद्रीय मंत्री तथा भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता अनंत कुमार का 12 नवंबर 2018 को निधन हो गया है। वे पिछले कुछ महीनों से बीमार चल रहे थे। अनंत कुमार कैंसर से पीड़ित थे। उन्होंने 59 साल की उम्र में बेंगलुरु में अंतिम सांस ली।
- अनंत कुमार कर्नाटक के बेंगलुरु साउथ से सांसद थे। वे केंद्र सरकार में संसदीय कार्यमंत्री थे। उनके निधन पर केंद्रीय गृह मंत्रालय ने पूरे देश में राष्ट्रध्वज आधा झुकाने का निर्देश दिया है। उनके पार्टी कार्यालय ने एक बयान में बताया कि कुमार का कैंसर और संक्रमण के बाद पैदा हुई जटिलताओं के कारण निधन हुआ। वह पिछले कुछ दिनों से सघन निगरानी कक्ष में कृत्रिम जीवन रक्षक प्रणाली पर थे।

ए आर रहमान की जीवनी 'नोट्स ऑफ अ ड्रीम' का लोकार्पण किया गया

- भारत के प्रसिद्ध संगीतकार एवं ऑस्कर पुरस्कार विजेता ए. आर. रहमान द्वारा हाल ही में मुंबई में अपनी जीवनी "नोट्स ऑफ अ ड्रीम" लॉन्च की गई. ए. आर. रहमान की यह जीवनी लेखक कृष्णा त्रिलोक द्वारा लिखी गई है।
- इस पुस्तक में ए. आर. रहमान के जीवन का विस्तृत वर्णन किया गया है। इसमें उनके व्यक्तिगत जीवन से लेकर व्यावसायिक जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में बताया गया है। कृष्णा त्रिलोक द्वारा लिखित, लैंडमार्क और पेंगुइन रैंडम हाउस के सहयोग से यह जीवनी मुंबई में लॉन्च की गई थी।
- हरमनप्रीत कौर टी-20 के इतिहास में शतक लगाने वाली पहली भारतीय महिला खिलाड़ी बनीं
- हरमनप्रीत कौर ने 09 नवम्बर 2018 को तूफानी बल्लेबाजी करते हुए अंतरराष्ट्रीय ट्वेंटी-20 मैच में केवल 49 गेंदों में शतक बना डाला। हरमनप्रीत कौर ने अपनी शतकीय पारी में 8 छक्के और 7 चौके लगाए।
- उन्होंने 76 रन सिर्फ बाउंड्री से हासिल कर लिए. अपनी शतकीय पारी के साथ ही उन्होंने कई रिकॉर्ड्स को तोड़ा तथा नये रिकॉर्ड्स भी बनाए। कप्तान हरमनप्रीत ने पहले 50 रन 33 गेंदों में और अगले 50 रन मात्र 16 गेंदों में ही बना डाले थे।

हरमनप्रीत के रिकॉर्ड्

- हरमनप्रीत कौर भारत की पहली महिला खिलाड़ी हैं जिसने टी 20 इंटरनेशनल में शतक ठोका है। उन्होंने मिताली राज के 97 रन के स्कोर को पीछे छोड़ा।
- हरमनप्रीत कौर वर्ल्ड टी 20 में शतक लगाने वाली पहली भारतीय महिला कप्तान हैं। वैसे यह कारनामा करने वाली वो दुनिया की महज तीसरी कप्तान हैं।

Call: 8899999931/34,7065202020, Email: info@eliteias.in, Visit: www.eliteias.in
A-1, Chandra House, Top Floor, Opp. ICICI Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-110009

- हरमनप्रीत कौर ने वर्ल्ड टी20 में भारत की ओर से सबसे बड़ी पारी खेलने का रिकॉर्ड भी अपने नाम कर लिया है।
- इससे पहले उन्होने साल 2014 में बांग्लादेश के खिलाफ 77 रनों की पारी खेली थी।
- हरमनप्रीत कौर टी20 इंटरनेशनल की एक पारी में सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाली भारतीय खिलाड़ी हैं। हरमनप्रीत ने अपनी शतकीय पारी में 8 छक्के लगाए।
- विश्वभर की बात करें तो डॉटिन ने साउथ अफ्रीका के खिलाफ 2010 में अपनी पारी में 9 छक्के लगाए थे।

आयुर्वेद दिवस 05 नवंबर

- आयुष मंत्रालय प्रत्येक वर्ष धनवंतरी जयंती के अवसर पर आयुर्वेद दिवस मनाता है। इस बार आयुर्वेद दिवस 05 नवंबर 2018 को मनाया गया। इस उपलक्ष्य में आयुष मंत्रालय, नीति आयोग के साथ मिलकर 04 नवंबर और 05 नवंबर 2018 को नई दिल्ली में आयुर्वेद में उद्यमिता और व्यापार विकास पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया है।
- इसका उद्देश्य आयुर्वेद क्षेत्र से जुड़े हितधारकों और उद्यमियों को कारोबार के नए अवसरों के प्रति जागरूक करना है। यह संगोष्ठी आयुर्वेद उत्पादों की बाजार हिस्सेदारी 2022 तक तीन गुना करने के आयुष मंत्रालय द्वारा तय किए गए बड़े लक्ष्य की दिशा में उठाया गया एक कदम है।

Ambassador of Conscience Award 'विवेकदूत'

- Amnesty International ने म्यांमार कीई नेत्री Aung San Suu Kyi को अपनी ओर से दिए गये सर्वोच्च सम्मान 'Ambassador of Conscience' अर्थात् 'विवेकदूत' को वापस ले लिया है क्योंकि इस संस्था का विचार है कि म्यांमार की सेना ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मामले में असहिष्णुता दिखलाई है और इस विषय पर Aung San Suu Kyi का रवैया उदासीन रहा है।

INDRA 2018 :

- INDRA भारत और रूस का एक संयुक्त सैन्य अभ्यास है जो संयुक्त राष्ट्र (UN) के तत्त्ववधान में विद्रोह को दबाने से सम्बंधित है।
- इंद्र का नवीनतम सैन्य-अभ्यास उत्तरप्रदेश के झाँसी के पास स्थित बबीना सैन्य अड्डे के बबीना मैदानी चाँदमारी रेंज पर चल रहा है।